SACH KI DASTAK, RNI : UPHIN/2017/75716
वाराणसी से प्रकाशित

वर्ष : 5, अंक : 11, फरवरी 2022
मूल्य : 20 रु.

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

अलविदा
लता जी

बजट पर बहस जारी...

कलम इनकी जय बोल
बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

जानिए! कौन हैं
इन्दुभूषण कोचगवे?

बसंत पंचमी पर विशेष

रूस और यूक्रेन में तनाव

वसंत पंचमी व महाशिवरात्रि की हार्दिक अभिनंदन व शुभकामना

डॉ ओ पी सिंह

जिला उपाध्यक्ष चिकित्सा प्रकोष्ठ भाजपा जनपद चंदौली
प्रदेश प्रवक्ता
नेशनल इंटीग्रेटेड मेडिकल एसोसिएशन (नीमा) उत्तर प्रदेश

वसंत पंचमी व महाशिवरात्रि की हार्दिक अभिनंदन व शुभकामना

डॉ जेपी यादव

स्वामी विवेकानंद जन कल्याण हॉस्पिटल
अलीनगर थाना के ठीक सामने वाले रोड में
अलीनगर जनपद चन्दौली
आकस्मिक सेवा 24 घण्टे उपलब्ध

सत्येंद्र राय
पूर्व ग्राम प्रधान भभौरा

वसंत पंचमी व महाशिवरात्रि की हार्दिक अभिनंदन व शुभकामना

जितेंद्र राय
ग्राम प्रधान व गरला
प्रधान संघ जिला सचिव चंदौली

वसंत पंचमी व महाशिवरात्रि की हार्दिक अभिनंदन व शुभकामना

डॉ पवन कुमार कश्यप

बाल रोग विशेषज्ञ जिला
संयुक्त चिकित्सालय
चकिया जनपद चंदौली

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. UPHIN/2017/75716

वर्ष : 05, अंक : 11, फरवरी 2022

संरक्षक
इन्दू भूषण कोचगवे
संपादक
ब्रजेश कुमार
समाचार संपादक
आकांक्षा सक्सेना
खेल सम्पादक
मनोज उपाध्याय
उप सम्पादक
शिव मोहन सिंह
कानूनी सलाहकार
दिलीप कुमार सिंह (अधिवक्ता)
प्रूफ रीडर
बिपिन बिहारी उपाध्याय
प्रसार प्रभारी
अशोक सैनी
प्रसार सह प्रभारी
अजय राय
अशोक शर्मा
जितेन्द्र सिंह
ग्राफिक्स
संजय सिंह

सम्पादकीय कार्यालय
सी-6/2-एम, चेतगंज थाना के पास,
चेतगंज वाराणसी
पत्राचार (स्थानीय कार्यालय)
म.न. 1215ए, सुभाषनगर, मुगलसराय (चन्दौली)
मो.न. : 8299678756, 9598056904, 9450096479

पत्रिका में प्रकाशित समाचार / लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र चन्दौली होगा। सभी पद अवैतनिक है।

स्वामी प्रकाशक मुद्रक ब्रजेश कुमार द्वारा यादव प्रिंटर्स, ए 14/36 भारद्वाजी टोला राजघाट वाराणसी से मुद्रित।

स्टेट ब्यूरो प्रभारी

1- मृदुला श्रीमाली - उत्तर प्रदेश
2- रोहित कोचगवे - उत्तराखण्ड
3- देवेन्द्र कुमावत - राजस्थान
4- दीपाली सोढ़ी - असम
5- प्रभाकर कुमार - बिहार
6- दीपक कुमार साहा - दिल्ली

ब्यूरो संवाददाता / रिपोर्टर

1- डॉ निशा अग्रवाल विशेष संवाददाता जयपुर (राजस्थान)
2- विकास गौण जिला प्रभारी वाराणसी (यू.पी)
3- अक्षांशु सक्सेना जिला प्रभारी औरैया (यू.पी)
4- संजय कुमार दुबे जिला प्रभारी जौनपुर (यू.पी)
5- प्रमोद शुक्ला जिला प्रभारी बाँदा (यू.पी)
6- प्रतीक राय जिला प्रभारी गाजीपुर (यू.पी)
7- विनीत कुमार रिपोर्टर पीडीडीयू (यू.पी)
8- डिम्पल सानन, जिला प्रभारी देहरादून (उत्तराखंड)

सदस्यता शुल्क

1 अंक	-	रु. 20/-
वार्षिक	-	रु. 300/-(डाकखर्च सहित)

Sach Ki Dastak
A/c. No. : 13751652000024
IFSC Code : PUNB0137510
Panjab National Bank

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

इस बार

क्र.स.	लेख	पेज न.
1.	संपादकीय - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	03
2.	धरोहर : रवींद्रनाथ टैगोर	05
3.	अलविदा लता जी - ब्रजेश कुमार, संपादक	06
4.	कलम इनकी जय बोल- कृष्णकांत श्रीवास्तव	09
5.	जानिए! कौन हैं इन्दुभूषण कोचगवे? - आकांक्षा सक्सेना, न्यूज ऐडीटर	14
6.	मन के मांगल गीत - शिव मोहन सिंह (उप संपादक)	17
7.	बसंत पंचमी पर विशेष - रोहित कोचगवे,ब्यूरोचीफ देहरादून	18
8.	यूपी चुनाव - 2022 का दलबदलू रूप - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	20
9.	विपक्ष के अस्तित्व और सत्ता के साख का सवाल - मनोहर कुमार	23
10.	अरब देश और भारत : कल आज और कल - राकेश प्रताप सिंह	26
11.	प्रेम दिवस को जन्मी वीनस ऑफ इंडियन सिनेमा - ब्रजेश श्रीवास्तव 'मुन्ना'	29
12.	जनपथ बनाम राजपथ- डॉ. अवधेश कुमार 'अवध'	36
13.	वैवाहिक बलात्कार सोचः एक बीमार मानसिकता - पंकज जगन्नाथ जयस्वाल, पुणे	37
14.	पीड़ा अंतर्मन की - जसविंदर कौर गाँधी	39
15.	बनारसी साड़ी-रंग बनारसी- श्रीमती मंजू काला, देहरादून	41
16.	शिवमोहन जी की पुस्तक, समीक्षा - सुशील चन्द्र डोभाल	45
17.	ज़ायका : बाल मिठाई - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	50
18.	भारतीय बेटियों ने चीन को पछाड़ा- मनोज उपाध्याय, स्पोर्ट्स एडीटर	51
19.	रूस और यूक्रेन में तनाव- सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	53
20.	अपने चोरी हुए स्मार्टफोन को ब्लॉक करें-सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	55

संपादकीय

सबसे पहले बसंत ऋतु के आगमन व महाशिवरात्रि पर्व की हार्दिक बधाई।

आप की पत्रिका 'सच की दस्तक' मार्च 2022 में अपनी पाँच वर्ष की यात्रा पूरी कर लेगी। यह आप सभी रचनाकार तथा सुधी पाठकगण के सहयोग से ही सम्भव हो रहा है। आप सबका हार्दिक धन्यवाद।

स्वर कोकिला लता मंगेशकर जी को सच की दस्तक मासिक पत्रिका टीम की तरफ विनम्र श्रद्धांजलि। भारत रत्न स्वर कोकिला लता मंगेशकर जी का रविवार 6 फरवरी को सुबह निधन हो गया है। निधन की खबर से न सिर्फ सिनेमा जगत बल्कि भारत का आम से लेकर खास तक, हर कोई शोक में है। प्यार से पूरा राष्ट्र उन्हें सदा दीदी के नाम से सम्बोधित किया करता था। उनका एक गीत हम सभी को हमेशा याद रहता है- 'ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी'। लता दीदी ने इसी गीत से पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को 1962 में रुलाया था, यह गीत एक कार्यक्रम में हमारे वीर शहीदों की याद में गाया था,जब चीन के खिलाफ जंग में भारत हार चुका था। लता जीआज हमारे बीच नहीं है, उनकी कमी को पूरा नहीं किया जा सकता।

पाँच राज्यों में चुनाव प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है। आप सभी पाठकगण से विनम्र निवेदन है कि यदि आप ,उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, गोवा, मणिपुर , राज्यों में से कहीं के निवासी हैं तो इस चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें।

इसी बीच देश की वित्त मन्त्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने मोदी सरकार का आम बजट पेश किया है। सरकार ने इस बजट को किसानों का बजट बताया है। जहाँ देश के प्रधानमंत्री ने इसे अच्छा बजट बताया ,वहीं विपक्ष ने इस बजट को नाकाफी बताया है। बजट को इस अंक में हमने भी सरल रूप से आप के समक्ष रखा है।

वर्तमान समय में जब एक तरफ चुनाव चल रहा है, तो दूसरी तरफ कर्नाटक में एक अलग समस्या ने जन्म ले लिया है। ये समस्या खुद से उत्पन्न नहीं हुई है बल्कि चुनाव को देखते हुए लगता है कि लायी गयी है। ये समस्या अजब -सी दिख रही है। हम सब भी स्कूल जाते थे तो हम लोग के स्कूल में यूनिफॉर्म होते थे। वास्तव में यूनिफार्म केवल यूनिफॉर्म नहीं बल्कि एक अनुशासन के प्रतीक एवं पहचान होते है। स्कूल यूनिफार्म को लेकर विवाद को कभी भी उचित नहीं कहा जा सकता। गलतियाँ कहाँ और क्यों हो रही हैं, इस पर नजर रखने की जरूरत है। चूंकि मामला माननीय न्यायालय के पास है इसलिए इस पर टिप्पणी करना उचित नहीं है।

उत्तर प्रदेश के चुनाव तो अक्सर देश को नई दिशा देते रहे हैं। कोरोना के मामले में गिरावट आने के बाद अब निर्वाचन आयोग ने कोरोना गाइडलाइन को ध्यान में रखते हुए छोटी छोटी रैलियों की इजाजत दे दी है। अब भाजपा बसपा,सपा, आर एल डी , कांग्रेस, आप तथा अन्य पार्टियों के शीर्ष नेताओं की रैलियाँ भी शुरू हो गयी हैं। सभी पार्टियों ने घोषणपत्र जारी कर दिया है। सभी ने जितना बन सका है उतना लुभाने का प्रयास अपने घोषणा पत्र के माध्यम से किया है। देखना है कि जनता किस पार्टी को अपना मत देती है , 10 मार्च को किसके पक्ष में निर्णय आता है।

कलम इनकी जय बोल के क्रम में हम अपने इस अंक में बंकिमचंद्र चटोपाध्याय जी के अनछुए पहलुओं को आप के सामने रख रहे है। बंदेमातरम से इनकी पहचान को कौन नहीं जानता। बंदेमातरम पूरे राष्ट्र को एक धागे में पिरो देता है।

इस अंक में आप को एक ऐसे साहित्यकार से परिचय

कराने जा रहे हैं जो हमारे भी प्रेरणाश्रोत है। कुछ महीनों पूर्व उत्तराखण्ड के दूरदर्शन पर इनका इंटरव्यू आया था। जी हाँ, हम बात कर रहे है साहित्यकार इंदुभूषण कोचगवे जी की।जिन्होंने अपने जीवन में कई विधाओं में रचना की है। कवि, साहित्यकार के साथ पूर्व मध्य रेलवे इंटर कॉलेज के ये प्रधानाध्यापक भी रह चुके है। वर्तमान में आपकी पत्रिका 'सच की दस्तक ' के संरक्षक भी हैं।

रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध के बादल मंडराते नजर आ रहे हैं। जिस प्रकार रूस ने यूक्रेन के सीमाओं पर अपनी सेना की संख्या का एकत्रीकरण किया है, वह पूरे विश्व के लिए चिंता का विषय है।

स्थापना दिवस के अवसर पर 'सच की दस्तक' साहित्यकारों, उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं का सम्मान करने की इच्छा रखती है। चूँकि स्थापना दिवस चुनाव के मध्य पड़ रहा है इसलिए मार्च के बाद स्थापना दिवस मनाया जाएगा और सम्मान दिया जाएगा। पाँच वर्षों में आप का सहयोग जिस प्रकार मिला है आगे भी आप सभी पाठकों, शुभचिंतकों से इसी प्रकार के सहयोग के हम आकांक्षी है।

धन्यवाद!

ब्रजेश कुमार

जाग्रत वसन्त

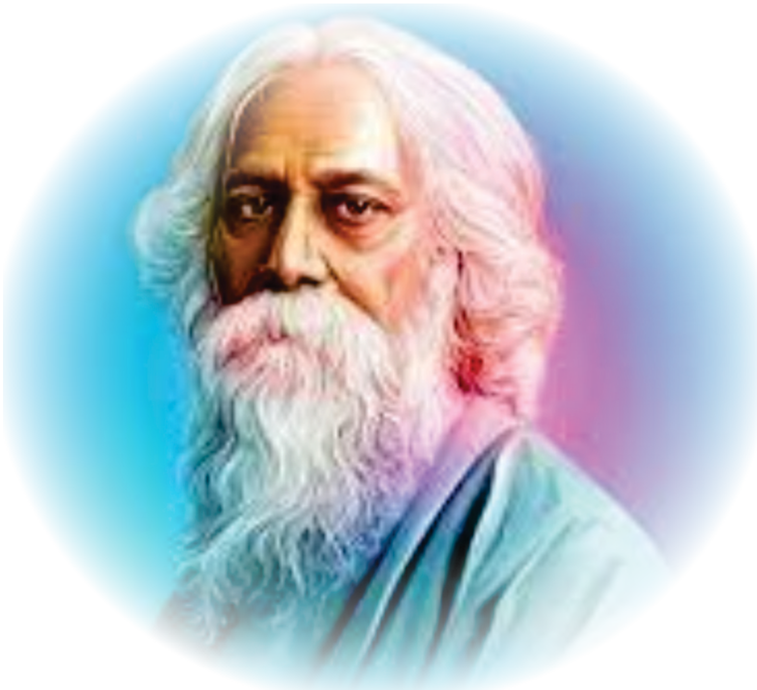

श्री रवींद्रनाथ टैगोर
(1861-1941)

आज जाग्रत वसन्त आया द्वार पर,
उसकी हँसी, अपने मन की कुण्ठा से नहीं उड़ाना

खोल देना अपने हृदय का कमल-दल,
मत रखना, अपने-पराए का भेद,
जब होगा गीत गुंजरित नभ में,
तब अपने निज सौरभ को लहरा देना।
अपने को भूल, भुवन में देना शोभा बिखेर।

अति गहन वेदना वन की,
पत्ते-पत्ते में सिसकती,
बाट जोह गगन में किसकी,
व्याकुल वसुधा सजती।
बह रही दक्खिन की पुरवाई, पनघट पर,
माँग रही वह क्या ?
यह सौरभ से विह्वल चाँदनी,
किसके चरणों जा लगती।

हे सुखद, सुन्दर, प्राण प्रिये, प्रियतम,
मेरा यह आह्वान तुझे पुकारे, आ जाना।
आज जाग्रत वसन्त आया द्वार पर,
उसकी हँसी कुण्ठा से न उड़ाना।

■■

अलविदा लता जी...

ब्रजेश कुमार
संपादक सच की दस्तक

भारत रत्न लता मंगेशकर भारत की सबसे लोकप्रिय और आदरणीय गायिका हैं जिनका छः दशकों का कार्यकाल अनेकों उपलब्धियों से भरा पड़ा है। जिनकी आवाज़ ने छह दशकों से भी ज़्यादा संगीत की दुनिया को सुरों से नवाज़ा है। भारत की 'स्वर कोकिला' लता मंगेशकर ने 25 भाषाओं में 50,000 से भी ज्यादा गाने गाये है। उनकी आवाज़ सुनकर कभी किसी की आँखों में आँसू आए, तो कभी सीमा पर खड़े जवानों को सहारा मिला। लता जी आज भी अकेली हैं, उन्होंने स्वयं को पूर्णतः संगीत को समर्पित कर रखा है।लेकिन उनकी पहचान भारतीय सिनेमा में एक पार्श्वगायक के रूप में रही है। अपनी बहन आशा भोंसले के साथ लता जी का फ़िल्मी गायन में सबसे बड़ा योगदान रहा है।

पृष्ठभूमि

कुमारी लता दीनानाथ मंगेशकर का जन्म 28 सितम्बर, 1929 इंदौर, मध्यप्रदेश में हुआ था।उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर एक कुशल रंगमंचीय गायक थे। दीनानाथ जी ने लता को तब से संगीत सिखाना शुरू किया, जब वे पाँच साल की थी। उनके साथ उनकी बहनें आशा, ऊषा और मीना भी सीखा करतीं थीं। लता 'अमान अली खा़न साहिब' और बाद में 'अमानत खा़न' के साथ भी पढ़ीं। लता मंगेशकर हमेशा से ही ईश्वर के द्वारा दी गई सुरीली आवाज़,

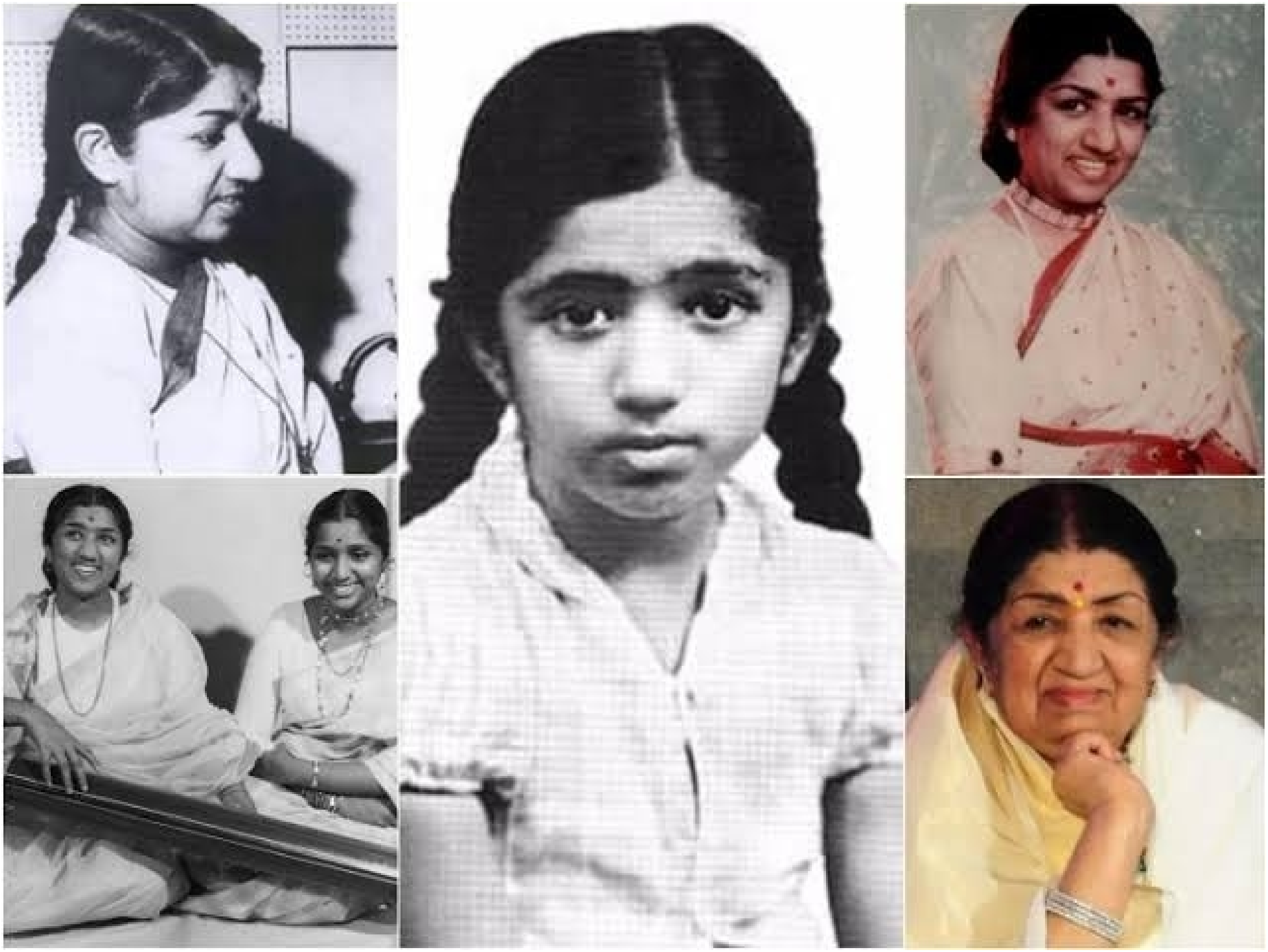

जानदार अभिव्यक्ति व बात को बहुत जल्द समझ लेने वाली अविश्वसनीय क्षमता का उदाहरण रहीं हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण उनकी इस प्रतिभा को बहुत जल्द ही पहचान मिल गई थी। लेकिन पाँच वर्ष की छोटी आयु में ही आपको पहली बार एक नाटक में अभिनय करने का अवसर मिला। शुरुआत अवश्य अभिनय से हुई किंतु आपकी दिलचस्पी तो संगीत में ही थी।

वर्ष 1942 में इनके पिता की मौत हो गई। इस दौरान ये केवल 13 वर्ष की थीं। नवयुग चित्रपट फिल्म कंपनी के मालिक और इनके पिता के दोस्त मास्टर विनायक (विनायक दामोदर कर्नाटकी) ने इनके परिवार को संभाला और लता मंगेशकर को एक सिंगर और अभिनेत्री बनाने में मदद की।

संघर्ष

सफलता की राह कभी भी आसान नहीं होती है। लता जी को भी अपना स्थान बनाने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पडा। कई संगीतकारों ने तो आपको शुरू-शुरू में पतली आवाज़ के कारण काम देने से साफ़ मना कर दिया था। उस समय की प्रसिद्ध पार्श्व गायिका नूरजहाँ के साथ लता जी की तुलना की जाती थी। लेकिन धीरे-धीरे अपनी लगन और प्रतिभा के बल पर आपको काम मिलने लगा। लता जी की अद्भुत कामयाबी ने लता जी को फ़िल्मी जगत की सबसे मज़बूत महिला बना दिया था।

करियर

लता जी को सर्वाधिक गीत रिकार्ड करने का भी गौरव प्राप्त है। फ़िल्मी गीतों के अतिरिक्त आपने ग़ैरफ़िल्मी गीत भी बहुत खूबी के साथ गाए हैं। लता जी की प्रतिभा को पहचान मिली सन् 1947 में, जब फ़िल्म 'आपकी सेवा में' उन्हें एक गीत गाने का मौक़ा मिला। इस गीत के बाद तो आपको फ़िल्म जगत में एक पहचान मिल गयी और एक के बाद एक कई गीत गाने

का मौक़ा मिला। इन में से कुछ प्रसिद्ध गीतों का उल्लेख करना यहाँ अप्रासंगिक न होगा। जिसे आपका पहला शाहकार गीत कहा जाता है वह 1949 में गाया गया 'आएगा आने वाला', जिस के बाद आपके प्रशंसकों की संख्या दिनोदिन बढ़ने लगी। इस बीच आपने उस समय के सभी प्रसिद्ध संगीतकारों के साथ काम किया। अनिल बिस्वास, सलिल चौधरी, शंकर जयकिशन, एस. डी. बर्मन, आर. डी. बर्मन, नौशाद, मदनमोहन, सी. रामचंद्र इत्यादि सभी संगीतकारों ने आपकी प्रतिभा का लोहा माना। लता जी ने दो आँखें बारह हाथ, दो बीघा ज़मीन, मदर इंडिया, मुग़ल ए आज़म, आदि महान फ़िल्मों में गाने गाये है। आपने 'महल', 'बरसात', 'एक थी लड़की', 'बडी ़बहन' आदि फ़िल्मों में अपनी आवाज़ के जादू से इन फ़िल्मों की लोकप्रियता में चार चाँद लगाए। इस दौरान आपके कुछ प्रसिद्ध गीत थेः 'ओ सजना बरखा बहार आई' (परख-1960), 'आजा रे परदेसी' (मधुमती-1958), 'इतना ना मुझसे तू प्यार बढा'़ (छाया- 1961), 'अल्ला तेरो नाम', (हम दोनो-1961), 'एहसान तेरा होगा मुझ पर', (जंगली-1961), 'ये समां' (जब जब फूल खिले-1965) इत्यादि।

नोट :

लता मंगेशकर का पहला नाम 'हेमा' था, मगर जन्म के 5 साल बाद माता-पिता ने इनका नाम 'लता' रख दिया था।

2- सन 1974 में दुनिया में सबसे अधिक गीत गाने का 'गिनीज़ बुक रिकॉर्ड' उनके नाम पर दर्ज है।

3- अभी भी गाने की रिकॉर्डिंग के लिये जाने से पहले लता मंगेशकर कमरे के बाहर अपनी चप्पलें उतारती हैं। वे हमेशा नंगे पाँव गाना गाती हैं।

4- लता दीदी महज एक दिन के लिए स्कूल गई थी। इसकी वजह यह रही कि जब वह पहले दिन अपनी छोटी बहन आशा भोसले को स्कूल लेकर गई तो अध्यापक ने आशा भोसले को यह कहकर स्कूल से निकाल दिया कि उन्हें भी स्कूल की फीस देनी होगी। बाद में लता ने निश्चय किया कि वह कभी स्कूल नहीं जाएंगी। हालांकि बाद में उन्हें न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी सहित छह विश्वविद्यालयों में मानक उपाधि से नवाजा गया।

वर्ष 1962 में लता 32 साल की थी तब उन्हें स्लो प्वॉइजन दिया गया था। लता की बेहद करीबी पदमा सचदेव ने इसका जिक्र अपनी किताब 'ऐं ख़ैंह ए र्थ्लह'में किया है।हालांकि उन्हें मारने की कोशिश किसने की, इसका खुलासा आज तक नहीं हो पाया।

लता मंगेशकर जी को मिले पुरस्कार

फ़िल्म फेयर पुरस्कार (1958, 1962, 1965, 1969, 1993 और 1994)

राष्ट्रीय पुरस्कार (1972, 1975 और 1990)

महाराष्ट्र सरकार पुरस्कार (1966 और 1967)

सन 1969 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

सन 1989 में उन्हें फ़िल्म जगत का सर्वोच्च सम्मान 'दादा साहेब फाल्के पुरस्कार' दिया गया।

सन 1993 में फ़िल्म फेयर के 'लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

सन 1996 में स्क्रीन के 'लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

सन 1997 में 'राजीव गांधी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

सन 1999 में पद्मविभूषण, एन.टी.आर. और ज़ी सिने के 'लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

सन 2000 में आई. आई. ए. एफ.(आइफ़ा) के 'लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

सन 2001 में स्टारडस्ट के 'लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार', नूरजहाँ पुरस्कार, महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सन 2001 में भारत सरकार ने आपकी उपलब्धियों को सम्मान देते हुए देश के सर्वोच्च पुरस्कार 'भारत रत्न' से आपको विभूषित किया।

मृत्यु

6 फरवरी 2022 को मुंबई स्थित ब्रीच कैंडी हॉस्पिटल में स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने 92 साल की उम्र में अपनी आखिरी साँसें ली और देश शोक में डूब गया और पीछे रह गयी आपकी आवाज़ एक पहचान। अलविदा लता जी....! सच की दस्तक राष्ट्रीय मासिक पत्रिका परिवार की तरफ़ से महान शख्सियत को शत् शत् नमन।

■■

कलम इनकी जय बोल

भारतीय राष्ट्रवाद के ऋषि बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव पर राष्ट्रीय धर्मिता के निर्वहन में चंदौली जनपद के वरिष्ठ नागरिक , रंगकर्मी , साहित्यकार कृष्ण कांत श्रीवास्तव ने अपनी कलम से शीर्ष स्वतंत्रता संग्रामी मुंशी प्रेमचंद , बनारस की बेटी लक्ष्मी बाई , शिक्षा का शंखनाद करने वाले मदन मोहन मालवीय , बलिदानी चंद्रशेखर आजाद , सुभाष चंद्र बोस आदि पर कृति लेख लिखा । इस क्रम में 'वंदे मातरम ' के रचयिता बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय पर केंद्रित है यह लेख ।

- संपादक

कृष्णकान्त श्रीवास्तव
वरिष्ठ रंगकर्मी - रचनाकर्मी

'वयं राष्ट्र जागृयाम पुरोहिता '
वेदों में राष्ट्र का जय गान

शब्द 'राष्ट्र' का प्रथम प्रयोग वेद में हुआ है । उसके आठ आधार हैं - सत्य , ऋत , उद्यम , उग्र , दीक्षा , तप , ब्रह्म और यज्ञ । भारत का आदर्श वाक्य सत्यमेव जयते है । राष्ट्र की जय तब होती है जब राष्ट्र का हर व्यक्ति अपने कठिन पुरुषार्थ के जरिए कार्य , कर्तव्य भावना से करता है । हमारे प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी ने राष्ट्र प्रथम को आत्मसात करने की प्रेरणा दी । राष्ट्रवाद ऐसी विचारधारा है जो राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति के लिए प्रेरणा देती है । जहां न तो वर्ण व वर्ग भेद है , ना कोई संकुचित भावना ।

जब भारत देश में 1857 की क्रांति असफल हो गई तब बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय (1838 - 1894) अंग्रेजी भाषा में प्रेसिडेंसी कॉलेज कोलकाता से ग्रेजुएट मात्र 19 वर्ष के नवयुवक थे । पिता के आदेश से अंग्रेजी प्रशासन में 'खुलना' के डिप्टी मजिस्ट्रेट के पद पर रहते हुए लेखन करते रहे । अंग्रेजी शासन के विरुद्ध स्वाधीनता संग्राम में जन गण मन का अस्त्र बना बंकीम जी द्वारा रचित गीत 'वंदे मातरम' ।

अपने मुकुर से मुखौटा उतारिए मूल स्वरूप में रहिए और आत्मा से गुनगुनाइए 'वंदे मातरम'.. ..सुजलाम सुफलाम मलयज शीतलाम सस्य श्यामला मातरम.....

भारत का राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम

ब्रिटिश शासन में 1970 - 80 के दशक में भारत के हर समारोह में ब्रिटेन का एक गीत अनिवार्य रूप से गाया जाता था - ' गॉड - सेव द क्वीन ' । बंकिम जी नौकरी करते थे और यह बात उन्हें बुरी लगती थी । इसलिए उन्होंने इस गीत के

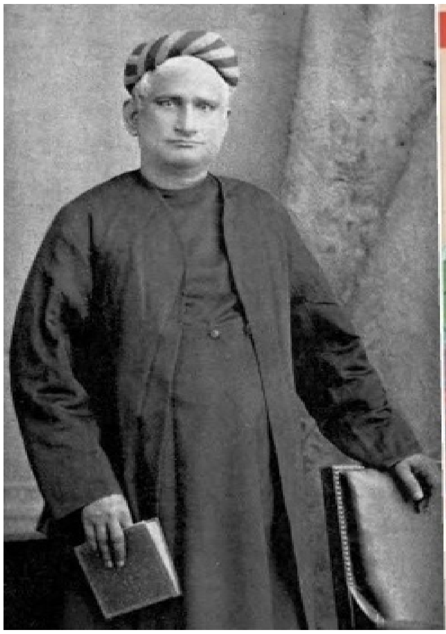

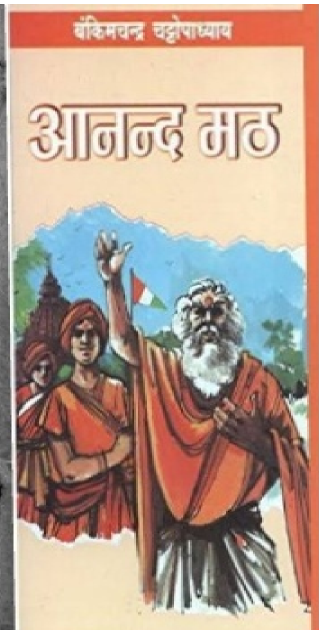

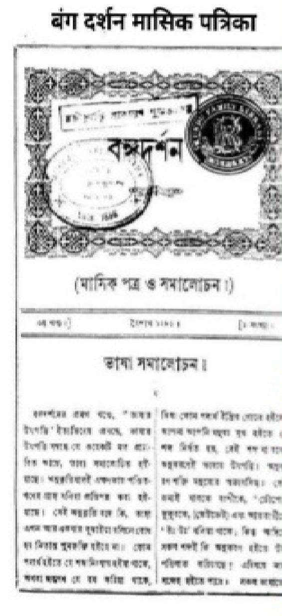

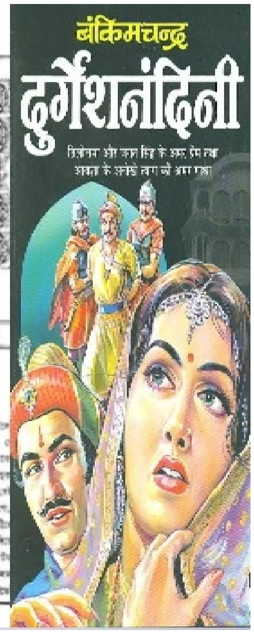

विकल्प के तौर पर रविवार कार्तिक सुदी नवमी शके 1797 (7 नवंबर 1875) को वंदे मातरम गीत के प्रथम 2 पदों की रचना की । कहा जाता है यह गीत उन्होंने सियालदह से नैहाटी आते समय ट्रेन में लिखा था ।

बंकिमचंद्र ने 1882 में प्रकाशित अपना चर्चित उपन्यास 'आनंदमठ' लिखा , तो मातृभूमि प्रेम से ओतप्रोत इस गीत को भी उसमें शामिल किया । उपन्यास में यह गीत भवानंद नाम के सन्यासी द्वारा गाया गया है।

उल्लेखनीय है वंदे मातरम गीत दो भाषाओं का मिश्रण है संस्कृत और बांग्ला । आरंभ के दो पद संस्कृत में है और बाकी पद बांग्ला भाषा में । इस गीत में मातृभूमि की दुर्गा के रूप में स्तुति की गई है।

वंदे मातरम गीत की धुन विष्णुपुर घराने के प्रसिद्ध संगीतकार यदुनाथ भट्टाचार्य ने बनाया और संभवत राग मल्हार में लयबद्ध किया ।

वंदे मातरम को सर्वप्रथम 28 दिसंबर 1896 को कोलकाता अधिवेशन के समय रविंद्र नाथ टैगोर ने देश राग ताल में गाया ।

5 साल बाद 1901 में कोलकाता में हुए एक अन्य अधिवेशन में श्री चरण दास ने यह गीत पुनः गाया।

वंदे मातरम का अंग्रेजी अनुवाद सबसे पहले अरविंद घोष ने किया और शीर्षक दिया 'बंगाल का राष्ट्र गीत'।

वंदे मातरम का उर्दू अनुवाद आरिफ मोहम्मद खान ने किया ।

1905 कर्जन ने बंगाल विभाजन की घोषणा की तो बंग भंग के विरुद्ध भारी आंदोलन हुआ । 7 अगस्त 1905 को बंग भंग के विरोध में एकत्रित भीड़ ने कहा .....वंदे मातरम ......वंदे मातरम .....और इसके अनुगूंज से चमत्कार हो गया । इस तरह अचानक ही भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को उनका प्रचार गीत मिल गया । स्वतंत्रता आंदोलन में जोश भरने के लिए यह गीत गाया जाने लगा ।

दिसंबर 1905 के अधिवेशन में इस गीत के दो छंद को राष्ट्रगीत का दर्जा दिया गया और बनारस अधिवेशन में इस गीत को सरला देवी चौधुरानी ने अपना स्वर दिया ।

1906 में इस गीत को देवनागरी लिपि में भी प्रस्तुत किया गया । कोलकाता अधिवेशन में गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर ने इसका संशोधित रूप प्रस्तुत किया।

सन 1906 से 1911 तक 'वंदे मातरम' मंत्र ने भारतीय जनता को इतनी आत्मशक्ति दी कि उनके जोश के सामने अंग्रेजों को बंगाल विभाजन का प्रस्ताव रद्द करना पड़ा ।

महात्मा गांधी ने वंदे मातरम के बारे में कहा - 'आज लाखों लोग बाद के लिए एकत्र होकर इसे गाते हैं मेरे विचार से इसने हमारे राष्ट्रीय गीत का दर्जा हासिल कर लिया है '।

स्वतंत्रता संग्राम के सपूत इसी मंत्र को गाते और बलिदानी बन जाते , फांसी के फंदे पर लटक जाते ।

भगत सिंह भी अपने पिता को पत्र में 'वंदे मातरम' से अभिवादन कर के लिखते थे । इतना ही नहीं सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज ने भी इस मंत्र को अंगीकार किया और सिंगापुर रेडियो स्टेशन से इसका प्रसारण होने लगा।

आज़ादी मिलने पर संविधान सभा के अध्यक्ष और भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने 24 जनवरी 1950 को घोषणा की कि -'वंदे मातरम के प्रथम 2 पदों को राष्ट्रीय गीत का दर्जा प्रदान किया जा रहा है।

सन 2002 में बीबीसी के एक सर्वेक्षण में वंदे मातरम को विश्व का दूसरा सर्वाधिक लोकप्रिय गीत बताया गया ।

वंदे मातरम राष्ट्रगीत ही नहीं अपितु राष्ट्र की आत्मा भी है ।जहां तक स्वाध्याय सहयोग और शोध आत्मक प्रयास से मैं जान सका मैंने इस लेख में प्रस्तुत किया ।

ड04/02, 11:48 ज्र्‌ऐम्प र्ख्ैूं पेज 2

जीवन वृत्त संक्षिप्त

ङ नाम - बंकिम चंद्र , जिसका अर्थ है उज्जवल पखवाड़े के दूसरे दिन चंद्रमा

ङ जन्म - 27 जून 1838

ङ स्थान - 24 परगना जिला के नैहाटी के पास छोटे से गांव कांठलपाड़ा ग्राम (पश्चिम बंगाल) में

ङ परिवार - परंपरागत बंगाली ब्राम्हण परिवार

ङ पिता - जादव चंद्र चट्टोपाध्याय , (मिदनापुर के डिप्टी कलेक्टर)
ङ माता - श्रीमती दुर्गा देवी

ङ प्रारंभिक शिक्षा में मेदिनीपुर स्कूल के दिनों से ही कविता लिखने की अद्भुत प्रतिभा ।

ङ उच्च शिक्षा - हुबली का मोहसीन कॉलेज , 1857 के पहले स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में मात्र 19 वर्ष की अवस्था में कोलकाता प्रेसिडेंसी कॉलेज से बीए की उपाधि से ग्रेजुएट होने वाले पहले भारतीय।

कानून की डिग्री भी हासिल की ।

ङ सरकारी सेवा - पिता की आज्ञा का पालन करते हुए 1858 में बंगाल के 1 जिले का डिप्टी कलेक्टर बने । कुछ समय बाद उनके काम को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने उनको डिप्टी मजिस्ट्रेट के पद पर नियुक्त कर दिया । कुछ समय तक बंगाल सरकार के सचिव पद पर भी रहे । राय बहादुर और सी.आई.ई. की उपाधियां प्राप्त की ।

लगभग 30 साल तक सरकारी सेवा करने के पश्चात

1891 में ब्रिटिश सेवा से सेवानिवृत्त होने का निर्णय लिया और नौकरी छोड़ दी ।

ङ निधन - 56 वर्ष की अवस्था मे 8 अप्रैल 1894 को , कोलकाता । बंकिम चंद्र की स्मृति में 1969 में भारत सरकार ने एक डाक टिकट जारी किया।

ङ विवाह - उस समय बाल विवाह प्रथा के कारण मात्र 11 वर्ष की आयु में विवाह हुआ । पत्नी की उम्र थी मात्र 5 साल ।11 वर्ष पश्चात पत्नी का देहांत हो गया जब बंकिमचंद्र केवल 22 साल के थे। पहली पत्नी की मृत्यु के बाद 1860 में राजलक्ष्मी नामक महिला से इनका विवाह हुआ जिनसे तीन पुत्रियां हुई ।

राष्ट्रवाद के दृष्टा

सरकारी सेवा में रहते हुए भी ब्रिटिश सरकार द्वारा देशवासियों पर उत्पीड़न और उनका अपमान होते देख बंकिम ने अनुभव किया कि सबसे पहले बंगाल और फिर संपूर्ण भारतवर्ष में आत्म जागरण व राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करने की आवश्यकता है ।

साहित्यिक सृजन

19वीं सदी के साहित्यकाश में एक उज्जवल नक्षत्र के रूप में उदित हुए बंकिम चंद्र और बांग्ला उपन्यास के प्रथम सार्थक सृजक बने । बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की पहचान बांग्ला कवि उपन्यासकार लेखक और पत्रकार के रूप में है। ये बंग साहित्य के भगीरथ थे।बंकिम चंद्र ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत कविता के लेखक के रूप में की थी ।बंकिमचंद्र अपना आदर्श ईश्वर चंद्र गुप्ता को मानते थे । उन्हीं के रास्ते पर चलते हुए उन्होंने भी कविता लेखन के द्वारा अपनी साहित्यिक यात्रा शुरू की।

उन्होंने ईश्वर चंद्र गुप्ता के साप्ताहिक समाचार पत्र 'संगबा प्रभाकर' में लिखना आरंभ किया।

आगे चलकर लेखनी की कल्पना बदली और प्रथम भारतीय अंग्रेजी उपन्यास के रूप में

बंकिमचंद्र की प्रथम रचना

'राजा मोहन्स वाइफ' 1864 में प्रकाशित हुई । इसमें मातंगिनी नामक महिला द्वारा पुरानी रूढ़िवादी प्रथाओं के खिलाफ आवाज उठाई गई । इस महिला के जरिए बंकिमचंद्र ने अपने विचारों को व्यक्त किया और भारतीय समाज की बुराइयों की कटु आलोचना की।बंकिमचंद्र ने प्रेम कहानी पर आधारित अपना पहला बंगला उपन्यास 'दुर्गेश नंदिनी' 1865 में

लिखा जब वे महज 27 साल के थे । इस उपन्यास के प्रकाशित होने के बाद बांग्ला कथा साहित्य की धारा एक नए युग में प्रवेश कर गई । 16 वीं शताब्दी के उड़ीसा को केंद्र में रखकर मुगलों और पठानों के आपसी संघर्ष की पृष्ठभूमि पर यह उपन्यास केंद्रित है । उपन्यास की कथा ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष के लिए भारतीयों को प्रेरित किया। साथ ही नायिका आयशा का जगत सिंह और तिलोत्तमा के प्रेम के लिए अपने प्रेम के बलिदान ने भारतीय संस्कृति का आदर्श प्रस्तुत किया। 1966 में बंकिमचंद्र ने एक प्रेम उपन्यास की रचना की नाम था 'कपालकुंडला ' । यह एक बनवासी कन्या की कहानी है। इस उपन्यास में बंकिमचंद्र को एक लेखक के रूप में स्थापित किया। विधवा पुनर्विवाह पर आधारित उपन्यास विषवृक्ष लिखा।

अपने पूर्व की रचनाओं से अलग बंकिम जी ने पहली बार ऐतिहासिक संदर्भ में अपना तीसरा उपन्यास 'मृणालिनी' लिखा , जो मुगलों के षड्यंत्र से संघर्षरत हिंदू राजा हेमचंद्र की गौरव गाथा है , तो दूसरी ओर उसके प्रेम में दीवानी और दर-दर की ठोकरें खाती मृणालिनी की करुण कथा भी है। इसमें हेमचंद का देश के लिए स्वार्थ त्याग और प्रेमिका के प्रति अपने प्यार का बलिदान प्रशंसनीय है । इस उपन्यास ने नारी की गरिमा को एक नई पहचान दी।

बंकिमचंद्र साहित्यिक अभियान के माध्यम से बंगाली भाषी लोगों की बुद्धि को उत्तेजित करके बंगाल में एक सांस्कृतिक पुनरुत्थान लाना चाहते थे इस दृष्टि से उन्होंने 1872 में 'बंग दर्शन' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया।

बंग दर्शन में प्रकाशित रचनाओं में हमें उनके देश के प्रति गंभीर प्रेम का दर्शन मिलता है । इसी मासिक पत्रिका में बंकिमचंद्र ने उपन्यास 'विषवृक्ष' को क्रमिक रूप से प्रकाशित किया।

1877 में 'चंद्रशेखर' उपन्यास प्रकाशित हुआ जो बाकी रचनाओं से अलग था और इसकी शैली सबसे अलग थी ।इसी साल 'रजनी' का प्रकाशन हुआ , जिसे बंकिम चंद्र की आत्मकथा कहा जाता है

आजादी के आंदोलन का प्रेरणास्रोत बनने वाला और मातृभूमि पूजा का सूत्रपात करने वाला राजनीतिक उपन्यास 'आनंदमठ' 1882 में प्रकाशित हुआ। यह बंकिमचंद्र का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास साबित हुआ। इसमें उत्तर बंगाल में 1773 के सन्यासी विद्रोह का वर्णन हैं जो देशभक्ति की भावना से परिपूर्ण है। इसमें बंकिमचंद्र ने अप्रशिक्षित किंतु अनुशासित सन्यासी सैनिकों की कल्पना की है जो अनुभवी ब्रिटिश सैनिकों से संघर्ष करते हैं और उन्हें पराजित करते हैं। इसी उपन्यास में वंदे मातरम गीत है।

अपनी रचना 'कृष्णकातेर विल' में बंकिम चंद्र ने अंग्रेजी शासन पर तीखा व्यंग किया ।

बंकिमचंद्र के उपन्यासों में

दुर्गेश नंदिनी , कपालकुंडला , मृणालिनी , विषवृक्ष , आनंद मठ युगलागुरिय , चंद्रशेखर , रजनी ,

राधा रानी , युगलांगुरिया , इंदिरा , देवी चौधरानी , मोचीराम गौरेर जीवनचरित्र आदि शामिल है।

बंकिम चंद्र का अंतिम उपन्यास सीताराम (1886)है जिसमे मुस्लिम सत्ता के प्रति एक हिंदू शासक का विरोध दर्शाया गया है।

बंकिमचंद्र द्वारा रचित प्रबंध ग्रंथ

लोक रहस्य , कृष्ण चरित्र , विज्ञान रहस्य , विविध समालोचना , पुस्तक प्रबंध आदि हैं।

इन्होंने धर्म , सामाजिक और समसामयिक मुद्दों पर आधारित कई निबंध लिखें ।

बंकिमचंद्र के उपन्यासों का हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया।

हम इन्हें भारतीय राष्ट्रवाद के दार्शनिक और दूरदर्शी साहित्यकार (कलम के सिपाही) और भारत का अलेक्जेंडर ड्यूमा मानते हैं ।

भारतीय राष्ट्रवाद के ऋषि

बंकिमचंद्र ने राष्ट्रवादी चेतना की स्वर्णिम अवधारणा को पुनः जागृत करने का अप्रतिम आरंभ किया । सन्यासी विद्रोह और बंगाल के वर्ष 1770 से 1774 तक के अकाल की पृष्ठभूमि पर लिखा गया कालजयी उपन्यास ' आनंदमठ ' अपने अद्वितीय कथानक के कारण बंगाल और कालांतर में संपूर्ण भारतीय साहित्य व समाज पर छा गया ।इसीलिए महर्षि अरविंद ने बंकिमचंद्र को भारतीय राष्ट्रवाद के ऋषि कह कर अभिहित किया ।

विशेष

बंगाल अकाल सन 1943 को संदर्भित करना मुझे प्रासंगिक लगता है । बच्चन जी की 'रचनावली' का खंड 1 (पृष्ठ 419) मेरे नयनों के सामने हैं -

वही बंगाल
जिसकी एक सांस ने भर दी
मेरे देश में जान
आत्मसम्मान

आजादी की आन
आज ,
काल की गति भी कैसी हाय
स्वयं असहाय
स्वयं निरुपाय
स्वयं निष्प्राण
मृत्यु के मुख पर होकर ग्रास
गिन रहा है जीवन की सांस सांस
हे कवि,
तेरे अमर गान की
सुजला - सुफला ,
मलय गंधिका,
शस्य -श्यामला
फुल्ल कुसुमिता,
चिर सुहागिनी,
मधुर भाषिनी,
धरती भरणी,
जगत वंदिता
बंगभूमि अब नहीं रही वह ।

बंगाल के अकाल में अजगर सा रूप बनाकर खा लेती अपनी संतान , बच्चे - बच्चियां खाती , लड़के लड़कियां खाती ,

खाती बूढ़े और जवान ...

बंगभूमि बन गई राक्षसी ......

बच्चन जी ने बंग वासियों के अंदर हृदय विदीर्ण स्थिति को अपनी लेखनी से संघर्ष करने का आवाहन किया ।

उठो, अन्य के लिए लड़ो तुम उठो उठो ,धर्म के लिए लड़ो तो तुम

उठो, ब्रह्म के लिए लड़ो तुम
नहीं अन्य से
आज कर्म से वंचित हो तुम

............बच्चन

विज्ञापन शुल्क निम्न प्रकार से है

- **कलर पेज फूल पेज ₹ 20000 मात्र**
- **हाफ पेज ₹10000 मात्र**
- **ब्लैक एंड व्हाइट फूल पेज ₹12000 मात्र**
- **हाफ पेज ₹6000 मात्र**
- **रंगीन पेज पर छोटा विज्ञापन ₹2000 मात्र**
- **ब्लैक एंड व्हाइट पर छोटा विज्ञापन ₹1000 मात्र**

विज्ञापन के लिए शुल्क निम्न बैंक खाता में जमा करा सकते हैं:

Account Name: **Sach Ki Dastak**
A/c. No. : **13751652000024**
IFSC Code : **PUNB0137510**
Bank: **Panjab National Bank**

Gpay-
(1) 9045610000
(2) 9621503924

जानिए! कौन हैं दोहामणि श्री इन्दुभूषण कोचगवे

फाईल फोटो : श्री इन्दुभूषण कोचगवे जी का परिवार

आकांक्षा सक्सेना
न्यूज ऐडीटर सच की दस्तक

साथियों! भगवान श्री कृष्ण जी ने श्रीमद्भागवत गीता में स्पष्ट कहा कि साहित्यकारों में, मैं ऋषि वेदव्यास हूँ। भगवान शिव जिनके डमरू से संस्कृत भाषा का प्राकट्य हुआ और तमिल भाषा ने उन्हीं से अस्तित्व पाया । अतैव, शिव पुराण में सदाशिव स्वंय कहते हैं कि शब्दों में, मैं ओंकार हूँ। यही नहीं विश्व के सभी धर्मों में शब्द पूजनीय माने गये हैं। इसलिए विश्व का प्रत्येक लेखक आराधनीय है और इसी क्रम में आज आपको शब्दों द्वारा शब्दों को रूबरू करायेंगे और वह शब्द होगें, भारतवर्ष की उस महान,आशुकवि, दिव्य साहित्यिक, स्थावर-जंगम सम्मोहित शख्सियत आदरणीय श्री इन्दु भूषण कोचगवे जी से, जिन्होंने अनेक विषयों पर धाराप्रवाह दोहे लिखने की अपनी इस विलक्षण शब्द सिद्धि से राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय साहित्यकारों में अपना एक अलग नाम-पहचान-मुकाम पाया है जिससे आज, हिंदी भाषा की 'दोहा मणि' उपाधि शब्द स्वतःही आदरणीय श्री इन्दु भूषण कोचगवे जी के नाम के आगें नतमस्तक हो गया है। बता दें कि इस 'सच की दस्तक' के वही संरक्षक भी हैं जिनके बहुमूल्य मार्गदर्शन में वाराणसी से प्रकाशित होने वाली यही राष्ट्रीय मासिक पत्रिका 'सच की दस्तक' निरंतर नयी उपलब्धियों को प्राप्त हो रही है। तो, आइये! जानते हैं उनकी अभूतपूर्व अविस्मरणीय मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत अनुकरणीय जीवन यात्रा उन्हीं की जुबानी-

सवाल - सर आपके जन्मस्थान व अपने परिवार के बारे में हमारे पाठकों को बतायें?

जवाब- मेरा जन्म 30 जून 1939 को कुलीन कायस्थ परिवार में वाराणसी के सन्निकट मुगलसराय (दीनदयाल उपाध्याय नगर) में हुआ। मेरी पथप्रदर्शक माताजी का नाम स्व. श्रीमती चंद्रप्रभा देवी और प्रेरणास्रोत मेरे पिताजी का नाम स्व.

श्री असीम शुक्ल तथा श्री बुद्धिनाथ मिश्र जी के साथ : दोहामणि श्री इन्दुभूषण कोचगवे जी

श्री जय मंगल प्रसाद जी है।

सवाल- सर आपने शिक्षा कहाँ से पूर्ण की?

जवाब- मैनें रेलवे इंटर कॉलेज मुगलसराय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय पटना विश्वविद्यालय, काशी विद्यापीठ, गोरखपुर विश्वविद्यालय से एम. एस. सी., एम. ए., बी. एड्., डिप्लोमा इन फाईन आर्ट्स किया।

सवाल- सर मुगलसराय और देहरादून के लोग आपको 'गुरूजी' क्यों पुकारते हैं?

जवाब- वो इसलिए कि मैं 1969 से अक्टूबर 1978 तक - नगरपालिका इंटर कॉलेज, मुगलसराय में रसायन विज्ञान प्रवक्ता रहा और 1978 - फरवरी 1999 तक - रेलवे इण्टर कॉलेज, मुगलसराय में शिक्षक था और वहीं से प्रधानाध्यापक के पद से सेवामुक्त हुआ। सेवा मुक्त होने के बाद अक्टूबर 1999 से जुलाई 2001 तक - प्राचार्य, एस. जी. आर. आर. पब्लिक स्कूल, भानियावाला, देहरादून रहा। अक्टूबर 2001-2007 तक - भारत में दृष्टि बाधित बच्चों के लिए सर्वप्रथम स्थापित विद्यालय, शार्प मेमोरियल स्कूल फॉर द ब्लाइंड में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के सेवार्थ शिक्षण एवं प्रशिक्षण कार्य किया। वहीं, एम. पी. भोज मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त बी.एड्. (स्पेशल) पाठ्यक्रम का संचालन मुख्य समन्वयक के रूप में किया।

सवाल - सर आप किसी सोसाइटी से भी जुड़े हैं?

जवाब- जी, ''चित्रांचल कल्याण समिति'' से। दिव्यांग बच्चों के सेवार्थ सन् 2003 में ''चित्रांचल कल्याण समिति'' की स्थापना करके दिव्यांग बच्चों के हितार्थ ''समुदाय आधारित पुनर्वास'' सेवा से जुड़ा हुआ हूँ। इसके अतिरिक्त मूक बधिर बच्चों के विद्यालय 'बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ लर्निंग', सुविधा हीन बच्चों की संस्था उत्तराखंड राज्य बाल कल्याण परिषद'', भारत विकास परिषद 'द्रोण', उत्तराखंड डिस्लेक्सिया एंड 'डिस्एबिलिटी एसोसिएशन', हिन्दी साहित्य समिति, काशी हिंदू विश्वविद्यालय प्राचीन छात्र समिति, देहरादून में स्थायी सदस्य के रूप में अभी तक सेवारत् हूँ।

सवाल - सर आप भारत की किन पत्रिकाओं से बतौर लेखन जुड़े रहे?

जवाब - लगभग सभी सुप्रसिद्ध पत्र - पत्रिकाओं - सर्व प्रथम 'धर्मयुग', आज, गाण्डीव, सरिता में मेरी रचनाएँ प्रकाशित हुईं। देहरादून आने के बाद विज्ञान परिचर्चा, कविताम्बरा, सोच विचार तथा रत्नांक में मेरी कहानी तथा कविताएं प्रकाशित होती रही हैं।

सवाल - सर कृपया आपकी लिखी हुई पुस्तक के बारे में ''सच की दस्तक' के पाठकों को बतायें?

जवाब- आकांक्षा! जीवन के सत्तर वर्ष के पश्चात मेरी पहली पुस्तक 'सात दशक पश्चात ही गढ़ा घरौंदा एक' जो पूरी तरह दोहे पर आधारित है, 2017 में प्रकाशित हुई।' इसमें विभिन्न विषयों, जैसे - ममता के प्रहरी (माता-पिता), बेटी, बचपन, अनाथ बच्चे, विकलांगता, मौसम, आदि पर करीब 721 दोहों का संकलन है। इसके अतिरिक्त, मेरी तीन पुस्तकें फरवरी माह में प्रकाशित हो कर आ रही हैं।1 - 'विचार मौक्तिक मुक्तकावलि', 2 - विचार मंजूषा तथा 3 - छन्द-छन्द मकरन्द (मुक्तक संग्रह)।

सवाल - सर आपके सबसे ज्यादा पसंदीदा कवि और लेखक कौन से हैं?

जवाब - कवियों में तुलसीदास, सूरदास, महादेवी वर्मा, जयशंकर 'प्रसाद' तथा मैथिलीशरण गुप्त। कहानीकार के रूप में प्रेमचन्द जी।

सवाल - सर आपकी इस साहित्य यात्रा में सबसे ज्यादा सहयोग किसका रहा और किस तरह का संघर्ष रहा?

जवाब - देहरादून आने के बाद प्रोफेसर डी. पी. एस. खन्ना जी, श्री सुशील चन्द्र डोभाल जी, डॉ. मुकुन्द नीलकण्ठ जोशी जी, श्री जगदीश बाबला

जी तथा मेरे बचपन के मित्र श्री गौरीशंकर तिवारी ने हर कदम पर सहयोग किया और अब श्री शिव मोहन सिंह जी भी साथ निभा रहे हैं।रही बात संघर्ष की तो जब अच्छे मित्र और सहयोगी मेरे साथ हैं तो संघर्ष कैसा।

सवाल- आपके पूरी जीवन की अद्भुत यात्रा में आपकी प्रेरणा कौन रहीं? मतलब हर पुरूष की सफलता के पीछे नारी का हाथ होने वाली कहावत में.. वो कौन रहीं?

जवाब- मेरी माँ और मेरी अर्धांगिनी व मेरा परिवार मेरी ऊर्जा रही हैं। दुःखद है कि अब दोनों ही मेरे साथ भौतिक रूप से नहीं हैं परन्तु वे मेरी स्मृति पटल पर सदा अमर हैं और रहेगीं।

सवाल - सर आप को सर्वप्रथम लेखन की प्रेरणा किससे मिली?

जवाब - श्री जगदीश बाबला जी ने प्रेरित किया और सुविधा हीन तथा दिव्यांग बच्चों से प्रेरणा मिली।

सवाल - युवा लेखकों नवांकुरों को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

जवाब - सर्वप्रथम जब हम अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करेंगे तभी अच्छी चीजें पाठकों को दे सकेंगे। जीवन में दिव्यांग बच्चों से प्रेरणा लेनी चाहिए। ■■

वसंत पंचमी व महाशिवरात्रि की हार्दिक अभिनंदन व शुभकामना

इंजीनियर अवधेश यादव

ग्राम प्रधान भभौरा

वसंत पंचमी व महाशिवरात्रि की हार्दिक अभिनंदन व शुभकामना

तालिब अनवर

ग्राम पंचायत रसिया

विकासखंड साहबगंज

वसंत पंचमी व महाशिवरात्रि की हार्दिक अभिनंदन व शुभकामना

राम लाल यादव

ग्राम प्रधान बोदलपुर

मन के मांगल गीत

शिव मोहन सिंह, उपसंपादक
देहरादून

अपने पंख समेट रही है,
हिम-शिखरों की शीत।
अधरों पर आकर छलके हैं,
मन के मांगल गीत ।।

'फूलों की घाटी' उतरी है,
कानन- कानन में ।
बाँट रहे ऋतुराज निछावर,
आँगन- आँगन में ।
कंण- कंण में उत्सव रचता है,
कलरव में संगीत ।।

पीले हाथ हुए हैं , मौसम
में ,हरियाली के ।

पात - पात पर मन लहराए,
दिन खुशहाली के ।
माँ के आँचल में निधियां सब,
घर-घर में नवनीत ।।

मधुकर मधुरस ढूँढ रहा है
मधुमय कलियों में ।
खुशबू संग मुनादी करती
पुरवा गलियों में ।
नयनों के संवाद बनाते
अपने मन की रीत ।।

ऋतुराज वसंत

रोहित कोचगवे, स्टेट ब्यूरो
उत्तराखंड

नभ सारा टेसू हुआ, धरती सब पुखराज।
तन सारा केशर हुआ, मन सारा ऋतुराज।।

सुबह-सुबह प्रतिदिन पड़ोसी का कुक्कुट अपने बाँग से नये प्रभात की सूचना तो देता ही है परन्तु आज आम के पेड़ से कोयल की मधुर कूकों ने ऋतुराज वसंत के आगमन की सूचना दी तो मन बाग-बाग हो गया और एक नयी स्फूर्ति का आभास होने लगा। वसंत उत्तर भारत तथा समीपवर्ती देशों की छः ऋतुओं में से एक ऋतु है, जो फरवरी मार्च और अप्रैल के मध्य इस क्षेत्र में अपना सौंदर्य बिखेरती है। ऐसा माना गया है कि माघ महीने की शुक्ल पंचमी से वसंत ऋतु का आरंभ होता है। फाल्गुन और चैत्र मास वसंत ऋतु के माने गए हैं। फाल्गुन वर्ष का अंतिम मास है और चैत्र पहला, इस प्रकार हिंदू पंचांग के वर्ष के अन्त और प्रारम्भ का मधुर संगम वसंत में ही होता है। वसंत

ऋतु प्राकृतिक सौंदर्य में निखार, मादकता का संगम भी है। प्राचीनकाल से ही वसन्त लोगों का सबसे मनचाहा मौसम रहा है। इस मौसम में फूलों पर बहार आ जाती है, खेतों में सरसों का सोना चमकने लगता है, जौ और गेहूं की बालियां खिलने लगती हैं, आमों के पेड़ों पर बौर आ जाते हैं और हर तरफ रंग-बिरंगी तितलियां उड़ने लगती हैं। अतः राग रंग और उत्सव मनाने के लिए यह ऋतु सर्वश्रेष्ठ मानी गई है इसीलिए इसे ऋतुराज कहा गया है। ऋतुराज वसंत का स्वागत सदैव माँ सरस्वती के वन्दन से ही किया जाता है ऐसी हमारी परम्परा है।

सरस्वती वन्दना

1 सजाकर स्नेह शब्दों में, सभी
उद्गार लाया हूँ।
खिले जो फूल श्रद्धा में, वही
उपहार लाया हूँ।
चढ़ा कर भावना अपनी, करूँ मैं
अर्चना तेरी,
चरण रज दान दे दो माँ, शरण
में आज आया हूँ।

2 अगर मैं टूट जाता हूँ, सदा तुम
आस लगती हो।
कमल पर बैठ पद्मासन, परम
विश्वास लगती हो।
कभी जो ढूँढता तुझको,
बसाकर बन्द पलकोंमें,
हृदय की साज वीणा में, सरस
झंकार लगती हो।

3 लिखा जो भाव शब्दों में, वही
बस कल्पना मेरी।
हृदय की रागिनी बनकर, सजी
यह वन्दना मेरी।
करूँगा यह तुझे अर्पित, किया
उपकार है जिसने
यही है कामना मेरी, यही बस
अर्चना मेरी।

4 हृदय के तार बजते हैं, विनय के
गीत गाता हूँ।
कभी अर्पण, कभी अर्चन, कभी
वन्दन सजाता हूँ।
शरण में आज मैं आया, यही
फरियाद ले अपनी,
दिया जो दर्द दुनिया ने, वही
तुझको बताता हूँ।

5. बजा दो माँ, मधुर वीणा, मिले
संगीत का आगर।
सजा दो आज यह उपवन, मधुर नव
गीत तुम गा कर।
खड़ी अज्ञानता मेरी, बनी
अवरोध जीवन की,
बहा दो ज्ञान की गंगा, हृदय में
प्रीति का सागर।

6 सुरक्षित सर्वदा जीवन, तुम्हारी
ही निगाहों में।
सहायक तुम रही मेरी, सदा
संगीन राहों में।
कभी सूरज, कभी चन्दा, कभी
जुगनूपरी बनकर,
उजाला ही किया तूने, हमारी
स्वप्न गाहों में।

7 समर्पित भावना दिल की, बनी है
अर्पणा मेरी।
खिले जो फूल उपवन में, सजी
है अल्पना मेरी।
खड़ा हूँ द्वार पर तेरे, सजाकर
दीप से थाली,
शरण में आज ले लो माँ, यही
बस अर्चना मेरी।

■ ■

यूपी चुनाव - 2022 का दलबदलू रूप

चुनावी माहौल में बड़ी न्यूज रही साईकिल को कमल पसंद है क्योंकि सपा की बहू अपर्णा यादव बीजेपी में शामिल हुईं।इसी क्रम में कई अधिकारी अपनी सेवाएं समाप्त कर नेता बनने निकल पड़े हैं। इसी क्रम में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) से सेवनिवृत्ति हुए राजेश्वर सिंह आज बीजेपी में शामिल होंगे। वे प्रदेश की सुल्तानपुर सदर सीट से चुनाव लड़ेंगे। राजेश्वर सिंह ने कहा कि 24 साल तक मैंने अपनी सेवाएं दी और अब जब मेरी सेवा के 11 साल बचे हैं तब मैं इसे और बड़े स्तर पर ले जाने के लिए राष्ट्रवादी राजनीति में उतर रहा हूं। यूपी में चुनाव हो और जातिवाद न हो, ये सम्भव ही नहीं तभी तो किठौर से भाजपा ने मौजूदा विधायक सत्यवीर त्यागी को चुनावी मैदान में उतारा है। जबकि सपा-रालोद

गठबंधन ने एक बार फिर से पूर्व कैबिनेट मंत्री शाहिद मंजूर पर दांव लगाया है। पिछले चुनाव में भाजपा को इस सीट पर जीत का स्वाद चखने को मिला था। क्योंकि रालोद से भाजपा में आए सत्यवीर त्यागी ने सपा उम्मीदवार शाहिद मंजूर को मात दे दी थी। सपा उम्मीदवार शाहिद मंजूर के पिता मंजूर अहमद भी यहां से दो बार विधायक बन चुके हैं। मंजूर के किले को भेदने के लिए भाजपा ने सत्यवीर पर दांव लगाया था और वो कामयाब भी हुए थे। ऐसे में पार्टी ने उन्हें एक बार फिर से अपना प्रत्याशी बनाया है। यहां से भाजपा के यह दूसरे विधायक हैं जिन्होंने जीत दर्ज की है। इससे पहले साल 1993 में रामकिशन वर्मा ने पहली बार भाजपा का परचम लहराया था।साल 1957 से लेकर 2017 तक किठौर सीट पर कांग्रेस को तीन बार और भाजपा को दो बार जीत मिल चुकी है। जबकि बसपा का खाता भी नहीं खुला है। ऐसे में इस बार भी बसपा यहां पर कमजोर नजर आ रही है। यहां से पार्टी ने गुर्जर केपी मावी पर दांव लगाया है, जबकि कांग्रेस ने धनसिंह कोतवाल की प्रपौत्री को चुनावी मैदान में उतारा है। किठौर सीट पर मुस्लिम मतदाताओं की तादाद सवा लाख है, दलितों की 72 हज़ार और गुर्जर मतदाताओं की तादाद 42,000 के आस-पास है। जबकि ठाकुर मतदाताओं की संख्या 28,000, जाट मतदाता 19,000 और त्यागी मतदाता 18,000 और 12,000 ब्राह्मण मतदाता है।दल बदलू के इसी क्रम में योगी सरकार में मंत्री रहे स्वामी प्रसाद मौर्य ने भाजपा छोड़कर समाजवादी पार्टी (सपा) का दामन थामा था। उस वक्त उनके साथ कई और नेताओं ने सपा की सदस्यता ग्रहण की थी और इसे भाजपा में भगदड़ के तौर पर देखा जा रहा था। ऐसे में सपा में उनका टिकट पडरौना से पक्का माना जा रहा था लेकिन सपा ने उन्हें पडरौना से नहीं बल्कि दूसरे विधानसभा क्षेत्र से चुनावी मैदान में उतारा है। सपा ने बुधवार को 3 और उम्मीदवारों के नामों का ऐलान किया। इसमें हाल ही में पार्टी में शामिल हुए स्वामी प्रसाद मौर्य का नाम भी शामिल है। जिन्हें सपा ने कुशीनगर जिले की फाजिलनगर सीट से अपना उम्मीदवार बनाया है। पिछले विधानसभा चुनाव में स्वामी प्रसाद मौर्य ने भाजपा की टिकट पर पडरौना से विधानसभा चुनाव जीता था और फिर उन्हें योगी आदित्यनाथ सरकार में मंत्री बनाया गया था। इससे पहले उन्होंने साल 2012 के चुनावों में बसपा की टिकट पर जीत दर्ज की थी।कांग्रेस में 32 सालों तक रहने वाले आरपीएन सिंह ने हाल ही में भाजपा की सदस्यता ग्रहण की थी। जिसके बाद से स्वामी प्रसाद मौर्य के भीतर द्वंद चल रहा था। माना जा रहा है कि भाजपा आरपीएन सिंह को पडरौना से चुनावी मैदान में उतार सकती है। पडरौना आरपीएन सिंह का परंपरागत क्षेत्र रहा है। साल 2009 में वह पडरौना लोकसभा क्षेत्र से ही चुनाव जीतकर सांसद बने थे। इसके बाद मनमोहन सिंह की सरकार में उन्हें राज्य मंत्री बनाया गया था। साल 2009 के लोकसभा चुनाव में स्वामी प्रसाद मौर्य ने बसपा की टिकट पर चुनाव लड़ा था और उन्हें आरपीएन सिंह ने परास्त किया था। पर एक डिबेट में वह फंस गये जब डीबेट चल रही थी। स्वामी प्रसाद मौर्य भी आरपीएन सिंह पर निशाना साध रहे थे। इसी कोशिश में उन्होंने यह बताने की कोशिश की आरपीएन सिंह का सियासी कद उनके सामने बहुत छोटा है। इसी दौरान एंकर द्वारा सवाल किया गया कि उन्होंने सरकार में श्रम मंत्री रहते हुए 5 सालों में क्या-क्या किया।इस पर मौर्य ने जवाब दिया कहा, श्रम आयोग का गठन 2009 में हुआ था। इसके बाद 2017 तक बस सात लाख श्रमिक लाभार्थी थे। लेकिन 2022 में योगी सरकार में लाभार्थियों की संख्या एक करोड़ पहुंच गई। पूर्व सरकारों के कार्यकाल में सिर्फ 34 लाख श्रमिकों का ही रजिस्ट्रेशन हुआ था लेकिन आज 1.30 करोड़ से भी ज्यादा श्रमिकों का रजिस्ट्रेशन हुआ है।उन्होंने कहा कि जितना रोजगार पिछले 10 सालों में नहीं दिया गया। उन्होंने श्रम मंत्री रहते हुए 5 लाख से ज्यादा रोजगार दिए। स्वामी प्रसाद मौर्य के इस बयान के बाद बीजेपी ने एक वीडियो शेयर करते हुए पूछा कि जब योगी सरकार ने इतना बढ़िया काम किया तो फिर स्वामी प्रसाद मौर्य सपा में क्यों चले गए।जानकारी के मुताबिक, सहजनवां विधानसभा क्षेत्र से सपा के करीब आठ दावेदारों ने आवेदन किया था। इनमें मनोज और संजय के नाम भी शामिल थे। हालांकि, टिकट मिला यशपाल रावत को। मनोज, अपना दावा इसलिए मजबूत मान रहे थे कि उनके पिता जगदीश यादव सपा के जिलाध्यक्ष रह चुके हैं। 1974 से ही सपा से जुड़े जगदीश, सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव के करीबी माने जाते हैं।प्रत्याशी घोषित होने के बाद, मनोज व उनके समर्थकों ने नाराजगी जताई।

लखनऊ जाकर पार्टी नेताओं से बात भी की, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकल सका। इसी का नतीजा रहा कि मनोज ने बगावत कर दी। वह चुनाव लड़ने की तैयारी में जुटे हैं। मनोज कहते हैं कि मुलायम सिंह यादव कहते थे कि अपने हक के लिए बगावत ठीक रहती है। लिहाजा, बगावत करना उचित समझा है। 2017 में भी टिकट काट दिया गया था।इसी तरह टिकट के दावेदार संजय सिंह भी बगावती तेवर में हैं। खबर है कि संजय ने टिकट की चाहत में ही सपा के जिला कार्यालय में फर्नीचर तक की व्यवस्था कराई थी। लखनऊ तक दौड़भाग भी की, लेकिन टिकट नहीं मिल सका। अब संजय ने भी बगावती तेवर अख्तियार कर लिए हैं। उनका कहना है कि सहजनवां से ही विधानसभा का चुनाव लड़ना है। इसकी तैयारी चल रही है। जनता के बीच जा रहे हैं। क्षेत्र में लंबे समय से काम कर रहे हैं।सपा जिलाध्यक्ष अवधेश यादव ने कहा कि मनोज और संजय दोनों पार्टी के कार्यकर्ता हैं। ये पार्टी का मामला है। हम संवाद कर दोनों को मना लेंगे। कुल मिलाकर यूपी चुनाव में हर पार्टी में मानमनुउवर चल रहा है बाकि रिजल्ट कार्ड जनता के वोट मुट्ठी में कैद है। खेर, जो भी राजा बने पर प्रजा सुख रहे बस।

■■

मैं भारत का नेता

मैं हूँ भारत का नेता
मुझे वोट चाहिए।

भले ही देश हो कंगाल पर
मुझे जेब भर नोट चाहिए।।

प्रगति हो या न हो देश की,
मुझे अपने बंगले और कार चाहिए।

मिले नही रोजगार सामान्य को पर
वोट बैंकिंग के लिए आरक्षण चाहिए।

स्कूल में हो टीचर आरक्षित,चाहे ज्ञान न हो
तनिक भी पर डिग्री बीटीसी, बी.एड पास चाहिए।

विकास होगा तो कैसे होगा
इस कि मुझ को फिक्र नहीं।

देश में न्यूनतम अंक वाले
डॉक्टर और इंजीनियर बनेंगे।

99% वाले विदेशों में जॉब करेंगे।

है तकनीकी विकसित ,फिर भी लाचार कहलाते हैं।
मेरे देश के युवा भ्रष्टाचार की मार से मारे जाते हैं।

मैं भारत का नेता हूँ
जनता को मस्जिद और मंदिर में लड़वाता हूँ।

स्कूल कॉलेज बंद रखूंगा पर
शराब खाने खुले रहने रखवाता हूँ।

रोजगार के नाम पर चाय पकोड़े के व्यवसाय और
गरीबों को फ्री का राशन दे कर अपनी कुर्सी बचाता हूँ।

सांसद बन कर फ्री की बिजली ,फ्री के बंगले
संग नौकर और गाड़ी भी मुफ्त चाहता हूँ।

मैं भारत का नेता हूँ।।

■■

संध्या चतुर्वेदी
मथुरा,उप

विपक्ष के अस्तित्व और सत्ता के साख का सवाल है चुनाव

मनोहर कुमार
पं दीन दयाल उपाध्याय नगर
चन्दौली

चुनाव आयोग ने आठ जनवरी को पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों की तिथि घोषित कर दी।चुनाव की तिथि घोषित होने से पहले राजनीतिक दल यात्राओं के जरिए अपनी सियासी पिच तैयार करने में लगे थे। इसी बीच कोरोना की तीसरी लहर अपना फन उठाने लगा।जिससे इन यात्राओं पर विराम लग गया।चुनाव की तिथि घोषित होने के साथ ही कोरोना संक्रमण के बढ़ते केस को देखते हुए आयोग ने राजनीतिक दलों के रैलियों,यात्राओं,रोड शो,जुलूसों पर प्रतिबंध लगा दिया जो समय समय पर बढ़ाया जा रहा है।राजनीतिक दलों को वर्चुअल प्रचार की अनुमति दी गई है। पांच राज्यों में विधान सभा चुनाव काफी अहमियत वाले होने हैं।इसमें सबसे बड़ा सूबा उत्तर प्रदेश काफी खास है। इस चुनाव में विरासत बनाम विकास की जंग देखने के लिए मिलेगी। इसमें सत्ता की साख और विपक्षी दलों के अस्तित्व का सवाल भी है। यह चुनाव किसान आंदोलन, अयोध्या में राम मंदिर निर्माण, कृषि कानूनों की वापसी, कोरोना महामारी की तीसरी लहर,काशी विश्वनाथ कोरिडोर के उद्घाटन के बीच

हो रहे हैं।

चुनाव से पहले राजनीतिक उठापटक तेज हो गई।एक दूसरे दल के विधायक पाला बदलने में लगे रहे।सियासी जोड़ तोड़ दौर शुरू है।सभी दल अपने एजेंडे के साथ सामने आ रहे हैं।

पांच राज्यों में होने जा रहे विधानसभा चुनाव भाजपा के लिए जहां साख तो विपक्ष के लिए अस्तित्व का सवाल के समान नजर आ रहे हैं। यूपी चुनाव में सपा गठबंधन के अलावा भाजपा भी अपने सहयोगियों को साथ लेकर चल रहे हैं।इस चुनाव में बसपा और कांग्रेस अपने बूते चुनाव मैदान में हैं तो आम आदमी पार्टी भी चुनाव में दमदारी से आ रही है। विभिन्न दलों में सेंध लगाने का भी एक दूसरे में होड़ मची है। येन वक्त पर कई विधायकों ने पाला बदला तो उन्हें टिकट देने में कोई कंजूसी नहीं की गई।

उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में विधानसभा चुनाव का नगाड़ा बज चुका है।कोरोना की चुनौतियां, ओमिक्रॉन के बढ़ते खतरे के बीच चुनाव आयोग ने पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा कर दी है।

बीजेपी, अपना दल (एस) और निषाद पार्टी के साथ गठबंधन कर 2022 के यूपी चुनाव मैदान में उतरी है।सूबे में बीजेपी की सत्ता को बचाए रखने के चुनौती है। यूपी में यह चुनाव कानून व्यवस्था,विकास,दंगा शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे मुद्दे हावी नहीं हैं।सपा प्रमुख अखिलेश यादव सूबे में जातीय आधार वाले छोटे दलों के साथ मिलकर बीजेपी से दो-दो हाथ करने के लिए उतरे हैं। सपा ने यूपी में आरएलडी, सुभासपा, प्रसपा, जनवादी पार्टी, महान दल सहित करीब एक दर्जन छोटे दल से गठबंधन किया।

प्रियंका महिला कार्ड खेल रही हैं और 40 फीसदी टिकट देने से लेकर उनके लिए तमाम घोषणाएं कर रखी है।वहीं, 2022 का चुनाव बसपा के साथ-साथ दलित राजनीति के लिए भी अहम माना जा रहा है। बसपा ने किसी भी दल के साथ गठबंधन नहीं किया है। और 2007 की तरह ब्राह्मण-दलित समीकरण बनाने में जुटी हैं। इसके अलावा यूपी में असदुद्दीन ओवैसी मुस्लिम मतों के सहारे सूबे में अपने पैरे जमाने के लिए बेताब हैं। यूपी की सियासी मुफ्त और माफ़ की योजना की तरफ ज्यादा घूम रही है। चुनाव की तिथि की घोषणा से पहले सियासी दलों ने राजनीतिक दलों ने यात्राओं के जरिए मतदाताओं में पैठ बनाने की कोशिश में लगे थे। समाजवादी पार्टी विजय यात्रा निकाल कर अपने संदेश जनता में देने में लगी रही।उसी तर्ज पर सत्ता में वापसी के लिए जन विश्वास यात्रा के जरिए जनता को अपने योजनाओं का प्रचार कर रही थी तो कांग्रेस प्रतिज्ञा यात्रा से अपनी पकड़ मजबूत बना रही थी।इसी बीच कोरोना का सफर शुरू हो गया।तीसरी लहर के बीच चुनाव आयोग ने प्रचार पर प्रतिबंध लगा दिया।

सूबे में सियासी हलचल तेज है।यहां कांग्रेस और बीजेपी के साथ आम आदमी पार्टी, बसपा और कई छोटे दल किस्मत आजमा रहे हैं।ऐसे में बीजेपी के लिए उत्तराखंड चुनाव सबसे ज्यादा चुनौती पूर्ण बना हुआ है

क्योंकि यहां हर पांच साल पर सत्ता बदलने की रिवायत दो दशक से चली आ रही है। ऐसे में कांग्रेस को सत्ता में अपने वापसी करने की उम्मीद दिख रही है तो बीजेपी सत्ता परिवर्तन के मिथक को तोड़ने में जुटी है।

चुनाव कांग्रेस सहित कई क्षेत्रीय दलों के लिए भी अग्निपरीक्षा साबित होंगे। दलों का बेहतर प्रदर्शन राष्ट्रीय राजनीति में नए समीकरणों को जन्म देगा। कहा जा रहा है कि ये चुनाव 2024 में होने वाले लोकसभा चुनावों का सेमीफाइनल हैं और भाजपा कांग्रेस समेत उन सभी राजनीतिक दलों जो मैदान में हैं, की अग्निपरीक्षा इन चुनावों में होगी। लेकिन वास्तविकता है कि यह चुनाव राजनीतिक दलों के लिए नहीं बल्कि आम जनता या मतदाताओं की अग्निपरीक्षा साबित होने जा रहे हैं। क्योंकि इन चुनावों के नतीजे ही मतदाताओं के मानस का पैमाना होंगे और उनके अनुसार ही देश की भावी राजनीतिक दिशा, दशा और उसके मुद्दे तय होंगे जो अगले लोकसभा चुनावों की भूमिका तैयार करेंगे।

जिन पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव हो रहे हैं उनमें चार राज्य उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में भाजपा की सरकारें हैं जबकि पंजाब में कांग्रेस सत्ता में है। यानी भाजपा को अपने चार राज्य बचाने और साथ ही पंजाब में जहां वह पहली बार बिना अकाली दल की बैसाखी के उतर रही है, में अपने बलबूते कमल खिलाने की चुनौती है। वहीं कांग्रेस के सामने पंजाब में अपनी सरकार बचाने और उत्तराखंड, मणिपुर, गोवा में सरकार

बनाने और उत्तर प्रदेश में प्रियंका गांधी के नेतृत्व में चमत्कारिक प्रदर्शन करने का लक्ष्य है। वहीं उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी अपने सहयोगी दलों के साथ भाजपा गठबंधन को रोकने और अपनी सरकार बनाने के मंसूबे के साथ मैदान में है तो बसपा की कोशिश कम से कम इतने विधायक जिताकर लाने की है कि बिना उसके कोई सरकार न बन सके। आम आदमी पार्टी पंजाब में इस बार सरकार बनाने से न चूकने के लिए पूरी ताकत लगा रही है और उत्तराखंड, गोवा व उत्तर प्रदेश में भी चुनाव मैदान में है। आप ने मुख्यमंत्री पद के दावेदार की घोषणा कर दी है।

यूपी में सात चरणों में चुनाव -

पहला चरण - 10 फरवरी

दूसरा चरण - 14 फरवरी

तीसरा चरण - 20 फरवरी

चौथा चरण - 23 फरवरी

पांचवा चरण - 27 फरवरी

छठा चरण - 03 मार्च

सातवां चरण - 07 मार्च

■ ■

क्षणिकाएँ

सुधा झालानी
नासिक

1 . सबेरा

ये जो मन के दरवाजे
बन्द कर रखे हैं
खोल दो इन्हें,
आने दो मुझे अन्दर
फैलाने दो उजेरा
जान जाओगे, तभी जानोगे
क्या होता है सबेरा।

2. खुशियाँ

उस पीपल के पेड़ के नीचे खड़ी हो
ढूँढ रही हो जीवन को,
हँसते हुए बच्चे के चेहरे पर
जीवन्त मिला मुझको,
क्यूँ ढूँढते फिरते हैं
खुशियाँ जग भर में
झाँक के तो देखा होता
कितनी है दिल के हर कोने में।

3. मधुवन

हर पत्ता मुझसे कहता है
मत उदास हो,
पुष्प फिर खिल जाएंगे
जीवन की सांसों पर
नयी सरगम गाएंगे,
हर साँस-साँस पर
प्रेम भरा पथ होगा
जीवन फिर
महकेगा
और
मधुवन-सा होगा।

4. अहसास

रोज जब झरते हैं
हरसिंगार के फूल
कितना कुछ कह जाते हैं,
कुछ कहने के बाद भी
कितना कुछ
बाकी रह जाता है,
शब्दों का दायरा
बहुत बड़ा है
अक्षरों के लिबास
छोटे पड़ जाते हैं।
वैसे भी एहसासों
के लफ्ज़ नहीं होते,
महसूस किये जाते हैं
जीए जाते हैं।

■ ■

अरब देश और भारत - कल आज और कल

जब एक आम भारतीय अरब देशो के बारे मे सोचता है तो उनके दिमाग़ मे दो शब्द आते है - conflict (विवाद) और पेट्रोल (तेल).

लेकिन जब हम इनमे से कुछ प्रमुख देशो के बारे मे अलग से सोचते है तो हमारे विचार बदल जाते है, सऊदी अरब को हम धर्म से रिलेट करते है, जो की इस्लाम का प्रमुख्या केंद्र है और संयुक्त अरब अमीरात कहते ही हमारे दिमाग़ मे दुबई, ऊँची ऊँची इमारते, टेक्नोलॉजी तथा इकोनॉमिक ग्रोथ प्रमुखता से आते है

भारत और अरब देशो का सम्बन्ध बहुत पुराना है और हम दोनों ने एक दूसरे से काफी चीजों को सीखा है -

अरबो ने भारतीयो से गणित, शतरंज, आयुर्वेद की चिकित्सा पद्धति, संख्याओं की गणना करना, हिंदी शब्द से अरबी शब्द बनाना सीखा तो वहीँ भारतीयों ने अरबों से - कागज बनाना, चरखे से सूत कैसे काटे, समोसे बनाना सीखा

सऊदी अरब के साथ भारत के राजनयिक संबंधों की शुरुआत भारतीय स्वतंत्रता के तुरंत बाद हुई। इन संबंधों को मज़बूत करने के लिये तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू एवं इंदिरा गांधी ने सऊदी अरब की यात्रा की लेकिन सऊदी शासन का झुकाव पाकिस्तान की ओर होने तथा कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान

राकेश प्रताप सिंह
गाजियाबाद, उ.प्र.

के पक्ष का समर्थन करने आदि के कारण भारत-सऊदी संबंध सदैव एक क्रेता-विक्रेता से आगे नहीं बढ़ सके। तत्कालीन बाजपेयी सरकार तथा सऊदी अरब के किंग अब्दुल्ला ने दोनों देशों के मध्य उपजे मतभेदों को दूर करने का प्रयास किया तथा किंग अब्दुल्ला की भारत यात्रा को द्विपक्षीय संबंधों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना गया।

भारत अपनी ऊर्जा ज़रूरतों का 70 प्रतिशत से ज्यादा आयात करता है। साथ ही भविष्य में आर्थिक विकास के साथ-साथ भारत की ऊर्जा आवश्यकता भी लगातार बढ़ने वाली है। यह स्थिति तब तक बनी रहेगी जब तक कि नवीकरणीय ऊर्जा भारत की ऊर्जा आवश्यकता में प्रमुख भागीदारी नहीं निभाती। हम जानते कि पश्चिम एशिया पेट्रोलियम उत्पादों की दृष्टि से धनी हैं। साथ ही इसकी भौगोलिक निकटता भारत को अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं को पूर्ण करने का एक व्यावहारिक विकल्प प्रदान करता है। भारत पिछले कुछ वर्षों से ईरान तथा इराक से सर्वाधिक तेल खरीदता रहा है लेकिन अस्थिर इराक एवं कूटनीतिक एवं आर्थिक प्रतिबंधों को झेल रहा ईरान भारत के लिये समस्या पैदा कर रहे हैं। ऐसे में दक्षिण-पश्चिम एशिया में स्थित सऊदी अरब भारत के लिये एक बेहतर विकल्प उपलब्ध करता है। यह न सिर्फ तेल की दृष्टि से बल्कि भारतीय कामगारों की दृष्टि से भी पश्चिम एशिया में महत्त्व रखता है। संयुक्त अरब अमीरात के साथ-साथ सऊदी अरब में भी भारतीय डायस्पोरा बड़ी संख्या में विद्यमान है। सिर्फ सऊदी अरब में ही यह संख्या 2.8 मिलियन है। भारत विश्व में सर्वाधिक रेमिटेंस प्राप्त करने वाला देश है, इसमें प्रमुख भूमिका पश्चिम एशिया में रह रहे भारतीयों की है। इस दृष्टि से भारत न सिर्फ सऊदी अरब बल्कि संपूर्ण पश्चिम एशिया के देशों के साथ अपने संबंध बेहतर करना चाहता है बल्कि इस क्षेत्र की शांति की भी कामना करता है।

खाड़ी के देश आज सुरक्षा एवं निवेश की दृष्टि से विकल्प के तौर पर एक अच्छे मित्र की तलाश कर रहे हैं क्योंकि ऐसा आभास हो रहा है कि अमेरिका, उसकी अपनी नीतियों के चलते, अब खाड़ी के देशों, विशेष रूप से सऊदी अरब, के लिए विश्वास करने योग्य एक अच्छा सहयोगी नहीं रह गया है तथा भारत की ऊर्जा निर्भरता भी बड़ी हद तक खाड़ी के देशों पर ही है।

इस वजह से भारत के खाड़ी देशों के साथ संबंध वर्ष 2014 से लगातार मज़बूत होते चले आए हैं। पिछले क़रीब साढ़े सात वर्षों में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खाड़ी के देशों की 7 से ज्यादा बार यात्रा की है। इन यात्राओं के सकारात्मक नतीजे भी देश को मिलने शुरू हो गए हैं। सऊदी अरब एवं संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों ने भारत को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना पूरा सहयोग दिया है। फिर चाहे वह, पाकिस्तान से सम्बंधित कोई मुद्दा रहा हो अथवा कश्मीर का। सऊदी अरब के बादशाह मोहम्मद बिन सलमान ने तो भारत के प्रधानमंत्री मोदी को हाल ही में सऊदी अरब के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'किंग अब्दुल्ला अज़ीज़ साश' से सम्मानित किया है। इसके पहले संयुक्त अरब अमीरात भी मोदी को अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'ज़ायद मेडल' से सम्मानित कर चुका है।

भारत - सऊदी अरब तथा संयुक्त अरब अमीरात के मज़बूत हो रहे रिश्तों की दुनिया मे विशेष रूप से चर्चा हो रही है इन दोनों देशों और भारत को दरअसल एक दूसरे की बेहद ज़रूरत है। जहाँ सऊदी अरब ने भारत में लगातार बढ़ रही आर्थिक संभावनाओं पर ध्यान देते हुए रेफ़ायनिंग, पेट्रोकेमिकल, इन्फ्रास्ट्रक्चर, मिनरल्ज़, माइनिंग एवं कृषि समेत कई क्षेत्रों में 10,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर के

निवेश किए जाने की योजना बनाई है। इसके अतिरिक्त दोनों देशों के बीच ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग निरंतर बढ़ रहा है।

वहीँ सयुक्त अरब अमीरात कश्मीर मे निवेश करने वाला दुनिया का पहला देश है, वह भारत सरकार के साथ मिल के कश्मीर मे मॉल और गगन चुम्बी इमारते बनाना चाहता है और इसपे काम भी प्रारम्भ हो चूका है

अब दोनों देशों के बीच रिश्तों के नये आयाम देखने को मिल रहे हैं। तेज़ी से बदलती क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियां भारत - सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात के संबंधों को घनिष्ठ बनाने में मदद कर रही हैं। इस सबके बीच पहले सऊदी प्रिंस का भारत दौरा और फिर भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सऊदी अरब दौरा, दोनों देशों के रिश्तों के लिए नई संभावनाओं को जगह दी है।

भारत और सऊदी अरब कुछ वर्षों पूर्व तक केवल क्रेता और विक्रेता की भूमिका में दिखाई देते रहे हैं लेकिन अब देखा जा रहा है कि इससे ऊपर उठकर दोनों देश सामरिक भागीदारी की ओर आगे बढ़ रहे हैं। दोनों देशों के बीच व्यापारिक रिश्ते तो पहले से ही हैं लेकिन इतने उच्च स्तर पर ये रिश्ते अभी हाल ही में विकसित हुए हैं। अब तो यह संबंध नई दिशा की ओर जा रहे हैं और गहरे हो रहे हैं।

सऊदी अरब इस्लामिक विश्व का एक अगुआ देश है। उस हिसाब से धारा 370 के मुद्दे पर सऊदी अरब का भारत को समर्थन भी महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। पिछले 75 वर्षों से इस क्षेत्र से भारत के रिश्ते मूलतः तेल के आयात और भारतीय मूल के लोगों का वहाँ होना, इन दो चीज़ों पर आधारित थे। अब दोनों देशों के बीच रिश्तों के लिहाज़ से विविधता आ रही है। भारत का वैश्विक क़द बहुत बढ़ रहा है अतः सऊदी अरब भारत से अपने रिश्तों में विविधता लाना चाह रहा है। आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध में भी दोनों देश भागीदारी करना चाह रहे हैं। आर्थिक क्षेत्र में भी दोनों देश विविधता लाना चाह रहे हैं। सऊदी अरब के लिए भारत एक बहुत बड़ा बाज़ार है एवं निवेश के लिए एक बहुत बड़ा गंतव्य है। सऊदी अरब ने भारत को पहचान लिया है कि भारत एशिया का पावर हाउस बनने की ओर अग्रसर है। अतः दोनों देशों को एक दूसरे की ज़रूरत है। सऊदी अरब में दिनांक 29 अक्तूबर 2019 को आयोजित भविष्य निवेश पहल (एफआईआई), जिसे मरुस्थल का डावोस भी कहा जाता है, को भारत के प्रधानमंत्री ने मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित किया, साफ है कि भारत को लगातार महत्व मिल रहा है।

भारत और सऊदी अरब मिलकर अफगानिस्तान में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं जिससे इस क्षेत्र में स्थिरता आएगी। पाकिस्तान को भी दृढ़ संकेत गया है कि सऊदी अरब उनके सहयोग में एक हद तक ही आगे आएगा। सऊदी अरब के लिए अब भारत एक प्राथमिकता है। दोनों देशों के रिश्ते अमरीका से भी बहुत अच्छे हैं। दोनों देशों के बीच सामरिक साझेदारी काउन्सिल भी बनाई जा रही है। यह काउन्सिल भारत के प्रधानमंत्री एवं सऊदी अरब के किंग की अध्यक्षता में बनाई जा रही है। यह दोनों देशों के बीच रिश्तों को और मज़बूत करने की ओर एक महत्वपूर्ण क़दम है।

सऊदी अरब के साथ ही संयुक्त अरब अमीरात, ओमान, बहरीन आदि देशों के साथ भी भारत ने इस दौरान परस्पर समझदारी से सुरक्षा सहयोग, सैन्य शक्ति को मज़बूत करने व समुद्री सुरक्षा सहयोग जैसे मसलों पर कई समझौते किए हैं। इन रिश्तों की पृष्ठभूमि में सैन्य शक्ति को मज़बूत करने के लिए कई समितियाँ बनाई गई हैं एवं परस्पर सैन्य अभ्यास करने के निर्णय भी लिए गए हैं।

विदित है कि भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं हेतु आयात पर निर्भर है तथा सऊदी अरब भी अपने तेल निर्यात के लिये भारत को एक बाज़ार के रूप में देख रहा है। वर्तमान में भारत-सऊदी संबंध तेल व्यापार से आगे बढ़ रहे हैं तथा दोनों देश आर्थिक और रणनीतिक स्तर पर भी करीब आए हैं। यह समय की मांग है कि दोनों देशों के बीच एक मज़बूत साझेदारी हो जिससे दोनों देश अपने साझा हितों की पूर्ति कर सकें। पाकिस्तान दोनों देशों के मध्य एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा रहा है लेकिन वर्तमान नीतियाँ इस ओर इशारा करती हैं कि सऊदी अरब भारत के संबंध में पाकिस्तान से आगे की सोच रहा है। भारत-सऊदी अरब यह महसूस कर रहे हैं कि यदि दोनों देश मिलकर अपनी पूर्ण क्षमता के साथ साझीदारी करें तो यह दोनों देशों के लिये समान रूप से लाभकारी होगा। इससे न सिर्फ भूमि पर बल्कि अरब सागर में भी स्थिरता प्रदान की जा सकेगी। ■■

प्रेम दिवस को जन्मी
वीनस ऑफ इंडियन सिनेमा 'मधुबाला' की कहानी

तेरी जुल्फें , तेरी आंखें , तेरी अब्रू , तेरे लब
अब भी मशहूर हैं दुनिया में मिसालों की तरह

तस्वीरों में मुस्कुराती और असल ज़िंदगी में रोती 'प्रेम दिवस' को जन्मी 'वीनस ऑफ इंडियन सिनेमा' मधुबाला का ज़िक्र आते ही आंखों के सामने उस अनुपम सुंदरी और अनूठी अदाकारा का हसीन - जहीन चेहरा घूम जाता है , जिसमें नरगिस की शोख़ी, गीता बाली का अल्हड़पन, नूतन की नमकीनियत , मीना कुमारी की नजाकत , सुरैया की नफासत , साधना की मासूमियत , वहीदा की सादगी और वैजयंती माला की थिरकन सब का अस्तित्व था ।

सन 1933 के वैलेंटाइन दिन यानी 14 फरवरी को ऊपर वाले ने अपनी खूबसूरत रचना के रूप में एक बच्ची को दिल्ली में रहने वाले पेशावर घाटी के यूसुफजई पठान अत्ताउल्लाह खान और आयशा बेगम के घर भेजा। दिल में छेद होने के वजह से बच्ची का सारा बदन नीलकमल की तरह नीला था। यह ब्लू बेबी बहुत बीमार थी ,पर उसने अस्पताल में ही मौत को हरा दिया । अपने 11 भाई बहनों में पांचवें नंबर पर जन्मी इस बच्ची का पूरा नाम था 'बेगम मुमताज जेहान देहलवी'। ऐसा कहा जाता है एक कश्मीरी फकीर ने भविष्यवाणी की ..'इस बच्ची के माथे पर नूर है । यह बहुत कामयाब होगी और शोहरत कमाएगी पर इसकी मौत जवा होगी '।

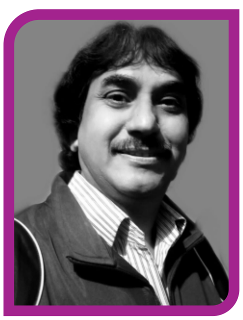

ब्रजेश श्रीवास्तव 'मुन्ना'
पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर
चन्दौली

बेबी मुमताज को बचपन से ही फिल्में देखने का बहुत शौक था । वह अपनी मां के सामने नृत्य और फिल्मी किरदारों की नकल बखूबी करती थी । परिवार के रूढ़िवादी ख्यालों के कारण बेबी मुमताज को स्कूली शिक्षा नहीं दी गई , फिर भी घर पर रहकर ही उर्दू , हिंदी और अपनी मूल भाषा पश्तो पढ़ना - लिखना सीख लिया।

एक दिन किसी काम से अत्ताउल्लाह खान मुंबई आए तो बेबी मुमताज़ भी साथ आई । 6 साल की मुमताज पिता के साथ पुराना 'सागर स्टूडियो' देखने गई । स्टूडियो का रंग-बिरंगा वातावरण नन्ही आंखों का आकर्षण बन गया । वापस दिल्ली आकर बेबी मुमताज ने नृत्य और संगीत को आत्मसात करने का मन बनाया । बात 1940 की है, पिता की नौकरी छूट गई तो घर चलाने के लिए बेबी मुमताज को दिल्ली के ऑल इंडिया रेडियो स्टेशन पर संगीतकार खुर्शीद अनवर की रचनाएं गाने का काम मिल गया । यहीं पर बॉम्बे टॉकीज के महाप्रबंधक रायबहादुर चुन्नीलाल से मुलाकात हुई और चुन्नीलाल ने बेबी मुमताज की विलक्षण प्रतिभा को देखकर उसे मुंबई आने का सुझाव दिया। इस वक्त फिल्म प्रोडक्शन कंपनी 'बॉम्बे टॉकीज ' में 'बसंत' फिल्म बनाने की तैयारी चल रही थी। अत्ताउल्लाह खान की नौकरी छुट्टी हुई थी । अपनी चांद सी बिटिया से उन्हें उम्मीद जगी । बेहतर जिंदगी की तलाश और कश्मीरी फकीर की बात याद करके अत्ताउल्लाह खान सपरिवार मुंबई आ गए। बॉम्बे टॉकीज की फिल्म 'बसंत' जिसमें अभिनेता उल्लास और मुमताज शांति काम कर रहे थे , के लिए एक छोटी सी लड़की की तलाश थी । चुन्नीलाल ने बेबी मुमताज को बॉम्बे टॉकीज की मालकिन देविका रानी से मिलवाया । इस तरह 1942 में बेबी मुमताज को 150 रुपये महीने पर एक बाल कलाकार के रूप में बॉम्बे टॉकीज की फिल्म 'बसंत' में काम करने का मौका मिल गया । बेबी मुमताज ने इस फिल्म में ऐसी बच्ची का रोल किया जो अपने माता पिता को करीब लाने की कोशिश करती है । बेबी मुमताज के स्वर में गाना ....'मेरे छोटे से मन में छोटी सी दुनिया....' उन दिनों खासा लोकप्रिय हुआ । उस समय की प्रसिद्ध अभिनेत्री और बॉम्बे टॉकीज की मालकिन ' देविका रानी 'बसंत' फिल्म में बेबी मुमताज का अभिनय और उसकी मोहक मुस्कान देख कर फिदा हो गई और बोली...'आज से तुम्हारा नाम मधुबाला होगा'। यह नाम इंदौर के प्रसिद्ध कवि हरिकृष्ण प्रेम ने दिया था । इस तरह बेबी मुमताज का स्क्रीन नेम 'मधुबाला' हो गया । देविका रानी ने बेबी मुमताज को अपने बैनर बॉम्बे टॉकीज की फिल्म 'ज्वार भाटा' जो दिलीप कुमार की पहली फिल्म थी, में काम करने की पेशकश की , पर किसी कारण से यह फिल्म हाथ से छूट गई । अत्ताउल्लाह खान और उनका पूरा परिवार बेबी मुमताज की कमाई पर ही आश्रित था । परिवार का पेट पालने के लिए वे अपनी बेटी मुमताज को लेकर स्टूडियो का चक्कर मारने लगे। मेहनत रंग लाई और 300 रुपये महीने पर 'रंजीत स्टूडियो' में काम मिल गया । बेबी मुमताज ने 1942 से 1947 के बीच कई फिल्मों की और बाल कलाकार के रूप में अपना अभिनय कौशल प्रस्तुत किया । फिल्म 'धन्ना भगत' और 'पुजारी' में गाना भी गाया ।

बेबी मुमताज को कार चलाने का बहुत शौक था, इसीलिए केवल 12 साल की उम्र में उन्होंने कार चलाना सीख लिया। इंग्लिश भी सीखा।

दिलचस्प बात यह है कि बेबी मुमताज की दोस्ती उस दौर की दूसरी प्रसिद्ध बाल कलाकार 'बेबी महजबी' से हो गई । बेबी महजबी कोई और नहीं बल्कि 'मीना कुमारी' ही थी ।

बेबी मुमताज को हीरोइन बनने का पहला मौका 1947 में केदार शर्मा ने अपनी फिल्म 'नीलकमल ' में दिया । महज 14 साल की कमसिन मुमताज ने इस फ़िल्म में नीली आंखों वाले भोले - भाले 'राजकपूर' के साथ रोमांटिक रोल किया । एक अभिनेता के रूप में राजकपूर की यह पहली फिल्म थी । फिल्म सुपरहिट हो गई और बेबी मुमताज को एक अभिनेत्री के रूप में पहचान मिली । बतौर अभिनेत्री उनका सिने करियर शुरू हो गया। अब वे हिंदी फिल्म जगत में 'मधुबाला' के नाम से प्रसिद्ध हो गई । उनकी लोकप्रियता आसमान छूने लगी । फिल्म स्क्रीन पर मधुबाला की बेइंतहा खूबसूरती को देखकर उनको 'इंडियन सिनेमा की सौंदर्य देवी' कहा जाने लगा ।

1947 से 1949 के बीच मधुबाला कई फिल्मों में नायिका बनकर आई ।

फिल्म 'पराई आग' की शूटिंग के समय मशहूर लेखक 'कमाल अमरोही' ने मधुबाला की अद्भुत खूबसूरती को पहली बार देखा और देखते ही उनके मन में नई

कहानी ने जन्म लिया । बॉम्बे टॉकीज के बैनर तले 1949 में बनने वाली फिल्म 'महल' जिसमें उस वक्त के कामयाब अभिनेता 'अशोक कुमार' नायक थे , के लिए कमाल अमरोही ने मधुबाला को फ़िल्म की नायिका के रूप में साइन किया। इस फिल्म में वे एक माली की खूबसूरत बेटी के रूप में आई जो प्रेत आत्मा बनकर नायक अशोक कुमार को डराती है । रहस्य - रोमांच और कर्णप्रिय संगीत से सजी यह फिल्म सुपर हिट हो गई । मधुबाला पर फिल्माया गया गीत... 'आएगा आने वाला'... ने मधुबाला और इस गीत की गायिका लता मंगेशकर दोनों को बुलंदियों पर पहुंचा दिया । इस फिल्म से हिंदी फिल्म इंडस्ट्री को नायाब नायिका और नायाब गायिका दोनों मिली। 'स्वर कोकिला और विश्वरत्न लता जी अब हमारे बीच नहीं है।'

इस फिल्म से फिल्म इंडस्ट्री में मधुबाला को एक नई पहचान मिली । उनके कैरियर में स्टारडम की चमक आ गई । इसके बाद मधुबाला ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। एक के बाद एक आने वाली फिल्मों में मधुबाला अपना जलवा बिखेरते हुए सफलता और शोहरत की सीढ़ियां चढ़ती चली गई।

1957 के बाद का दौर मधुबाला के जिंदगी में 'गोल्डन पीरियड' लेकर आया । गुरुदत्त की फिल्म 'मिस्टर एंड मिसेज 55' में मधुबाला ने जब पर्दे पर गाया....' ठंडी हवा काली घटा आ ही गई झूम के...' तो भारतीय दर्शक एक मीठी बयार के नशे में होश खो बैठे। फिल्म 'फागुन' में भारत भूषण के साथ जब मधुबाला थिरकी...'एक परदेसी मेरा दिल ले गया...' तो थिएटर के दर्शक झूम उठे। अशोक कुमार के साथ क्राइम फिल्म 'हावड़ा ब्रिज' में एंग्लो इंडियन क्लब डांसर की भूमिका की जिसमें मधुबाला की बेहतरीन अदायगी के साथ फिल्माया गया गाना...'आइए मेहरबान...' आज भी मशहूर है।

फिल्म 'काला पानी' में मधुबाला ने अपनी भोली - भाली अदाओं के साथ देवानंद को रिझाया ...' अच्छा जी मैं हारी चलो मान जाओ ना... ' तो वे अभिनय के सारे किले फतह करती प्रतीत हुई । अशोक कुमार , किशोर कुमार और उनके छोटे भाई अनूप कुमार के साथ कॉमेडी फिल्म 'चलती का नाम गाड़ी' में अपने शानदार अभिनय से दर्शकों को हंसाते-हंसाते लोटपोट कर दिया। इसी फिल्म में किशोर कुमार ने गाया ...'एक लड़की भीगी भागी सी ' तब इस नटखट - अल्हड़ गीत के साथ मधुबाला का अंग - प्रत्यंग मुस्कुराता नजर आया ।

उज्जवल चमकीले पूर्णिमा के संपूर्ण चाँद के रूप में तराशी हुई चंदन की मूर्ति सी, आकर्षक देहयष्टि ,अनुपम सुंदरता और अनूठी अदाओं की मल्लिका मधुबाला के साथ जिन फिल्मी अभिनेताओं ने अभिनय किया वे जीवन भर उनके सम्मोहन से बाहर नहीं आ सके । मधुबाला का रेशमी व्यक्तित्व ऐसा था कि हर हीरो के साथ अभिनय का ताना-बाना ऐसा बुन जाता था कि उसे अलग करना मुश्किल हो जाता ।

मधुबाला ने अपने फिल्मी कैरियर के आरंभ में जिन अभिनेताओं के साथ काम किया उनमें उल्लास,महिपाल,मोतीलाल ,करण दीवान,अजीत और गुरुदत्त के नाम प्रमुख है। मधुबाला ने ट्रेजडी किंग दिलीप कुमार के साथ फ़िल्म तराना,संगदिल,अमर और मुग़ल-ए-आज़म में शानदार जोड़ी बनाई साथ ही साथ दिलीप कुमार के साथ फिल्मी दुनिया की सबसे रोमांटिक लेकिन अधूरी प्रेमकहानी को भी जन्म दिया। सदाबहार और नटखट देवानंद के साथ मधुबाला की शरारतों ने दर्शकों का भरपूर प्यार पाया। फ़िल्म मधुबाला,निराला,हराम,नादान,अरमान, काला पानी,जाली नोट और शराबी में इस जोड़ी ने चंचलता और रोमांटिक गानों से उस समय के युवाओं पर जबरदस्त असर छोड़ा ।

फिल्म बादल से अभिनेता प्रेमनाथ मधुबाला की जिंदगी में आए और उनका पहला प्यार बनकर फिल्म साकी से लौट गए। अभिनेता प्रदीप कुमार के साथ राजहठ,शीरी फरहाद,यहूदी की लड़की,पुलिस,महलों के ख्वाब और पासपोर्ट फिल्में आई ।

भारत भूषण के साथ फ़िल्म गेटवे ऑफ इंडिया,फागुन,कल हमारा है और बरसात की रात में मधुबाला अत्यंत आकर्षक लगी।अभिनेता नासिर खान और शम्मी कपूर के साथ क्रमश खजाना,नाजनीन और रेल का डिब्बा,नकाब और बॉयफ्रेंड में मधुबाला पूरी शोख़ी और शान के साथ रुपहले पर्दे पर नजर आई ।

अपने जीवन के अंतिम दिनों में मस्ती और हंसी के खजाने किशोर कुमार के साथ फिल्म ढाके की मलमल,चलती का नाम गाड़ी,झुमरू और हाफ टिकट में

दर्शकों को खूब ठहाके लगवाये । मधुबाला ने जिस चंचल - चपल गरिमा का परिचय दिया वह अनुकरणीय है ।

सुनील दत्त के साथ इंसान जाग उठा और अपने जीवन की अंतिम फिल्म ज्वाला की । मधुबाला की अंतिम फिल्म 'ज्वाला' (जो मधुबाला के निधन के बाद रिलीज हुई थी) को मिलाकर मधुबाला ने अपनी 36 साल की छोटी सी जिंदगी में 70 से अधिक फिल्में की। 1964 में देव आनंद के साथ आई फिल्म 'शराबी' मधुबाला की मृत्यु के ठीक 5 साल पहले यानी मधुबाला के जीवनकाल में ही रिलीज होने वाली अंतिम फिल्म थी।

मधुबाला ने 1953 में अपना प्रोडक्शन हाउस भी बनाया जिसका नाम था - 'मधुबाला प्राइवेट लिमिटेड'। मधुबाला ने दो फिल्में का निर्माण किया और उसमें अभिनय भी किया - नाता और महलों के ख्वाब ।

मधुबाला के मनमोहक सौंदर्य ने भारतीय दर्शकों के साथ-साथ फिल्म इंडस्ट्री के तमाम एक्टरों, डायरेक्टरो , प्रोड्यूसरो, सिंगरों की भी मीठी नींद चुरा कर उन्हें मधुर सपनों की सौगातें दी । मधुबाला को लोग 'नेचर ब्यूटी' कहते थे । उन्हें खूबसूरत दिखने के लिए किसी मेकअप की जरूरत नहीं पड़ती । शूटिंग के लिए वे बहुत हल्का मेकअप करती। मधुबाला को उनकी सुंदरता के कारण ही 'बॉलीवुड की मर्लिन मुनरो' कहा जाने लगा । मधुबाला की खूबसूरती के चर्चे दुनिया भर में होने लगे । अमेरिकी लाइफ़ पत्रिका जैसी कई विदेशी पत्रिकाओं ने उनकी खूबसूरत तस्वीरों को दिखाया ।हॉलीवुड के कई फिल्मकारों ने कोशिश की कि मधुबाला हॉलीवुड चले और उनकी फिल्मों में अभिनय करें । ऑस्कर अवार्ड विजेता महान निर्देशक 'फ्रैंक कैपरा' मधुबाला को हॉलीवुड ले जाना चाहते थे लेकिन मधुबाला के पिताजी ने इजाजत नहीं थी ।

मधुबाला का पहला प्यार

वैलेंटाइन डे की दिन जन्मी बेहद रोमांटिक मधुबाला ने भारतीय सिनेमा में जब कदम रखा तभी से उनकी खूबसूरती के चर्चे होने शुरू हो गए थे । बॉलीवुड के कई एक्टर और डायरेक्टर मधुबाला की खूबसूरती के दीवाने थे, लेकिन मधुबाला का दिल पहली बार उस दौर के बेहतरीन अभिनेता और बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रेमनाथ के लिए धड़का। दोनों ने एक साथ चार फिल्मों में काम किया लेकिन 1951 में आई फिल्म ' बादल ' की शूटिंग के दौरान दोनों एक दूसरे को दिल दे बैठे ।

प्रेमनाथ मधुबाला के प्यार में इस कदर डूब चुके थे कि वे मधुबाला से शादी करना चाहते थे, लेकिन धर्म की दीवार बीच में आ गई। इसी बीच प्रेमनाथ के परम मित्र शर्मीले मुस्कान वाले दिलीप कुमार मधुबाला और प्रेमनाथ के बीच में आ गए और इस प्रेम को ग्रहण लग गया । मधुबाला - प्रेमनाथ का रिश्ता केवल 6 महीने चला । प्रेमनाथ अच्छी तरह से जान गए कि मधुबाला अब उनकी नहीं रही , मगर वे अपने दिल से मधुबाला के प्यार को जिंदगी भर नहीं निकाल पाए। प्रेमनाथ जब मधुबाला के वियोग में बहुत शराब पीने लगे तब एक दिन मधुबाला आई और कहा....'प्रेम आज के बाद यदि तुम ने शराब पी तो मेरा खून पियोगे...'। फिर प्रेमनाथ ने 14 सालों तक शराब को हाथ नहीं लगाया ।

9 साल तक दिलीप कुमार से रूमानी रिश्ता

मात्र 11 साल की कमसिन मधुबाला पहली बार दिलीप कुमार से 1944 में फ़िल्म 'ज्वार भाटा' के सेट पर मिली । मधुबाला को दिलीप कुमार की शर्मीली मुस्कान आकर्षित लगी और दिलीप कुमार को कमसिन मधुबाला का अनुपम सौंदर्य। कुछ सालों के अंतराल के बाद 1951 फिल्म 'तराना' में दोनों ने पहली बार साथ-साथ काम किया। शूटिंग के दौरान दोनों एक दूसरे के पास आए , दोनों की नजरें मिली और इश्क का एहसास होने लगा। शर्मीले दिलीप कुमार अपने इश्क का इजहार करने में हिचकिचा रहे थे, इसलिए इस प्रेम कहानी में पहल खुद मधुबाला ने किया , वह भी बेहद खास अंदाज में । मधुबाला ने अपने मेकअप आर्टिस्ट 'मेरी' को दिलीप कुमार के पास एक लाल गुलाब के साथ उर्दू में लिखा हुआ एक पत्र देकर भेजा , जिसमें लिखा था ...'मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं। अगर आप मुझे चाहते हैं तो यह फूल कबूल कीजिए...वरना वापस कर दीजिए'। दिलीप कुमार ने मुस्कुराते हुए फूल कबूल किया और अपनी कोट में लगा कर हामी भर दी । दोनों की प्रेम कहानी शुरू हो गई। मधुबाला दिलीप कुमार से बेपनाह मोहब्बत करने लगी । उन्हें लगा कि अब उनकी जिंदगी खुशियों से भरने वाली है । मधुबाला बचपन से लेकर अब तक मिले जख्मों को भूलने लगी। वे तो यह भी सोचने लगी थी शायद उनकी बीमारी अब ठीक होने लगी है । दोनों

इश्क की गहराइयों में इतना डूब गए कि मधुबाला जहां भी शूटिंग करती थी , दिलीप कुमार वहां चले जाते थे । दोनों ने तराना,संगदिल,अमर और क्लासिक मूवी मुग़ल-ए-आज़म में साथ-साथ काम किया। प्रेम का यह रिश्ता सगाई तक पहुंच गया ।अंगूठियों की अदला बदली हुई और दोनों ने साथ-साथ ईद भी मनाई। पर किस्मत ने कुछ और ही सोच रखा था उनके लिए। वक्त ने ऐसा करवट बदला कि पूरी फिल्मी दुनिया में चर्चित यह प्रेम कहानी अधूरी रह गई।

मधुबाला जहां भी शूटिंग पर जाती थी ,उनके पिता अत्ताउल्लाह, मधुबाला के मैनेजर के रूप में साथ जाते थे और हर बात में दखल अंदाजी करते थे। दिलीप कुमार ने अपनी आत्मकथा ' वजूद और परछाई ' में लिखा है कि मधु और मेरी शादी के खिलाफ उनके पिता नहीं थे । उनकी अपनी प्रोडक्शन कंपनी थी । वह इस बात से बहुत खुश थे एक घर में दो बड़े स्टार मौजूद होंगे । वह तो चाहते थे कि दिलीप कुमार और मधु एक दूसरे के बाहों में बाहें डाल कर अपने अंतिम समय तक फिल्मों में गाते नजर आए।

लेकिन दिलीप कुमार का काम करने का अपना तरीका था । वह अपने हिसाब से प्रोजेक्ट चुनते थे और करते थे । दिलीप कुमार की यह बात मधुबाला के पिता को बुरी लगती थी। इस बात को लेकर दिलीप कुमार मधुबाला के पिता को ना-पसंद करने लगे । दिलीप कुमार मधुबाला से शादी करना चाहते थे। उन्होंने अपनी बड़ी बहन सकीना को शादी का पैगाम लेकर मधुबाला के घर भेजा और कहा ..'अगर मधुबाला के पिता तैयार हो तो सात दिन के अंदर मधुबाला से शादी करना चाहते हैं । लेकिन मधुबाला के पिता ने इस रिश्ते से साफ इनकार कर दिया । रिश्ते के धागे कमजोर होने लगे। 1956 में वह तूफान आया जिसने उस वक्त की सबसे रोमांटिक जोड़ी को हमेशा - हमेशा के लिए तोड़ दिया । फिल्म 'ढाके की मलमल' की शूटिंग के दौरान दिलीप कुमार ,मधुबाला के पास आए और कहा ...'घर पर काजी इंतजार कर रहे हैं... अपने पिता को छोड़कर चलो मेरे घर....आज शादी कर लेते हैं...'। इस तरह अचानक ये बातें सुनकर मधुबाला राजी नहीं हुई और रोने लगी। आदर्श बेटी मधुबाला अपने पिता से बेइंतहा प्यार करती थी और अपने पिता के आदेश के बिना कोई काम नही करती थी, क्योंकि वे आज जिस मुकाम पर थी, वह उन्हीं की ही बदौलत थी । आर्थिक रूप से कंगाल हो चुके अपने 13 सदस्यों के परिवार को भी अकेले ही पाल रही थी। घर परिवार की जिम्मेदारियों से इस तरह बंध गई थी कि उन्होंने दिलीप कुमार के सवालों का कोई जवाब नहीं दिया । बस आंखों से आंसू गिरते रहे और वे खामोश रहीं । दिलीप कुमार ने कहा '...अगर तुम आज नहीं चली तो मैं तुम्हारे पास लौटकर नहीं आऊंगा ...कभी नहीं आऊंगा....' , और दिलीप कुमार मधुबाला की जिंदगी से चले गए... हमेशा के लिए...।

लेकिन ये दोनों अभी कुछ फिल्मों में साथ-साथ काम कर रहे थे। के.आसिफ की मुग़ल-ए-आज़म अभी पूरी नहीं हुई थी और बी. आर. चोपड़ा की फ़िल्म नया दौर की आउटडोर शूटिंग का वक्त आ गया था।

फिल्म 'नया दौर' के निर्माता बी.आर.चोपड़ा ने चालीस दिन की शूटिंग ग्वालियर में करने का फैसला किया। ग्वालियर उन दिनों डकैतों का इलाका था और वहां एक फिल्म की शूटिंग के दौरान कुछ हंगामा भी हो गया था । मधुबाला के पिता ने लोकेशन बदलने को कहा । बस फिर क्या था , नया दौर में मधुबाला की जगह वैजयंती माला को कास्ट कर लिया गया ,और अखबार में मधुबाला की तस्वीर पर क्रास लगाकर फिल्म का पोस्टर छापा गया । इस तरह की बेज्जती मधुबाला और उनके पिता को बहुत बुरी लगी । मधुबाला के पिता ने 'नया दौर' की शूटिंग रोकने के लिए कोर्ट में केस कर दिया । कोर्ट में गवाही देने के लिए दिलीप कुमार को भी बुलाया गया । कोर्ट ने दिलीप कुमार से पूछा ...'क्या वे मधुबाला से प्यार करते हैं... ? दिलीप कुमार ने साफ-साफ कहा... 'मैं मधु से प्यार करता हूं और हमेशा करता रहूंगा...। लेकिन दिलीप कुमार ने कोर्ट में बी.आर. चोपड़ा का ही पक्ष लिया । यह बात मधुबाला को अपने प्यार की बेईज्जती लगी।

दिलीप कुमार की मोहब्बत मधुबाला थी , चाहत मधुबाला थी, फिर उन्होंने ऐसा क्यों किया ? क्यों उन्होंने अपने प्यार का पक्ष नहीं लिया ? क्यों नया दौर के पोस्टर पर अपनी मोहब्बत के चेहरे पर क्रॉस लगने दिया ?

वे आराम से बोल सकते थे लोकेशन बदल दो .....।

मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया।

मधुबाला का बीमार दिल बुरी तरह टूट गया। फिर कई दिनों तक रोती रही।

दिलीप कुमार से बेहद खफा होते हुए भी मधुबाला ने आपसी गलतफहमी दूर करने की पूरी कोशिश की । उन्होंने दिलीप कुमार से कहा कि ...'एक बार वे उनके पिता को 'सॉरी' बोल दे और गले लगा लें...बंद कमरे में ही सही,तो सारे गिले - शिकवे दूर हो जाएंगे और हम शादी कर लेंगे । परदिलीप कुमार 'सॉरी' नहीं बोल पाए और दोनों की प्रेम कहानी में कभी न मिटने वाली दूरी पैदा हो गई ।

हालांकि दोनों पहले से चल रही फिल्म 'मुग़ल-ए-आज़म'में एक साथ शूटिंग करते रहे लेकिन साथ रहते हुए भी दोनों एक दूसरे से बिल्कुल अजनबी बन गए।

मुगल-ए-आजम में विशेष अभिनय

दस सालों में बनी के. आसिफ की क्लासिक मूवी 'मुगल-ए-आजम' मधुबाला की जिंदगी की सबसे बड़ी फिल्म माना जाता है । फिल्म में 'अनारकली' बनी मधुबाला का अभिनय और कला के प्रति उनका समर्पण विशेष रूप से उल्लेखनीय है । दिल की बीमारी के कारण लगातार गिरते स्वास्थ्य के बावजूद वे इस फिल्म को पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्प थी । उनके परिश्रम और लगन के कारण फिल्म बनने में कोई रुकावट नहीं आई । फिल्म में वास्तविकता लाने के लिए फिल्म के निर्देशक के.आसिफ ने शूटिंग के लिए असली जंजीरों का इस्तेमाल किया । मधुबाला ने खराब स्वास्थ्य के बावजूद लोहे की भारी जंजीरों के साथ अभिनय किया । उनका हाथ छिल गया । इस समय पर वे शारीरिक कष्ट के साथ-साथ मानसिक कष्ट भी झेल रही थी। दिलीप कुमार से रिश्ता टूट जाने की वजह से वह अवसाद में थी। दस साल की कड़ी मेहनत के बाद जब 5 अगस्त 1960 को 'मुग़ल-ए-आज़म' रिलीज हुई तो मधुबाला की मेहनत और लगन साफ-साफ दिखाई पड़ी । यह फिल्म सबसे अधिक कमाई करने वाली फिल्म साबित हुई ।

इस फिल्म के बनने के साथ ही मधुबाला और दिलीप कुमार का प्यार परवान चढ़ा - बात सगाई तक बात पहुंची और और फिर फिल्म की कहानी की तरह ही फिल्म निर्माण के अंतिम दौर में मधुबाला और दिलीप कुमार का रूमानी रिश्ता भी हमेशा - हमेशा के लिए दफन हो गया गया ।

किशोर कुमार से विवाह

दिलीप कुमार से 'प्रेम रिश्ता' टूटने के बाद मधुबाला इस कदर बिखरी कि उनके दिल की बीमारी जो बचपन से ही थी और जिसे शुरू में फिल्म इंडस्ट्री से छुपाया गया था उसने टूटे दिल पर जोरदार हमला बोला। मधुबाला बीमार पड़ी और खून की उल्टियां करने लगी । मधुबाला ने अपने एक रिश्तेदार से कहा- 'भाभी मैं शादीशुदा मरना चाहती हूं । ऐसी विकट परिस्थिति में उन्हें शरारती और मस्तीखोर किशोर कुमार मिले जो उन दिनों अपनी बीबी रूमा देवी से तलाक होने के कारण अवसाद में थे।

मधुबाला और किशोर कुमार की पहली मुलाकात 1956 में बन रही फिल्म 'ढाके की मलमल'के समय हुई थी। दोनों ने साथ में 'चलती का नाम गाड़ी' और 'हाफ टिकट' जैसी फिल्मों में भी काम किया । टूटे और बीमार दिल को लिए मधुबाला , हंसमुख किशोर कुमार के साथ नए जीवन के सपने देखने लगी । दोनों में नजदीकियां बढ़ने लगी । 3 साल के अफेयर के बाद किशोर कुमार ने मधुबाला से शादी करने का प्रस्ताव रखा। इस समय भारत भूषण और प्रदीप कुमार की ओर से भी शादी के प्रस्ताव आए थे , लेकिन 27 साल की मधुबाला ने अपनी मर्जी से तलाकशुदा किशोर कुमार को चुना । इस बारे में किशोर कुमार की चौथी पत्नी लीना चंदवारकर ने कहा है ..'जब मधुबाला ने पाया कि दिलीप कुमार उससे शादी नहीं कर रहे हैं , तो यह साबित करने के लिए कि वह किसी को भी पसंद कर सकती हैं, उन्होंने किशोर कुमार से शादी करने का फैसला किया।'

मधुबाला के पिता ने किशोर कुमार से कहा कि मधुबाला इलाज के लिए लंदन जा रही है और वहां से लौटने के बाद ही उनसे शादी कर पाएगी, लेकिन मधुबाला को ऐसा एहसास हुआ कि लंदन में ऑपरेशन होने के बाद वे जिंदा नहीं रहेंगी ,और यह बात उन्होंने किशोर कुमार को बताई। इसके बाद मधुबाला की इच्छा पूरी करने के लिए 1960 में किशोर कुमार ने अपना धर्म बदल कर अपना नाम 'करीम अब्दुल्ला' रखा और कोर्ट मैरिज किया । उस दिन मधुबाला सफेद साड़ी में सजी 'संगमरमरी सुंदरी' लग रही थी।

शादी के बाद मधुबाला की तबीयत और ज्यादा खराब रहने लगी। वे अपने पति किशोर कुमार के साथ बीमारी का इलाज कराने लंदन गई ,जहां डॉक्टर ने ऑपरेशन के लिए मना कर दिया और बोल दिया...'मधुबाला अब ज्यादा से ज्यादा 2 साल तक ही जिंदा रह सकती है

'।

दोनों ने अभी-अभी अपनी शादीशुदा जिंदगी में कदम रखा ही था कि बड़ा झटका लग गया । लंदन से वापस आकर किशोर कुमार मधुबाला को उनके मायके ले गए । उन्होंने कहा कि.... मैं अक्सर काम के सिलसिले में बाहर रहता हूं ऐसे में चाह कर भी मधुबाला का अच्छे से ख्याल नहीं रख पाऊंगा । हालांकि मधुबाला किशोर कुमार के साथ रहना चाहती थी। किशोर कुमार ने मधुबाला के इलाज का खर्चा उठाया और हर एक-दो महीने में मिलने में मधुबाला से मिलने आने लगे। किशोर कुमार कहते थे... 'अगर मैं आऊंगा तो तुम रोओगी और यह तुम्हारे हार्ट के लिए अच्छा नहीं है । तुम डिप्रेशन में चली जाओगी। तुम्हें रेस्ट लेना चाहिए।

9 साल मौत से जंग

14 वर्ष की छोटी सी उम्र से स्टारडम की चकाचौंध रोशनी देखने वाली मधुबाला अब अकेलेपन के अंधेरे में रहने लगी मधुबाला और घुटने लगी। मधुबाला जिनसे दुनियाभर के लाखों करोड़ों फैंस प्यार करते थे अपने अंतिम दिनों में वह एकदम अकेली पड़ गई । पति के होने के बावजूद बीमार मधुबाला अकेली जिंदगी गुजारने लगी।

'वीनस ऑफ इंडियन सिनेमा' अब 'द ब्यूटी ऑफ ट्रेजेडी' बन के रह गई।

अपना अकेलापन गुजारने के लिए उर्दू की शायरियां पढ़ती।

फ़िल्म मुगल-ए-आजम का नग़मा.... 'प्यार किया तो डरना क्या ' मधुबाला को इतना पसंद था कि अपना अकेलापन दूर करने के लिए वे इस गाने को कम से कम 500 बार देखा ।

दिन पर दिन उनकी हालत खराब होती जा रही थी । शरीर में खून अधिक बनने से उनके नाक और मुंह से खून की उल्टियां होने लगी । फेफड़ों में भी संक्रमण हो गया । हमेशा कफ़ बना रहता । सांस लेने के लिए ऑक्सीजन सिलेंडर भी लगाने पड़ते थे।

अपनी लाइलाज बीमारी से मधुबाला बिल्कुल टूट गई थी ।

वो आंखें जिनके सपने सारा हिंदुस्तान देखा करता था, अब हर गुजरते दिन के साथ अपनी मौत का इंतजार करने लगी। होठों से गुलाब जैसी हंसी गायब होने लगी । जिस्म सिर्फ हड्डियों का ढांचा बनकर रह गया। वह आईने में खुद को देख कर कहा करते हैं देखो मैं क्या से क्या हो गई ।

फिर भी मधुबाला ने हिम्मत नहीं हारी। वे रोते हुए कहती थी ... 'मुझे जिंदा रहना है , मुझे मरना नहीं है , डॉक्टर कब इलाज निकालेंगे...।'

1966 में मधुबाला बुरी तरह बीमार पड़ी । उन्होंने दिलीप कुमार को मिलने के लिए बुलाया । इस मुलाकात का जिक्र करते हुए दिलीप कुमार ने लिखा है ....'वह मरना नहीं चाहती थी । मुझे बहुत अफसोस हुआ जब उन्होंने मुझसे पूछा कि अगर वह ठीक हो जाएंगी तो क्या मैं उनके साथ फिर से फिल्म में काम करूंगा ? मैंने उनसे कहा तुम जरूर ठीक हो जाओगी । तुम ठीक ही हो । मैंने उनको यकीन दिलाया और वादा किया कि हां मैं तुम्हारे साथ फिल्में करूंगा । लेकिन यह वादा कभी पूरा नहीं हो सका।'

जब दिलीप कुमार ने सायरा बानो से शादी कर ली तो मधुबाला ने मायूस होकर कहा -'उनके नसीब में वो थी, मैं नहीं । उन्होंने बहुत प्यारी लड़की शादी की है मैं बहुत खुश हूं। मेरे शहजादे को शहजादी मिल गई..........

मधुबाला ने 14 फरवरी 1969 को अपना 36 वां जन्मदिन मनाया । 22 फरवरी की रात को मधुबाला की हालत बहुत खराब हो गई , तब अताउल्लाह खान ने किशोर कुमार को फोन किया किशोर कुमार किसी शो लिए कोलकाता जा रहे थे । उन्हें डर था कि कहीं ऑर्गेनाइजर्स के पैसे उनके हाथ से ना निकल जाए। लेकिन अत्ताउल्लाह खान ने उनसे कहा अब मधुबाला वह दोबारा नहीं देख पाओगे।

इस तरह फिल्मी दुनिया की सबसे शानदार और खूबसूरत अदाकारा जिसे भारतीय सिनेमा की 'सौंदर्य देवी' कहा जाता है ने अपनी जिंदगी के आखिरी वक्त में वह दौर देखा जो शायद कोई पत्नी नहीं देखना चाहेगी।

23 फरवरी 1969 को जैसे ही सूरज निकला ,भोर का तारा वीनस 'मिसेज किशोर कुमार गांगुली' नाम से अपनी चमक के साथ 9:30 पर अस्त हो गया ।

प्यार से हमेशा महरूम रहीं मधुबाला छोड़ गई इस बेदर्द - बेरहम जमाने को और छोड़ गई वे ढेरों महकती - मचलती यादें । फिजाओं में गूंजता रहा वो गाना ....

हाफिज खुदा तुम्हारा......

जनपथ बनाम राजपथ

मैं जनपथ का पथिक राजपथ से सवाल दुहराऊँगा।
क्या है दोनों में अन्तर तस्वीर आज दिखलाऊँगा?

झुग्गी से चल करके जनपथ खेतों में खो जाता है।
भूखे बच्चों की आँतों ज्यों अकड़- अकड़ सो जाता है।।

अलकतरा या सी सी से इसके नसीब का मेल नहीं।
ऊबड़ - खाबड़ गड्ढों से छुटकारा पाना खेल नहीं।।

फटी दरारों का कारण यह जनपथ है अथवा जूते।
बरसातों में दरिया से जनपथ निकले किसके बूते!!

ट्रैक्टर ट्राली बैलागाड़ी इधर- उधर इठलाती है।
कभी धूल में कभी कीच में गिरकर धक्के खाती है।।

बाँस बबूल झाड़ियों में फँसकर दिखती है बदहाली।
जैसे मुश्किल में आई हो गंगू की छुटकी साली।।

फटे -पुराने चिथडों से इज्जत कैसे ढँक पाऊँगा।
मैं जनपथ का पथिक राजपथ से सवाल दुहराऊँगा।

क्या है दोनों में अन्तर तस्वीर आज दिखलाऊँगा?

अहा! राजपथ जनमत लेकर सीधे संसद जाता है।
कांक्रीट का कटुक कलेजा सरेआम दिखलाता है।।

झाड़ू पानी स्वीपर पॉलिश से होता इसका मेकप।
मन्त्री के आने -जाने से हो जाता मोहक गेटप।।

दोनों ओर फूल की क्यारी अक्सर दिल को भाती हैं।
कृत्रिम झालर बत्ती लाइट रजनी दिवस बनाती हैं।।

शूट -बूट में सजे सिपाही से सेल्यूट भी मिल जाते।
जनमत के लाचारीपन को देख होंठ भी सिल जाते।।

किन्तु गगनचुम्बी जयकारी लगती मानो बेमानी।
जनपथ के हिस्से से कायम सदा राजपथ का पानी।।

यह काँटों से घिरा फूल- सा देख अवध इतराऊँगा।
मैं जनपथ का पथिक राजपथ से सवाल दुहराऊँगा।

क्या है दोनों में अन्तर तस्वीर आज दिखलाऊँगा?

डॉ अवधेश कुमार 'अवध'
गुवाहाटी, असम

वैवाहिक बलात्कार सोचः एक बीमार मानसिकता

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल
पुणे

जब तकनीकी उन्नति के फलस्वरूप जीवन और सामाजिक संबंधों के हर पहलू में पूरी दुनिया सतही हो गई है। सनातन संस्कृति अभी भी सभी त्योहारों, व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों में मौजूद है। सनातन संस्कृति प्राणियों में बंधन, प्रेम, मदत करने और अस्तित्व में विश्वास करती है और दृढ़ता से अभ्यास करती है।शादी ऐसे ही प्यार और बंधन का एक उदाहरण है। यह किसी के जीवन मे एक अनुबंध या मजबूर रिश्ता नहीं है, बल्कि जीवन के उतार-चढ़ाव के भी आत्माओं का बंधन है, अच्छा या बुरा, हर्षित या दुखद, सभी परिस्थितीयों मे प्यार और बंधन है। यदि हम इसे मानसिक दृष्टि से भी देखें तो भी मन लगातार नई चीजों और लोगों की तलाश में रहता है। एक ही तरह के लोगों या चीजों के साथ बोरियत के कारण कई शादियां होती हैं या जब चाहें तब पार्टनर बदलते हैं, जो कई संस्कृतियों में एक सामान्य घटना है। क्या इसका मतलब यह है कि वे केवल महिलाओं को सेक्स ऑब्जेक्ट मानते हैं? किसी को अनुसंधान करने और इसे सार्वजनिक करने की आवश्यकता है। महिलाओं को

प्रजनन भागीदार के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। प्रजनन केवल जीवन की निरंतरता के लिए है और परिवार में नए प्रवेशकों के साथ जीवन को और अधिक सार्थक बनाने के लिए है जो माता-पिता के प्यार का प्रतीक हैं। एक महिला न केवल जीवन का निर्माण करती है, बल्कि अपने समर्पण और कड़ी मेहनत से प्यार और परिवार से जुड़े होने से परिवार का निर्माण और विकास भी करती है।

सनातन संस्कृति में एक महिला को कभी भी यौन वस्तु के रूप में नहीं माना जाता है; बल्कि, उन्हें माँ लक्ष्मी (देवी) के रूप में माना जाता है, जो अपने प्यार और देखभाल के माध्यम से नए परिवार में गौरव लाती हैं। नतीजतन, उस समय के कुछ शासकों को छोड़कर, सनातन संस्कृति में 1000 वर्षों के बाद भी, एक व्यक्ती के कई विवाह और बदलते साथी अकल्पनीय हैं।सनातन संस्कृति में पत्नी या पति के जीवन में सकारात्मक बदलावं और प्रेम के लिए कई चीजों का त्याग करने के कई उदाहरण मिलते हैं। हर समाज में अच्छे और बुरे दोनों तरह के लोग होते हैं। कुछ बुरे लोग संस्कृति की अवहेलना करते हैं और घरेलू हिंसा में लिप्त होते हैं। घरेलू हिंसा कानूनों द्वारा इन व्यक्तियों को उनके गलत कामों के लिए दंडित किया जाना चाहिए। उन्हें संरक्षित करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन यह विश्वास करना कि हर कोई अपने जीवन साथी के प्रति हिंसक है, एक बीमार मानसिकता है। वैवाहिक बलात्कार के बारे में सोचना बेतुका है; इस संबंध में एक कानून बनाने से विवाह प्रेम और देखभाल से रहित अनुबंध के रूप मे रह जाएगा, जिससे रिश्ते सतही हो जाएंगे। वैवाहिक बलात्कार कानून विवाह बंधन के मूल को तोड़ देगा, एक संदेहपूर्ण रवैया विकसित करेगा, अहंकार सही और गलत के ज्ञान को नष्ट कर देगा, प्रेम अपने फायदे की सोच का कार्य बन जाएगा, विवाह अनुबंध की तरह प्रतित होगा, यदि शर्तें पूरी होती हैं तो ठीक है या कानूनी कारवाई के लिए तैयार हो जाओ। समाज को अपनी माताओं और बहनों के साथ दैनिक आधार पर बड़ी संख्या में होने वाले वास्तविक बलात्कारों को गंभीरता से लेना चाहिए। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इस बात की चिंता होनी चाहिए कि किन मूल्यों को स्थापित किया जाना चाहिए और ऐसे राक्षसों को कड़ी सजा देने के लिए वर्तमान कानूनों का उपयोग कैसे किया जा सकता है। यदि नए, सख्त कानूनों की आवश्यकता है, तो सरकार और न्यायपालिका के माध्यम से उन्हें लागू करने के लिए समाज को एक साथ आना चाहिए। क्या ये वे लोग हैं जो यूरोप और अमेरिका में कई भागीदारों में बदलाव के साथ-साथ एक विशिष्ट धर्म में कई विवाहों को अनदेखा कर वैवाहिक बलात्कार के मुद्दे को उठा रहे हैं? यदि हम इस मुद्दे की गहन जांच करते हैं, तो हम पाएंगे कि अवसाद, चिंता, आत्महत्या की प्रवृत्ति और सामाजिक और आर्थिक विनाश मुख्य रूप से इन बेकार संबंधों, एक से ज्यादा शादिया और गलत संस्कृति का परिणाम है। इन संस्कृतियों की महिलाओं की रक्षा के लिए गंभीर ध्यान देने की आवश्यकता है। यह कानून एक महान रिश्ते और संस्कृति को नष्ट कर देगा, और इसका परिणाम पुरुषों और महिलाओं दोनों को भुगतना होगा। परिवारों के बीच मतभेदों को सुलझाएं; यदि संबंध बहुत दूर तक खिंचे हुए हैं, तो न्यायिक हस्तक्षेप के माध्यम से इस मुद्दे को हल करने के लिए हमारे पास कानून हैं।

बहुत से पाश्चात्य लोग विवाह के तरीके और सनातन संस्कृति में उल्लिखित सिद्धांतों में विश्वास करने और उनका पालन करने लगे हैं। इस महान संस्कृति को क्यों नष्ट किया जाए, जब दुनिया का अधिकांश हिस्सा पहले से ही टूटे हुए रिश्तों, अविश्वास, घृणा, संकट, भावनात्मक ब्लैकमेलिंग और महिलाओं से खराब व्यवहार से पीड़ित है?

सनातन संस्कृति के प्रति विद्वेषपूर्ण घृणा को संबोधित किया जाना चाहिए और इस महान संस्कृति को बदनाम करने के किसी भी प्रयास का एकजुट रूप से विरोध किया जाना चाहिए। अविश्वासियों को अपने एजेंडे को अलग रखना चाहिए और समाज में अच्छा करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो प्यार, देखभाल और अपनेपन के माहौल को बढ़ावा देगा, अंततः खुशी की ओर ले जाएगा, जो हर किसी का अंतिम लक्ष्य है। आइए हम रिश्ते को तोड़ने के बजाय उसे मजबूत करने और समाज को और भी प्यार और अपनेपन से जोडने का काम करें।

■■

'पीड़ा अंतर्मन की.........'

सुनील और सुधीर बचपन से घनिष्ठ मित्र थे। स्कूल भी साथ ही गए,कॉलेज की पढ़ाई भी साथ ही खत्म की और नौकरी भी लगभग दोनों की साथ-साथ ही लगी।

पहले दो-तीन महीने तो सुनील किसी दूसरी कंपनी में जॉब करता था , फिर बाद में उसे भी सुधीर की कंपनी में ही जॉब मिल गया। दोनों सुबह ऑफिस के लिए साथ निकलते और संध्या समय साथ ही लौटते ,पर आज जब सुनील की पत्नी सुनिधि ने उसे कहा कि आप ऑफिस के लिए अभी तक तैयार नहीं हुए ?

तब सुनील ने कहा ,आज जाने का मन ही नहीं है।

तबीयत कुछ ठीक नहीं है ,सुनिधि को समझते देर नहीं लगी कि अपने खास मित्र कि उन्हें याद सता रही है।

सुनिधि ने सुनील को कुछ सांत्वना देते हुए कहा कि धीरज रखें , होनी को कोई नहीं टाल सकता है ,शायद आपका और सुधीर भाई साहब का साथ इतना ही था,।

मैं जानती हूं कि अब आप अकेले पड़ गए हैं ,पर आपको ऑफिस तो जाना ही पड़ेगा न, किसी के बिना ज़िंदगी रुकती नहीं है।......

इधर सुनिधि बोले जा रही थी, उधर सुनील अपने मित्र की यादों में खोया सोच रहा था कि कैसे सुधीर के मन में कोरोना का डर बैठ गया था।

इस महामारी के आते ही कितना घबरा गया था ,कितनी सेफ़्टी से सभी काम कर रहा था ,घर में पत्नी और बच्चों को भी बार-बार सावधानी बरतने के लिए

जसविंदर कौर गाँधी
विंध्याचल अकादमी, देवास

कहता रहता था।

ऑफिस में भी हर किसी चीज को हाथ लगाने से पूर्व कई बार सैनिटाइज़र का उपयोग करता, किसी भी पेपर उठाने से पूर्व सैनिटाइज़ जरूर करता ।ऑफिस में भी सभी को यही हिदायतें देता रहता था।

सुनील को 4 दिन पहले की सुधीर कि वह बात याद आती है ,जिसमें ज़िक्र किया था -' उसने अपने बच्चों और पत्नी के लिए भविष्य की कुछ प्लानिंग नहीं की है ; इस महामारी के कारण बहुत घबराहट हो रही है ,सच में भविष्य के लिए मैं चिंतित हूं।'

पर वह नहीं जानता था कि उसका जीवन 4 दिन बाद ही खत्म हो जाने वाला है।

मनुष्य भी कैसी-कैसी कल्पनाएं करता है -अपने भविष्य के लिए, अपने बच्चों के लिए ,पत्नी के लिए, अपने माता-पिता के लिए।

यह कोई नहीं जानता कि उसका अंत समय कब सामने आकर खड़ा हो जाएगा।

उसकी बनी बनाई योजनाएं कब विफल हो जाएंगी।

सुधीर की पत्नी सीमा ने तो जैसे सुधीर के बिना न जीने का फैसला कर लिया। 3 दिन से एक अन्न का दाना उसके मुंह में नहीं गया, बार-बार मूर्च्छित हो रही है।

सुनील सोचता है कि क्या होगा अब सीमा भाभी का?

कैसे अकेली बच्चों को पालेंगी?

कैसे घर के सारे खर्च पूरे करेंगी?

सुनील इसी उधेड़बुन में था कि उसकी पत्नी सुनिधि ने पूछा क्या हुआ कहां खो गए हो ?

चलो उठो !ऑफिस भी जाना है हम दोनों को।

ऑफिस से आते समय सीमा भाभी से मिलकर भी आना है।

सुनील ने जब अपने बच्चों को स्कूल के लिए तैयार होते देखा तो , उसका सिर घूमने लगा ।अपने बच्चों को देखते देखते सुधीर के बच्चों की छवियां भी दिमाग में चक्कर लगाने लगी।

सुनील सोचता है कि हम नियति के सामने कितने असहाय हो जाते हैं ,विवश हो जाते हैं, कुछ नहीं कर पाते हैं।

यह केवल सुनील-सुधीर का ही किस्सा नहीं है ; अपितु ऐसे कई परिवार है, जिन्होंने इस कोरोना महामारी में अपनों को खोया है, किसी का भाई ,किसी की बहन, किसी की पत्नी ,किसी की मां, किसी का पुत्र ,किसी की पुत्री , पता नहीं कितने रिश्तो में अधूरापन आ गया है।

हे ईश्वर !इस महामारी से हम सभी की रक्षा कर ,यही कामना है।

■ ■

गुब्बारे वाला

अलका अग्रवाल
पुणे

आया रे गुब्बारे वाला आया रे।
रंग-बिरंगे ये प्यारे-प्यारे,
विभिन्न रूप रंग के हैं सारे।
सबको लगते कितने प्यारे,
बच्चों की आंखों के तारे।
लाया रे गुब्बारे वाला लाया रे।

आया रे गुब्बारे वाला आया रे।
आओ मित्र गुब्बारे खेलें,
कुछ तुम पकड़ो, कुछ हम पकड़ें।
दौड़ लगाएं गुब्बारों के संग,
संग अपने ये भी तो उड़ेंगे।
लाया रे गुब्बारे वाला लाया रे।

आया रे गुब्बारे वाला आया रे।
सबसे हल्के, सबसे प्यारे,
दूर गगन में उड़ते जाते।
हमको भी ये संग उड़ाते,
दूर गगन की सैर कराते।
लाया रे गुब्बारे वाला लाया रे।

■ ■

बनारसी साड़ी-रंग बनारसी

श्रीमती मंजू काला
देहरादून

हम हिंदुस्तानी...विवाह में,....पारंपरिक बनारसी साड़ी के बिना वैवाहिक रस्मों की कल्पना भी नहीं कर सकते! मेरे विवाह में भी बनारसी साड़ी...मेरे पिता के मित्र ने भेंट स्वरूप बनारस से भिजवाई थी...और आग्रह किया था कि मैं वही साड़ी पहन कर..सप्तपदी की रस्में पूरी करूँ! और माँ ने उनका मान रखते हुए..वही साड़ी मुझे मेरे मना करने के बावजूद पहनाई थी..! क्योंकि मैं सहेलियों के उकसाने पर कुछ फैशनेबल पहनना चाह रही थी!, खैर...! लेकिन जानिए..गा..न.. कि बनारसी का एक रोचक इतिहास है जो अलग अलग युगों के धागों और संस्कृतियों से गुंथा हुआ है! जी....बनारसी वस्त्रों की तहों में आपको बनारस की कहानी मिलेगी.., तब...आप जान पायेंगे कि कैसे 2500 वर्षों में हुए अनेक बदलावों के साथ बनारसी ने खुद को ढ़ाला.. है..!

बनारस को अब हालंकि रेशम के लिये जाना जाता है...लेकिन बनारसी साड़ियों की शुरुआत सूती कपड़े के साथ हुई थी! काशी के पास के क्षेत्र में कपास की अच्छी खेती होती थी। बनारस शहर गंगा और वारणा तथा अस्सी नदी के समागम के तट पर बसा है! ये तीर्थ स्थल तो रहा ही है साथ ही कपास की खेती की वजह से ये सूती कपड़े ...बनाने का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया... था!

बौद्ध दस्तावेज़ से हमें पता चलता है कि बुद्ध साधना के लिये सारनाथ आए

थे.....जो काशी के पास था और बाद में उन्होंने सारनाथ में अपना पहला धर्मोपदेश दिया था! काशी में उस समय विद्वानों का मजमा लगा रहता था। कहा जाता है कि बुद्ध जब अंतिम सांसे गिन रहे थे तब उन्होंने अपने अनुयायियों से कहा कि उनके शव को बनारस के उत्कृष्ट कपड़े में लपेटा जाए..!

बनारस तीर्थ और व्यापारिक केंद्र के रुप में विकसित हुआ जिसका फ़ायदा उद्योग को बहुत हुआ! बनारस इन केंद्रों की वजह से सदियों तक फलता फूलता रहा...। यहां प्राचीन राजधानी तक्षशिला और पाटलीपुत्र से बौद्ध भिक्षु और व्यापारी आते थे। ये उत्तरपथ से दक्षिणपथ तक व्यापार करने का गढ़ भी था..!

बनारस......चूंकि तीर्थ स्थल था इसलिये मंदिर में चढ़ावे के लिये कपड़ों की हमेशा मांग बनी रहती थी। इसके अलावा चूंकि यह व्यापारिक केंद्र भी था इसलिये शताब्दियों तक रेशम तथा सूती कपड़े का व्यापार होता रहा!

बनारस की बुनाई में ......आपको फ़ारस, भारत, मध्य एशिया और तिब्बत की सदियों पुरानी संस्कृतियों का प्रभाव देखने को मिलेगा। इनकी झलक गंगा-जमुनी के रूपांकनों की तहज़ीब में दिखाई पड़ती है। बनारसी बुनाई को देखकर ये भी पता लगता है कि कैसे बुनकर बाज़ार की नब्ज़ को पहचानते रहे हैं..!

बनारस के रेशम से .....बनी ज़रदोज़ी की साड़ियां बहुत मशहूर हैं। साड़ियों पर रुपांकन और पैटर्न अलग अलग हो सकता है जैसे किमख्व़ाब, जंगला, तनचोई और बूटीदार। इन पैटर्न में साड़ियों पर फूल-पत्तियों, बेलों ये....लेकर जानवरों तक की कहानियां नजर आती हैं। बनारसी साड़ियों में आज जो आपको ज़्यादातर रुपांकन दिखते हैं वे मुग़ल काल में फ़ारस और भारत के बीच निकट संबंधों से प्रभावित रहे हैं!

अगर आप बनारस के ......पुराने इलाक़े मदनपुरा जाएं तो वहां के बुनकर आपको बताएंगे कि कैसे सदियों पहले उनके परिवार यहां आकर बसे थे। विशेषज्ञों का मानना है कि ज़ुबैर अहमद जैसे बुनकरों के वंशज यहां 15वीं-16वीं सदी में आए थे। मदनपुरा के बुनकर, ज़ुबैर अहमद अपने पूर्वजों के बनारस में बसने की कहानी सुनाते हैं!

फ़ारसी प्रभाव आज बनारसी साड़ियों में रचबस चुका है। ये साड़ियां जिस तरह से बनाई जाती हैं, उस पर भी फ़ारसी प्रभाव है!

फ़ारसी शब्द .....नक़्शा एक देसी उपकरण को दर्शाता है...जिसका इस्तेमाल बेल बूटे की जटिल डिज़ाइन बनाने में किया जाता था! इसका मक़सद एक ही डिज़ाइन या पैटर्न को धागों के एक सेट को लेकर बुनना था....ताकि बाद में उसकी नक़ल करधे पर की जा सके। इस तरह की बुनाई करने वाले को नक़्शबंद कहा जाता है!

बनारस के नक़्शबंद के तार 14वीं शताब्दी के ईरानी संत हज़रत ख़्व़ाजा बहाउद्दीन से जुड़े हुए हैं! कहा जाता है कि ख़्व़ाजा बहाउद्दीन बुखाऱा में अंगरखा यानी किमखा. बनाने में अपने पिता की मदद किया करते थे। कुछ नक़्शबंद ख़ुद को 15वीं शताब्दी के विद्वान ग़यासउद्दीन यजदी का वंशज बताते हैं जो ईरान के शाही कारखाने में काम करते थे। उन्होंने हाथ से कपड़े पर तीन सौ बेलबूटे बनाये थे जिसे तोहफ़े के रुप में मुग़ल बादशाह अकबर को पेश किया गया था। इसी दौरान ईरानी कारीगर पंजाब से लेकर जम्मू-कश्मीर आकर बस गए थे।स्थानीय बुनकरों ने ज़री बुनाई की कला इन्हीं से सीखी थी। कहा जाता है कि रेशम धागे का परिचय बनारस में गुजरात से आए बुनकरों के साथ आया। रेशम के ब्रोकेड की प्रसिद्धी आगे 17वीं-18वीं सदी में हुई गयीं..!

पारंपरिक रुप से .....नक़्शबंदों ने ख़ूबसूरती से संयोजित पैटर्न के साथ ब्रोकेड और नक़्श पर उनके दोहराव का अपना हुनर दिखाते थे। इसके बाद बुनकर इन पैटर्न को करधे के ज़रिये कपड़ों पर बुनते थे। प्रसिद्ध संत कबीर बनारस के ही बुनकर थे और अक्सर उन्हें पेंटिंग्स में करधे पर बुनाई करते दिखाया जाता है। पारंपरिक डिज़ाइनों के नमूने पहले अभ्रक पर लोहे के कलम से बनाये जाते थे ताकि डिज़ाइन का रिकॉर्ड सुरक्षित और स्थायी रहे। नक्शबंद को आज स्थनीय भाषा में जोड़िया और नक़्श को जाला कहा जाता है...!

नक़्शबंद द्वारा......डिज़ाइन के नमूने देने के बाद बुनकर करधे पर ताना तय्यार किया जाता हैं। ताना धागे का अनुदैर्ध्य सेट होता है जो करघे पर फैलाया जाता है।इसके बाद विशेष धागों का जाल उठाकर उसमें धागों का बाना बैठाया जाता है। इस तरह ताना और बाना से बुनाई का काम शुरु होता है। अतिरिक्त बाना तकनीक एक पूरक बाना होता है......जो हाथ से बुनाई में डाला जाता है और इस तरह बनारसी ब्रोकेड का काम होता है। पहले समय में ज़री के काम के लिये खादी सिल्क के धागे को पूरक बाने के लिये प्रयोग किया जाता था।

बुनाई पूरी होने पर कपड़े के पीछे पूरक .....बाने के बचे रह गए अतिरिक्त धागों को काट दिया जाता है। ज़री का काम सोने में तांबा और चांदी मिलकर बने कॉटन के धागे से किया जाता है। इनडोर कार्यशालाओं में, चांदी को पिघलाया जाता है, छड़ में बनाया जाता है और फिर इसे चांदी के धागे में बदल दिया जाता है। यह सोना चढ़ाने के एक तंत्र के माध्यम से जाता है। आज के जमाने मे, सस्ते दामों मे बेचने के लिए, सोने की प्लेटिंग के बजाय तांबे का उपयोग किया जाता है, जिसमे सिल्वर की अनुपात कम होती है..!

नक़्श करधे से बुनाई में ......काफ़ी मेहनत लगती है। अब इसकी जगह जैकार्ड करधा आ गया है। जैकार्ड तकनीक का अविष्कार फ्रांस के बुनकर जोसेफ़ मैरी जैकार्ड ने 18वीं शताब्दी में किया था। जैक्वार्ड तकनीक में छिद्रित कार्ड की विधि का उपयोग होता है। इन कार्डों में बुनाई के लिए डिज़ाइन बनी रहती हैं। कार्ड पर छिद्रों की प्रत्येक पंक्ति के साथ करघे उन विशिष्ट शाफ्टों को उठाते हैं जहां पूरक बाना बैठाया जाना है। यही काम हाथ से करने में बहुत समय लगता है। आज बहुत कम बुनकर पैटर्न बुनाई के लिये पारंपरिक नक्श का इस्तेमाल करते दिखेंगे। लेकिन फिर भी जहां बेलबूटे बनाने की जैकार्ड की क्षमता जवाब दे जाती हैं वहां आज भी नक़्श का इस्तेमाल होता है। उदाहरण के लिये जैकार्ड करधे पर ऐसा पैटर्न नहीं बुना जा सकता जिसमें तीन सौ से ज़्यादा बार बाने का एक दोहराव करना होता है..!

बनारसी....जहां साड़ियों का पर्याय बन गया है....वहीं पारंपरिक बनारसी कपड़ों का ...प्रयोग पगड़ी, मंदिर और दरगाह में चढ़ावे के लिये ओढ़नी या फिर महिलाओं के पहनावे शरारा, लहंगा या स्कर्ट के ऊपर ओढ़ी जानेवाली शॉल बनाने के लिये इस्तेमाल किया जाता था!

लेकिन बनारसी ने खुद् को समय के साथ ढालना भी सीखा है। बनारस के बुनकरों ने न सिर्फ नयी नयी डिज़ाइन और कच्चा माल ईजाद किया है बल्कि तकनीक में भी वह कभी पीछे नहीं रहे हैं।

ये बात बहुत कम लोग जानते हैं...कि चूंकि पास ही बौद्धों के तीर्थ स्थल सारनाथ की बदौलत, यहां के बुनकर आज भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के तमाम बौद्ध केंद्रों में ब्रोकेड के वस्त्र की आपूर्ति करते हैं..!

बनारसी की......जांगला ब्रोकेड बनारसी की जांगला ब्रोकेड बेलबूटे की बुनाई की फ़ारसी तकनीक आने के साथ ही ईरानी शैली के फूलों और पशुओं के रुपांकन का भी बनारसी पर प्रभाव पड़ा। मध्यकालीन युग में फारसी क़ालीन, कपड़ों और मिट्टी के बर्तनों पर शिकार के जो दृश्य दिखाई पड़ते हैं, वे बनारसी वस्त्रों पर भी देखे जा सकते हैं। बनारसी ब्रोकेड साड़ियों में, 'शिकारगाह' इस ब्रोकेड में घोड़े या हाथी की पीठ पर बैठकर शेर या हिरण को भगाते शिकारियों के दृश्य दिखाई देते हैं। शिकारगाह में साज-सज्जा के लिये फारस के जीवनदायी वृक्ष,पैस्ले और अनार के फूल के रूपांकनों की सजावट भी दिखाई देती है। फारसी के प्रसिद्ध रूपांकन 'जांगला' ब्रोकेड फैलती हुई वनस्पति आकृति होती है!

फारस से .....प्रेरित बुटीडर साड़ियों में चांदी और सोने के गहरे शेड ने ब्रोकेड को गंगा-जमुना नाम दिया है। फूल और पत्तियों को गूथकर बनाए गए मुग़ल रुपांकनों में कलग़ा और बेल प्रसिद्ध हैं।किनारों पर पत्तियों का पैटर्न एक खास़ बनारसी रुपांकन है जिसे झालर कहते हैं। धीरे धीरे व्यापारिक मार्ग बढ़ने के साथ बनारसी में चीनी और तुर्क रुपांकन की भी झलक दिखाई देने लगी..!

फारशी......मूल के किमख्व़ाब में सोने और ज़री का बहुत प्रयोग होता था। 18वीं और 19वीं शताब्दी में ये मुस्लिम उच्च वर्ग में बहुत लोकप्रिय थी। अमरु ब्रोकेड में सिल्क से बुनाई की जाती है। इसमें ज़री का बिल्कुल इस्तेमाल नहीं होता। इस तरह बेहद नफ़ीस और दबीज़ ब्रोकेड बन जाता है..!

अमरु ब्रोकेड की ....एक खास़ क़िस्म है जिसे तनचोई कहते हैं। ये भारत में चीन से आई थी। इसके साथ एक दिलचस्प क़िस्सा जुड़ा हुआ है। माना जाता है कि सन 1856 में सर जमशेतजी जेजीभॉय, एक पारसी उद्योगपती ने सूरत के तीन बुनकरों को सिल्क ब्रोकेड की बुनाई का काम सीखने के लिये चीन भेजा था। वापस आने इन बुनकरोंने अपने चीनी शिक्षक का नाम 'चोई' अपना लिया। तन का गुजाराती में निकट अर्थ त्रण यानी तीन होता है। इस तरह चोई जोड़कर इस सिल्क ब्रोकेड का नाम तनचोई पड़ गया। तनचोई ब्रोकेड में फूल, उड़ती हुई छोटी चिड़ियें, मोर और तोते देखे जा सकते हैं।

अब्रवान का....शाब्दिक अर्थ होता है बुना हुआ पानी। अब्रवान में बहुत महीन सिल्क का ताना और ज़री का बाना होता है जो इसे धातु जैसी चमक देता है। इससे बहुत ही मुलायम कपड़ा बुना जाता है..!

भारयीय वस्त्र उद्योग.....में बनारसी को कभी कम मांग के खतरे का सामना नहीं करना पड़ा। लेकिन बनारस के पारंपरिक बुनकरों को कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। सस्ती साड़ियों और चीन के कारखानों में बनने वाले सस्ते कपड़ों ने इनका बाज़ार .....खराब कर दिया है क्योंकि इनकी वजह से हाथ से बुने हुए खास.... बनारसी वस्त्रों की मांग अचानक कम हो गई। भारत में अन्य कपड़ा उद्योग की तरह यहां भी जिन हालात में बुनकर काम करते हैं और जितनी कमाई करते हैं, वो बहुत गरीब है! बनारस की गलियों में आपको गढ्डोंवालो करधों पर काम करते बुनकर दिखई देंगे जिनका बहुत शोषण होता है। घंटों काम करने के बावजूद उनको बहुत कम मेहनताना मिलता है। बंगाल, कश्मीर,और कर्नाटक से कच्चा माल आता है जो बहुत महंगा पड़ता है जिससे हालात और बदतर हो गए हैं..!

बनारसी की सबसे बड़ी समस्या ये है कि बुनकर परिवारों की नयी पीढ़ि ये काम नहीं अपनाना चाहती। वे कहीं और जाकर दूसरा काम करना चाहते हैं ताकि ज़्यादा कमा सकें। वो परंपरा जो हज़ारों सालों से ज़िंदा थी, आज उसके अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है। क्या आप बिना बनारसी कपड़ों के बनारस की कल्पना कर सकते हैं? ज़ाहिर है नहीं और इसीलिये इस दिशा में ठोस क़दम उठाने .. की आवश्यकता है।

(इस आलेख की लेखिका श्रीमती मंजू काला जी सुप्रसिद्ध साहित्यकार तथा हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका लोक गंगा की संयुक्त संपादक हैं।)

वागदेवी वन्दन

वीणापाणी जोशी
देहरादून

माँ शारदे! वर दे! करें नव
कल्पना,
ज्योति जलाएँ अगरु सुगंधित,
सुमनहार सुरभित चरणार्पित,
आसान पावन श्रद्धा कल्पित,

मानसद्वारे करें प्रतीक्षा,
आँगन पुराएँ शुभ अल्पना,
माँ शारदे! वर दे! करें नव
कल्पना,

कर निस्तारण कल्पषतम धन,
नवल भोर की स्वर्ण किरण बन,
कलुषित उर के काटो! बन्धन,
जाग उठे हर सुप्त भ्रमित जन,

उजड़ें बन्द कपाट हृदय के,
दे निज सम्बल माँ थामना!
माँ शारदे! वर दे! करें नव
कल्पना!

मृग मरीचिका उलझन जीवन,
सत्य धरातल हम खो रहे,
जब समाज पीड़ित व्याकुल हो,
नींद चैन की हम सो रहे,

नागरबोध जगा जन-मन में,
मातृभूमि की हो वन्दना!
माँ शारदे! वर दे! करें नव कल्पना
।

सुर नर पूजित बुद्धि विलासिनी!
मुनिजन वन्दित वेद सुभाषिनी!
सकल कला विज्ञान विहारिणी!
ओंकार रूपिणी! भव निधि
तारिणि!

झंकारो माँ! मन 'वीणा' को,
त्वरित करो नूतन चेतना!
माँ शारदे! वर दे! करें नव कल्पना

हिन्दी काव्य के उदीयमान नक्षत्र, कवि शिव मोहन सिंह

सुशील चन्द्र डोभाल
उत्तराखण्ड

जीवन-यात्रा का उद्भव ग्राम मुजान, ज़िला कैमूर, बिहार से और काव्य-सरिता की चेतना का उद्गम भी वहीं से! नदी कितनी भी बड़ी हो उसका मूल स्रोत छोटा ही होता हैं, आगे बढ़ते रहने पर मार्ग में अन्य धाराओं को अपने में समेटने से वह बड़ी और वेगवती बन जाती है।। श्री शिव मोहन सिंह जी के काव्य संग्रह यही संकेत देते हैं। मुजान से वाराणसी होते हुये मिर्ज़ापुर और फिर उत्तराखण्ड के पेयजल विभाग के अभियन्ता रहते हुये भी साहित्य सृजन का क्रम बनाये रखना और 'जागृति', 'मन हुआ मधुमास' और 'ताल किनारे' शीर्षक काव्य संग्रहों का लोकार्पण !अद्भुत है उनका यह उदय। कोई भी टीकाकार, पाठक या समालोचक ऐसी कृतियों की विवेचना तभी कर पाते हैं जब उन कृतियों को ध्यानपूर्वक पढ़ा और परखा जाय। साहित्य की समीक्षा व मूल्यांकन के मानकों के जन्मदाता आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ऐसा ही मानते हैं। कविता के गुण-दोषों की समीक्षा करना कोई निबन्ध लिखना जैसा नहीं होता है। शिव मोहन जी की प्रारम्भिक रचनाओं को देखा जाय तो उनमें व्यक्त भावनाओं को अनदेखा नहीं किया जा सकता। 'जागृति' के 45 नवगीतों की प्रथम रचना –

अंगड़ाई पर अंगड़ाई
उठती है मेरे मन में।
बहुत दिनों की अलसाई
मिट गई मनुज की
तन्हाई,...........

हो या फिर इसमें संकलित कोई भी अन्य गीत हृदय को छू लेते हैं। चाहे 'मन हुआ मधुमास' की 51 में से कोई भी रचना पढ़ी जाये, जैसे 'मन हुआ मधुमास' (एक) की ये पंक्तियाँ–

मिलते रहे हैं, पर यहाँ, बनती
रही हैं दूरियाँ ।

अब कौन जाने, किस तरह,
क्या-क्या रहीं मजबूरियाँ!

आपसी रंजिश, शिकायत को
मिटाना चाहता हूँ ।

गीत आया है अधर पर,
गुनगुनाना चाहता हूँ।

या इसी शीर्षक के भाग (दो) क्रम 26 की अन्तिम पंक्तियाँ, वे पाठकों का ध्यान आकृष्ट अवश्य करेंगी–-

ऐसी बनाई रीत कि अब प्यार भी
छलने लगा।

हर अधर का मान रखता, गीत
भी जलने लगा।

मौसमी सौग़ात लेकर
अब क्या करें !
मन हुआ मधुमास, बोलो
क्या करें !

इन कविताओं में एक विशेषता उभर कर आई है। बोल-चाल की भाषा में भावाभिव्यक्ति करते हैं कवि शिव मोहन जी। 'ताल किनारे' में भी यही बात मिलती है। यह काव्य-भाषा का एक सिद्धान्त है कि रचनाओं में सरल व दैनिक भाषा का प्रयोग हो। प्रकृति प्रेमी कवि वर्डसवर्थ ने तो यहाँ तक कह दिया कि पद्य और गद्य की भाषा में कोई तात्त्विक भेद नहीं होना चाहिये। प्राचीन काल के कवियों में जितना सरल भावाबोध था, उनकी उतनी सहज भाषा नहीं थी, लेकिन उनमें कृत्रिमता और आडम्बर नहीं था। जो भाषा बहुत क्लिष्ट और कठिन हो, वह मात्र विद्वानों या अभिजात्य वर्ग की बन कर रह जाती है और धीरे- धीरे समाज व साधारण बोल-चाल के समाज से दूर हो जाती है। आज लेटिन, रोमन और, बुरा ना मानें तो, संस्कृत की यही दशा हो गई है। जो भाषा आम-जन न बोल सकें, न समझ सकें, वह मृत भाषा की ओर अग्रसर हो जाती है। महर्षि बाल्मीकि द्वारा रचित रामायण और महाकवि तुलसीदास द्वारा लिखित रामचरितमानस की लोकप्रियता की तुलना पाठक कर सकते हैं। शिव मोहन जी की कविताओं में प्रयुक्त भाषा आम लोगों द्वारा पढ़ी व समझी जा सकती है, उसमें शब्दाडम्बर कहीं नहीं है। तभी तो 'खण्डहर' भी चिन्ता से मौन हृदय में कोई बात ढो रहा है (जागृति)। यथार्थता का चित्रण देखिये आज 'गाँव-गाँव में' ऐसी बयार चली कि–

मीत रूठ जाता है,

आज बात-बात पर,

गीत टूट जाता है,

लघुतम आघात पर।

(मन हुआ मधुमास)

कवि ने अपने तीनों काव्य-संग्रहो में समाज की मनोदशा का सटीक वर्णन किया है। हृदय को छू जानेवाले बहुत गीत हैं। उनकी रचनायें अंग्रेज़ प्रकृति कवि वर्डसवर्थ की परिभाषा का स्मरण दिलाती हैं- ' Poetry is the spontaneous overflow of feelings...' आज व्यक्तिवाद, उपभोक्तावाद, अवसरवाद और आधुनिकतावाद नें समाज का संव्यूहन ही बदल डाला। रिश्ते-नाते, आचार-व्यवहार, रीति-रिवाज़, खान-पान आदि में परिवर्तन आया तो प्रकृति और साहित्य कैसे अछूते रहेंगे? दुहरा जीवन जी रहे हैं हम। तभी तो–-

ताल किनारे प्यास खड़ी है

बादल चलते दाँव।

ऊपर से हम भीग रहे हैं

नीचे जलते पाँव। (ताल किनारे)

शिव मोहन सिंह एक निर्भीक रचनाकार हैं, उनकी कवितायें उनके अध्ययन, चिन्तन, अनुभव, अभ्यास, कल्पनाओं और भावनाओं से प्रस्फुटित हुई हैं। तभी तो इनके खण्डहर भी मार्ग पर चलते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं को निरन्तर विकसित किया है जो 'जागृति' से 'ताल किनारे' तक की यात्रा में परिलक्षित होती है। लेखन का स्तर ऊँचा होता गया और वे सुप्रतिष्ठित होते गये। अनेक कवि सम्मेलनों में उन्हें आमन्त्रित किया जाता है और उनसे मंचों का संचालन करने का अनुरोध भी होता है। वे हिन्दी साहित्य समितियों के सदस्य और उत्तराखण्ड और उत्तर प्रदेश की मासिक पत्रिका सच की दस्तक के उप सम्पादक भी हैं याने एक बहुत ही व्यस्त साहित्यकार। उनकी कविताओं में भावी पीढ़ी के लिये प्रेरणा के संकेत भी हैं- देशप्रेम है, कर्तव्य पथ है, स्वावलम्बन है, अतीत का दर्पण है तो नव जागरण भी है। सभी वर्ग के पाठकगणों के लिये पर्याप्त सामग्री है।

पुनरुक्त/ द्विरुक्ति और युग्म शब्दों पर कवि की अच्छी पकड़ है। पकड़ क्या, वे युग्म व पुनरुक्त विशेषज्ञ बन गये हैं। इनके प्रत्येक काव्य संग्रह में इनकी प्रचुरता है। कविताओं या उक्त सभी शब्दों का उद्धरण देना यहाँ सम्भव नहीं है किन्तु पाठक इनकी कविताओं से इनका भण्डारण कर सकते हैं। जैसे–

लहर-लहर, घट-घट, परख-परख, जन-जन, डगमग-डगमग, धन्य-धन्य, बूँद-बूँद, चौंक-चौंक, कल-कल, छलक-छलक, झुर-झुर-झुर-निर्झर, ठहर-ठहरष्ठ.. तन-मन, जीर्ण-शीर्ण, चमक-दमक, छिटक-छहर' आदि अनेक शब्द। इनके प्रयोग से गीतों की सुन्दरता, लय और गति में निखार आ जाता है। उदाहरण स्वरूप इन पंक्तियों को पढ़ें-

भक्ति-भाव में डूबी नगरी

घर-घर गोकुल धाम।

द्वार-द्वार पर राधा रानी

गली-गली में श्याम।

शब्दों में बहुत शक्ति होती है। वे विश्व के मानचित्र तक बदल सकते हैं, युद्ध या सन्धि करवा सकते है। इनका

सही प्रयोग न हो तो मित्र भी शत्रु बन जाते हैं। इनके सदुपयोग से हर क्षेत्र में लाभ ही लाभ हैं। इन्हीं से ज्ञान का संचय और प्रसार होता है, पुस्तकों का भण्डार बन जाता है। यहाँ पर इस बिन्दु को इसलिये उठाया गया है कि कविताओं और गीतों में इनका बहुत महत्व है। बोल-चाल में हम जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं, वे काव्य में शब्द विन्यास के कारण साहित्य का अमृत बन जाते हैं, साधारण शब्द असाधारण बन जाते हैं। शिव मोहन सिंह जी की रचनाओं में शब्दों की ऐसी ही मधुरता है--

घाट से दूर जाने लगी है नदी

रेत में अब नहाने लगी है नदी।

मानवीयकरण और कवित्व प्रशंसनीय है। ऐसा एक गीत में नहीं, अनेक में है।

सूरज है नाराज़ आज कुछ ,
कहना मुश्किल है।

उबल रहा अंगार धरा पर चलना
मुश्किल है।

और अन्त में क्या गहन बात लिख दी---

साँसों की पूरी गिनती तक जीना
मुश्किल है।

कहीं-कहीं पर शायद प्रेस में प्रूफ़ रीडिंग की कमी के कारण छोटी-छोटी त्रुटियाँ दिखाई दीं, जैसे–

लहर-लहर की तरुणाई में
किसने घोला है अरुणाई!

- जागृति गान (घोला के स्थान पर घोली) या

टूटे-टूटे
स्वप्न सँजोये
नयनों को
इक रात मिली है!
लावा जैसी
धार व्यथा की
छलकाता
नित मन का गागर। - ताल किनारे .. (मन की गागर, न कि मन का गागर)

इतनी सुन्दर रचनाओं में छोटी से छोटी त्रुटि भी खटकती है, भले ही इससे कवि का कोई लेना-देना नहीं। उन्होंने तो अपने गीतों में शुद्ध और सरल भाषा का प्रयोग कर भाव व्यक्त किये हैं, विविध विषयों पर ऐसे लिखा मानों 'माटीवाले हाथ मोती बो रहे हों।' उन्होंने प्रेम के अनेक रूप भी दिखाये हैं। उनकी रचनाओं में संघर्ष है, पीड़ा है, करुणा है, सौन्दर्य है, लोक संस्कृति है, जीवन की संवेदना है, रोमांस है, देश प्रेम है, पर्यावरण की चिन्ता है, अनकही बातें हैं, शब्द-चित्र हैं और पाठकगणों के लिये साहित्य के विभिन्न स्वाद हैं। बिहार के निवासी कवि उत्तराखण्ड में ऐसे रमे कि उनकी कविताओं में वहाँ की बोली-भाषा ऊर्जा प्रदान करने लगी है। उनमें बाँज, चीड़ ही नहीं, नौले-धारों की भी चिन्ता है-

चन्द दिनों के नौले-धारे

फिर मरघट का कोना है।

अजीब लगा जब अपने गाये गढ़वाली गीतों का एक प्यारा शब्द 'रैबार' उनकी कविता 'शीत लहरें' में पढ़ा--

आ गई हैं
शीत लहरें
एक बार फिर।
शैल-शिखरों का
रैबार लेकर।
(मन हुआ मधुमास)

उत्तराखण्ड को प्रकृति ने खूब सजाया-संवारा है। यहाँ की दृढ़ हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलायें, किसी अदृश्य सत्ता का अस्तित्व का बोध कराती हुई बहती नदियाँ, घाटियाँ, जंगल, विविध राग सुनाती हुई चिड़ियाँ, छोटे-बड़े जीव-जन्तु, सुहानी घाटियाँ, जड़ी-बूटियाँ, शुद्ध हवा, फल-फूल, तीर्थ-स्थल और शान्त वातावरण ने प्राचीनकाल से ही साधु- सन्तों, दार्शनिकों, शोधकर्ताओं, विरक्तों आदि को अपनी ओर आकर्षित किया है। तब न आज की भाँति सड़कें थीं, न यातायात की सुविधायें और न डाकघर। गाँव छोटे व दूर-दूर होते थे और आज की तुलना में जीवन बहुत कठिन था। लड़कियों की शादी दूरस्थ स्थानों में पहाड़ों के पार भी होती थी। एक बार बेटी विदा हुई तो शायद एक वर्ष में एक बार मायके आ जाय या न आय, अन्यथा आते-जाते बटोहियों के माध्यम से रोते-धोते 'रैबार' (सन्देश) और 'समूण'

(स्मृति-उपहार) का आदान-प्रदान ही हो पाता था। रैबार और समूण- इन दो शब्दों में ममत्व का निचोड़ है। रैबार और समूण देने-लेने में आँसुओं की झड़ी लग जाती थी तब। पुराने पहाड़ी गीतों में 'खुदेड़पन' (बिछोह की पीड़ा) बहुत मिलती है। हर्ष है कि शिव मोहन जी ने ऐसे शब्दों को आत्मसात् कर उनका प्रयोग किया। पाठकों के अध्ययन हेतु एक पुराने गढ़वाली गीत की ये शब्द प्रस्तुत हैं–

जैं दिसा भौंरों भेर्यो
बोलि रैबार मेरो।
पवन तू प्राण मेरो
मैं भि छौं दासि तेरी।

(प्रेयसी सन्देश वाहक से– जिस दिशा में भँवरा मँडराये, वहीं मेरा सन्देश कह देना। पवन, तू मेरा प्राण है, मैं तेरी दासी हूँ।) कवि के काव्य संग्रहों में हृदय को छूने वाले अनेक शब्द और गीत हैं। निश्चित ही उन्होंने ठान लिया था- 'कलम उठाओ, प्यार लिखो, शब्द-शब्द नव ब्रह्म रचो तुम, एक नया संसार लिखो।' मुक्तिबोध की परम अभिव्यक्ति की तरह जो घूमती है जग में...........

इसीलिये मैं हर गली में
और हर सड़क पर
झाँक-झाँक कर देखता हूँ हर
एक चेहराष्ठ. ।

तभी तो अनुभव जोड़ा है कवि ने, जिनके काव्य ने नदी की अविरल धारा की भाँति गीतों के अनेक द्वीप बना दिये। अज्ञेय की ' हम नदी के द्वीप nQ..........वह हमें आकार देती है'- जैसी अभिव्यक्तियाँ हैं इनमें। ऐसी रचनात्मकता, रुझान और लिखने की प्रवृत्ति दैवीय सम्पदा है। जागृति की 'अकिंचन' ने महाकवि निराला की स्मृति को पुनर्जीवित कर दिया। ' मुट्ठी भर दाने भूख मिटाने/ की दाता की करे प्रतीक्षा/ या धरती पर देवदूत बन ('वन' त्रुटिवश छपा है)/ मनुज-मनुज की करे प्रतीक्षा।'पूरी कविता पढ़ कर बहुत आनन्द आता है। 'ताल किनारे' के पृष्ठ 60 पर प्रकाशित..

सूख गया है ताल किन्तु मैं
जाल अभी तक फेंक रहा हूँ।

ने अमेरिकी लेखक अर्नेस्ट हेमिंग्वे के सन् 1952 में छपे उपन्यास The Old Man and the Sea की याद दिला दी। मात्र 127 पृष्ठ के इस उपन्यास को नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। मुख्य पात्र रोज़ समुद्र में जाल फेंकता है पर एक भी मछली नहीं पकड़ पाता, फिर भी प्रयास करना नहीं छोड़ता। यानी

' pleasure lies in the struggle, not in its achievement.' हिन्दी साहित्य जगत के प्रख्यात गीतकार डा0 बुद्धिनाथ मिश्र जी की रचना–-

एक बार और जाल फेंक रे मछेरे
जाने किस मछली में बन्धन की
चाह हो

भी आशावादी सन्देश देती है। लिखते-लिखते नये विचार आते हैं पर सभी को लपिबद्ध करना सम्भव नहीं हो पाता। कहीं तो विराम लगाना ही पड़ता है। कविताओं में आज ऊँचे आदर्श, धारणायें, आस्थायें, जीवन के अनुभव, कल्पनायें, सरसता, स्वाभाविकता, मनोभावों का कलात्मक रूप और अनेक विविधतायें दिखाई देती हैं। कवि के लिये अब विषयवस्तु की कोई सीमा नहीं, पिंगल-शास्त्र की बाध्यता नहीं किन्तु कुछ तो है जो उसकी रचनाओं को कविता या गीत बनाते हैं। लयबद्धता, गति, शब्द-विन्यास, रस आदि का अपना महत्व है। कविता को पढ़कर, सुनकर, समझकर और लिखकर आनन्द आना चाहिये। जहाँ आनन्द नहीं वह कविता कहाँ ! तेज धूप में रेगिस्तान का भ्रमण कौन पसन्द करेगा?

आजकल साहित्य का भी बाज़ारीकरण हो गया है, निकृष्ट पुस्तकें साहित्य के नाम पर बिक रही हैं। अनेक स्वयंभू कवि तुकबन्दी या फूहड़पन का आश्रय लेकर खूब तालियाँ बटोरते हैं। अश्लीलता ने भी साहित्य का दुशाला ओढ़ लिया है। श्रोताओं की रुचि भी स्थान, काल और परिस्थिति के अनुरूप बदलती रहती है। गन्दी राजनीति और फ़िल्मों ने भी अपने हितार्थ या अधिक से अधिक धन कमाने की लालसा से इसे दूषित करने में सहयोग दिया है, यद्यपि इस क्षेत्र में कवि प्रदीप, शैलेन्द्र, गोपाल दास नीरज, आनन्द बख़्शी, प्रसून जोशी, गुलज़ार आदि अनेक ख्यातिप्राप्त कवियों और शायरों ने अपनी अमूल्य सेवायें दीं हैं और अभी भी दे रहे हैं। श्री शिव मोहन सिंह जी से यही आशा है कि वे अपनी रचनाओं का स्तर बनाये रखेंगे। देहरादून के मूर्धन्य कविगणों से उनका सम्पर्क है। डा0 राम विनय सिंह जी की विद्वता, उनके गीत और काव्य प्रस्तुतीकरण की चर्चा करते समय उनकी विनयशीलता नहीं भूली जा सकती। यही श्री इन्दुभूषण कोचगवे जी का गुण है, वे

तो यह लिख देते हैं कि 82 वर्ष की आयु में अभी वे सीख रहे हैं। अहंकार का कहीं नाम नहीं। यही तो विद्वता की पहचान है।

उच्च स्तर के इन तीन काव्य-संग्रहों के प्रकाशन के लिये श्री शिव मोहन सिंह जी को हार्दिक बधाई। वे साहित्य के प्रति समर्पित हैं। उनके नाम में ही आकर्षण है, 'शिव'- जो शुभ, कल्याण, सुन्दर व सत्य का प्रतीक है और 'मोहन'- जो मोह लेने वाला हो- याने ' यथा नामे तथा गुणे।' उनकी एक रचना 'आना उसका' पढ़कर लगा कि कहीं वे जापानी विधा 'हाइकु' को तो नहीं अपना रहें है! अक्षरों की गणना से ऐसा नहीं लगा किन्तु प्रयास बहुत अच्छा है--

उसका आना
रात अन्धेरी
का जाना।

उनकी किसी भी रचना में कोई कटु या असंगत शब्द नहीं मिलता जो काव्य की विशेषता मानी जाती है–

पंकैर्विना सरो भाति सभा
खंलजनैर्विना।
कटुवर्णैर्विना काव्यं मानसं
विषयैर्विना।।

(कीचड़ रहित सरोवर, दुष्ट मानव रहित सभा, कटु वर्ण रहित काव्य और विषहीन मन ही शोभा देते हैं।)

■ ■

हे! वसंत सुनो तो जरा

हे वसंत सुनो तो जरा
तुम्हारा आना अच्छा लगता है
हरी-भरी हो जाती है धरती
खिल उठती है प्रकृति
खुशनुमा हो जाता है मौसम
बसंती पुरवाई सी मचलने लगती है अल्हड़ता
तुम्हारे झोंके से ही दिल जवान हो जाता है
मगर हे वसंत,
कभी उन वीरान सुनसान पहाड़ों की ओर भी
रुख कर लिया करो
माना कि कंकरीली पथरीली उनकी जमीन है
मगर उस ऊसर भूमि को भी
हरियाली की दरकार होती है
तुम्हारे वहां जाने से
ताप में कुछ बदलाव आ जाएगा
तुमसे लिपटते ही
उनके अंदर बसी कोयल कूक उठेगी
बह निकलेगी कोई गंगा
उनके सुनसान रन्ध्रों से
उन पत्थरों में भी जान आ जाएगी
मौसम सुहाना हो जाएगा
जीवन खुशहाल हो जाएगा
ऐसा भी कुछ नेक काम कर लिया करो वसंत
प्रकृति का संतुलन बना रहेगा
समाज का हर कोना हरा भरा हो जाएगा
क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता वसंत?

डॉ. रमेश यादव
मुंबई

■ ■

बाल मिठाई

महत्वपूर्ण सामग्री

500 ग्राम पिसी हुई चीनी

500 ग्राम चीनी

डेढ़ किलो खोया/मावा

10 ग्राम टेट्रिक एसिड

आधा कप दूध

50 ग्राम खसखस (पोस्ता के दाने)

आधा चम्मच घी, चिकनाई के लिए

1 लीटर पानी

विधि

चाशनी के लिए

- धीमी आंच में एक कड़ाही में चीनी, टेट्रिक एसिड और पानी डालकर उबालें।

- जब चीनी घुल जाए तो इसमें दूध डाल दें।जैसे ही दूध डालेंगे तो फेन उठेगा। खराब फेन को चम्मच से निकाल दें।

- चाशनी को तब तक पकाएं जब तक कि यह गाढ़ी न हो जाए और इसे चम्मच से गिराने पर धागे जैसा न बने।

- अब कड़ाही से आधी चाशनी निकाल कर दूसरे बर्तन में रख लें।

चॉकलेट बर्फी बनाने के लिए

- चाशनी वाली कड़ाही में मावा और चीनी पाउडर डालें और धीमी आंच पर चॉकलेटी रंग (डार्क ब्राउन) होने तक भूनें। मन चाहे तो चॉकलेट पाऊडर भी मिला सकती हैं।

- जब मिश्रण गाढ़ा हो जाए तो एक गहरे तले की थाली पर चिकनाई लगाकर मिश्रण को इसमें फैला दें।

- ठंडा होने के बाद इसे चौकोर या मनचाहे वर्फी के आकार में काट लें।

ऐसे बनाएं बाल दाना

- धीमी आंच में एक पैन में बची हुई चाशनी गर्म करने के लिए रखें और इसमें खसखस डालें।

- जब ये चाशनी में अच्छी तरह लपट जाएं तो इन्हें प्लेट पर निकाल लें।

- अब बर्फी को बाल दाने में रोल कर लें।

- लीजिए तैयार है उत्तराखंड के अलमोड़ा की फेमस बाल मिठाई। सपरिवार बनायें और सपरिवार आनंद लें।

■■

भारतीय बेटियों ने चीन को पछाड़ा

मस्कट। भारतीय महिला हॉकी टीम एफआईएच प्रो लीग में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुएमंगलवार को यहां चीन को 2-1 से हराकर अंक तालिका में शीर्ष पर पहुंच गई। सोमवार को प्रो लीग में अपने पदार्पण मुकाबले में चीन को 7-1 से हराने के बाद मंगलवार को भारत ने इसी टीम को सुल्तान काबूस परिसर में 2-1 से हराया। भारतीय टीम सोमवार को हुए मैच की तरह इस मुकाबले में अधिक गोल तो नहीं कर सकी लेकिन टीम ने दिखाया कि वे बिना धैर्य खोए आक्रामक हॉकी खेलने में सक्षम हैं। चीन की टीम को अनुभव की कमी का खामियाजा भुगतना पड़ा। इसके अलावा पहले हाफ में चीन की टीम गेंद को अधिक समय अपने कब्जे में नहीं रख सकी, उसके पास सटीक नहीं थे और डिफेंस भी कमजोर नजर आया। दूसरी तरफ भारत ने मैच की तेज शुरुआत की और आक्रामक खेल दिखाया। भारतीय टीम ने चीन के डिफेंस पर दबाव डाला जिसका फायदा टीम को तीसरे मिनट में पेनल्टी कॉर्नर के रूप में मिला। गुरजीत कौर ने इसे गोल में बदलकर भारत को बढ़त दिलाई। चीन की टीम भाग्यशाली रही कि पहले क्वार्टर के बाद अधिक अंतर से नहीं पिछड़ रही थी। भारत ने कई मौके बनाए लेकिन यह तो उसके खिलाड़ियों के निशाने गोल से दूर रहे या फिर वे चीन की गोलकीपर वू सुरोंग को छकाने में नाकाम रहे। दूसरे हाफ में चीन ने वापसी की और डिफेंस में बेहतर खेल दिया। भारत को चीन के आक्रमण को विफल करने में परेशानी हो रही थी। भारतीय डिफेंस की गलती का फायदा उठाकर वैंग शुमिन ने गोलकीपर सविता को पछाड़कर चीन को 1-1 से बराबरी दिलाई। भारत को इसके बाद कई पेनल्टी कॉर्नर मिले लेकिन टीम इन्हें गोल में बदलने में नाकाम रही। अंतिम क्वार्टर में भारत ने हमले तेज किए। मोनिका ने आक्रमण की जिम्मेदारी संभाली। भारत को तुरंत ही इसका फायदा पेनल्टी कॉर्नर के रूप में मिला

मनोज उपाध्याय
खेल सम्पादक

लेकिन दीप ग्रेस एक्का इसे गोल में नहीं बदल सकी। गुरजीत ने हालांकि एक और पेनल्टी कॉर्नर पर चीन की गोलकीपर वु सुरोंग को पछाड़कर भारत को 2-1 से आगे किया जो निर्णायक स्कोर साबित हुआ। भारत के मुख्य कोच यानेक शोपमैन हालांकि निराश होंगे कि 33 बार चीन के सर्कल में प्रवेश करने के बावजूद भारतीय टीम गोल की तरफ सिर्फ छह शॉट लगा पाई। मोनिका को मैच में शानदार प्रदर्शन के लिए मैच की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। उन्होंने कहा, ''चीन के खिलाफ दो मैच में हमारे प्रदर्शन से मैं काफी खुश हूं। पिछले ओलंपिक की तरह एक इकाई के रूप में खेलना शानदार रहा। हम पूरी स्वतंत्रता के साथ खेल रह हैं और इसका पूरा लुत्फ उठा रहे हैं। विडम्बना है कि एक तरफ बेटियां नाम बना रहीं तो दूसरी तरफ़ कुछ बेटियां देश का नाम डुबोने पर लगी हैं। डीएसपी देहरा अंकित शर्मा के अनुसार सपना साल 2014-15 में हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन की महिला टीम की ओर से खेल चुकी है। स्थानीय पुलिस ने उसे देहरा न्यायालय में पेश किया। कोर्ट से गुजरात पुलिस ने उसे ट्रांजिट रिमांड पर लिया है। शिकायतकर्ता का आरोप है कि उसे रणजी ट्रॉफी में खिलाने का वादा करके सपना ने उससे 27 लाख रुपये लिए थे, लेकिन उसे रणजी ट्राफी में खेलने का मौका नहीं मिला।

■ ■

नारा हमें बदलना होगा

गौरीशंकर तिवारी 'तृप्त'
वाराणसी

युवकों आगे आना होगा
भ्रष्टाचार भगाना होगा।

नारा सुन कर बेटा आया
मुझे भी सुनाया
उसकी बात पर आ गई हँसी
बात सियासत की फँसी
मैंने भी रखा विचार
दिया विस्तार -

बेटा!
इधर लगता है नारा
उधर चढ़ता है पारा
लगती है वादों की झड़ी
पर
टूटती नहीं भ्रष्टाचार की लड़ी
मँहगाई छू रही आसमान
मर रहा किसान
भ्रष्टाचार पर प्यार
लुटा रहा संसार
वह सदा पुजाता रहेगा
गरीबों को डँसता रहेगा।

वह भी मुस्कुराया
फिर अपनी सुनाया -

तख्ता पलट गया है
शासन बदल गया है

अभियान जारी है
जेल में भ्रष्टाचारी हैं।

उसकी बात में दम था
लेकिन मति में भ्रम था
मैंने पास बुलाया
प्रेम से समझाया -

पप्पू!
भ्रष्टाचार मुक्त सरकार
सुखद सपना है
किन्तु, कोरी कल्पना है
लोग लोभ के पुतले हैं
इसी से कायम घपले हैं
इसलिए
नारा हमें बदलना होगा।
लोभ सभी को तजना होगा।

■ ■

रूस और यूक्रेन में तनाव

इस वक्त विवाद ये है कि यूक्रेन को अमेरिका और उसके सहयोगी देश अपने सैन्य गठजोड़- उत्तर अटलांटिक संधि संगठन नाटो) में शामिल करने की तैयारी कर रहे हैं. ताकि रूस पर उसके जरिए दबाव बनाया जा सके. वहीं यूक्रेन में नाटो की सेनाओं की मौजूदगी या सैन्य अभ्यास आदि का रूस विरोध कर रहा है।

रूस और यूक्रेन विवाद में पूरे विश्व को हैरत में डाल दिया है वही दूसरे पश्चिमी देशों की तरह ब्रिटेन भी यूक्रेन की सहायता कर रहा है। अगर रूस, यूक्रेन पर हमला करता है तो ब्रिटेन आर्थिक प्रतिबंध लगाएगा, ऐसी चेतावनी ब्रिटेन की तरफ़ से रूस को दी जा रही है।ब्रिटेन, यूक्रेन को टैंक रोधी हथियार और बख्तरबंद गाड़ियां भी मुहैया करा रहा है।ऐसा भी वादा किया गया है कि अगर रूस की सेना यूक्रेन की सीमा में घुसती है तो ब्रिटेन भी नेटो सैन्य गठबंधन के अपनी फौज़ भेजेगा।जबकि रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने हमले की किसी मंसूबे से इनकार किया है और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने युद्ध कीबात से 28 जनवरी, 2022 को इनकार कर चुके हैं। पुतिन ने यूक्रेन की सीमा के पास एक लाख से अधिक सैन्य बल तैनात किए हैं। उधर, अमेरिका हजारों सैनिक तैनात करने के लिए तैयार

है। उसने ब्रिटेन और उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के सहयोगियों से भी पूर्वी यूरोप में हजारों सैनिक तैनात करने को कहा है। पुतिन ने कहा है कि अगर नाटो यूक्रेन को गठबंधन में शामिल करने से मना कर देता है तो वह पीछे हट जाएगा, लेकिन उसकी यह मांग खारिज कर दी गई है। नाटो मतलब 1949 में गठित हुआ एक सैन्य गठबंधन है। अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, ब्रिटेन और आठ अन्य यूरोपीय देशों ने मिलकर यह गठबंधन किया था। अब 30 देश इस संगठन के सदस्य हैं।यह गठबंधन संयुक्त राष्ट्र के साथ मिलकर काम करता है। नाटो और संयुक्त राष्ट्र के बीच कुछ बातें साझा हैं। ये दोनों ही अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जो सदस्य देशों को वित्तीय मदद देते हैं। इन दोनों पर अमेरिका समेत पश्चिमी शक्तियों का राजनीतिक प्रभाव है, लेकिन दोनों संगठन एक जैसे नहीं है। नाटो का काम आवश्यकता पड़ने पर अपने सैन्य सहयोगियों की मदद से युद्ध लड़ना है, जबकि संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षा, राजनीतिक वार्ता और अन्य साधनों के जरिए युद्ध से बचने का काम करता है। यूक्रेन नाटो में शामिल क्यों होना चाहता है ? यूक्रेन 1992 के बाद से नाटो का साझेदार है।नाटो ने 1997 में यूक्रेन-नाटो आयोग की स्थापना करके सुरक्षा चिंताओं पर चर्चा के लिए एक मंच मुहैया कराया है। इसके जरिए एक औपचारिक सदस्यता समझौते के बिना नाटो-यूक्रेन संबंध मजबूत हुए थे। नाटो का सदस्य बनाए जाने पर यूक्रेन के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सैन्य समर्थन बढ़ जाएगा, जो रूसी आक्रामकता को रोकने में मददगार हो सकता है। नाटो गैर-सदस्य देशों को समर्थन देने संबंधी सीमाओं को लेकर स्पष्ट है। हालांकि उसने मानवीय आपात स्थितियों के दौरान अफगानिस्तान जैसे गैर-सदस्य देशों का समर्थन किया है, वह किसी गैर-सदस्य देश में सैनिकों को तैनात करने के लिए प्रतिबद्ध नहीं है। नाटो की सदस्यता यूक्रेन को यूरोप की ओर अधिक मजबूती से खींचेगी। इससे यह संभावना बढ़ जाएगी कि यूक्रेन यूरोपीय संघ में शामिल हो सकता है, जो यूक्रेन के लिए एक और नीतिगत लक्ष्य है। इससे यूक्रेन को अमेरिका के साथ और घनिष्ठ संबंध बनाने में भी मदद मिलेगी। साथ ही यूक्रेन से रूस का प्रभाव कम करने में सहायता मिलेगी, लेकिन उसे नाटो की सदस्यता मिलने से क्षेत्रीय तनाव बढ़ सकता है।रूस ने कहा है कि वह गठबंधन के विस्तार को सीधे खतरे के तौर पर लेगा। तो क्या यूक्रेन को नाटो का सदस्य बनाया जा सकता है? यूक्रेन नाटो की सदस्यता हासिल करने की ओर से आगे बढ़ रहा है, लेकिन उसका इसमें जल्द शामिल होना संभव नजर नहीं आ रहा। किसी देश को शामिल करने के लिए सभी नाटो सदस्यों को सर्वसम्मति से मंजूरी देनी होगी। सदस्यता पाने के इच्छुक देशों को एक सदस्यता कार्य योजना का पालन करना होता है। इसके लिए देशों को अपनी सुरक्षा एवं राजनीतिक नीतियों की विस्तृत जानकारी देनी होती है। योजना को पूरा करने और प्रवेश प्राप्त करने में देश को 20 साल लग सकते हैं, जैसा कि नॉर्थ मैसेडोनिया के मामले में हुआ था। यूक्रेन ने सदस्यता कार्य योजना के लिए 2008 में आवेदन दिया था और यह प्रक्रिया पुतिन समर्थक एवं यूक्रेन के पूर्व राष्ट्रपति विक्टर यानुकोविच के कार्यकाल में 2010 में रोक दी गई थी। रूस के साथ बढ़ते तनाव के बीच यूक्रेन ने नाटो में शामिल होने की योजना को फिर से नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ाया है। यदि यूक्रेन को नाटो की सदस्यता मिल जाती है, तो उसके और रूस के बीच संघर्ष का खतरा होने पर गठबंधन सदस्य रूस के खिलाफ सैन्य कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध होंगे। इस पर कयास लगाए जा रहे हैं कि अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन विदेश सेवा के अधिकारी ब्रिजेट ब्रिंक को यूक्रेन के लिए अपना राजदूत नामित कर सकते हैं। इस फैसले की जानकारी रखने वाले एक अमेरिकी अधिकारी ने यह बताया। स्लोवाकिया में अमेरिका के राजदूत पद पर तैनात ब्रिंक लंबे समय से खाली पड़े इस राजनयिक पद को ऐसे वक्त में संभालेंगे जब अमेरिका और उसके सहयोगी यूक्रेन सीमा के समीप रूस के 1,00,000 सैनिकों को तैनात करने को लेकर अत्यधिक सजग हैं।अधिकारी ने अपना नाम गोपनीय रखने की शर्त पर बताया कि यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेन्स्की की सरकार के समक्ष बाइडन की पंसद के तौर पर हाल में ब्रिंक का नाम रखा गया और कीव अब भी इस पर विचार कर रहा है। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि बाइडन नामांकन की घोषणा कब करेंगे।खैर, यूक्रेन और रूस विवाद की नदी में सब अपने-अपने हाथ धोने को उत्सुक जरूर दिख रहे हैं और कुछ डुबकी मारने से भी पीछे नहीं है।

अपने चोरी हुए स्मार्टफोन को ब्लॉक करें

आजकल के समय में मोबाइल हमारे प्राण हैं। अगर आपका स्मार्टफोन चोरी या गुम हो जाता है, तो आप काफी दुखी होंगे। क्योंकि कोई भी आपका स्मार्टफोन प्राप्त करता है, इस पर भरोसा नहीं किया जा सकता है कि वह आपकी छवियों, वीडियो या वित्तीय जानकारी का दुरुपयोग न करे। इस समस्या के समाधान के लिए सरकार ने ण्ड्ँ (णर्हूत्र लैज्सहू घ्ठ्ठूर्ब्ें ग्र्ुग्दह)(मी्ुदन.ग्ह) साइट बनाई है, जो उपयोगकर्ताओं को चोरी या गुम हुए उपकरणों की रिपोर्ट करने की अनुमति देती है।। जिसकी मदद से आप किसी खोए हुए या चोरी हुए स्मार्टफोन को ब्लॉक कर सकते हैं, दूसरों को इसका इस्तेमाल करने से रोक सकते हैं। वैसे सबसे पहले आपको पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करनी चाहिए और यदि नजदीकी पुलिस थाना बहुत दूर है तो एफआईआर ऑनलाइन दर्ज की जा सकती है। उसके बाद, एक एफआईआर नंबर मिल जाएगा, जो भविष्य में आपके स्मार्टफोन का दुरुपयोग होने पर कानूनी रूप से आपकी सहायता करेगा। नतीजतन, प्रतिबंधित स्मार्टफोन को अनलॉक करने का एकमात्र तरीका सीईआईआर पोर्टल का उपयोग करना है। और यदि आप केंद्रीय उपकरण जांच के माध्यम से अपना मोबाइल नंबर ब्लॉक करते हैं तो आपका चोरी हुआ मोबाइल हैंडसेट कोई नेटवर्क कवरेज हासिल नहीं कर पाएगा। उसके बाद, आप हमेशा की तरह अपने स्मार्टफोन का उपयोग कर सकते हैं। आखिरकार, देश में हर दिन सैकड़ों सेलफोन चोरी हो जाते हैं, यही वजह है कि ण्ड्ँ पोर्टल बनाया गया। जिसकी शिकायत पुलिस विभाग में की गई है, लेकिन अधिकारी इन उपकरणों का पता नहीं लगा पाए हैं। वहीं, अपराधी इन सेलफोन में संग्रहीत सूचनाओं का फायदा उठाते हैं।

स्मार्टफोन को ण्ड्ँ पर कैसे ब्लॉक करें-

1. ब्लॉक करने के लिए,

सीईआईआर वेबसाइट पर जाएं और ब्लॉक/लॉस्ट मोबाइल, चेक रिक्वेस्ट स्टेटस और अन-ब्लॉक फाउंड मोबाइल देखें।

2. चोरी हुए फोन को निष्क्रिय करने के लिए ब्लॉक/लॉस्ट मोबाइल विकल्प का चयन करें।

3. उसके बाद, एक पेज दिखाई देगा जिस पर आपको अपना सेल फोन नंबर दर्ज करना होगा।

4. अपना मोबाइल नंबर, आईएमईआई नंबर, स्मार्टफोन कंपनी, बिल की तारीख और फोन नंबर, साथ ही अपनी पुलिस शिकायत की एक प्रति दर्ज करें।

5. इसके बाद, अतिरिक्त शिकायत जोड़ें चुनें और सेलफोन के मालिक का नाम, पता, पैन कार्ड, आधार कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस और पहचान के साथ फॉर्म भरें।

6. प्रक्रिया पूरी करने के बाद, आपको अपने फोन पर एक ओटीपी प्राप्त होगा। इसके बाद सत्यापन की प्रक्रिया पूरी की जाएगी। इस तरह से फाइनल सबमिशन सबमिट करने से मोबाइल फोन बैन हो सकता है।

सबसे बड़ी बात कि सचेत रहें और सुरक्षित रहें। हद से ज्यादा विश्वास किसी पर न करें वो भी सफर में।

■ ■

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

पाठकों से निवेदन.

प्रिय पाठक बन्धु,

सच की दस्तक मासिक पत्रिका आप की अपनी पत्रिका है। हिन्दी साहित्य और भाषा के विकास के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। पत्रिका निरन्तर आप के घर पहुँचती रहे इसलिए निम्न फार्म भरकर शीघ्र भेजने की कृपा करें या हमारे प्रतिनिधि से सम्पर्क करें।

श्री/श्रीमती /कुमारी..

पता...

....

.पिन कोड................ मोबाइल संख्या............................

ईमेल...

वार्षिक सदस्यता - 300/- रुपए मात्र।

पंचवर्षीय सदस्यता - 1200/- रुपए मात्र।

पाठक अपनी सदस्यता राशि निम्न खाते में जमा कर सकते हैं और जमा करने के बाद मोबाइल पर अवश्य सूचित कर देंगे।

Sach Ki Dastak

ब्रजेश कुमार

A/c. No. : 13751652000024

सम्पादक, सच की दस्तक

IFSC Code : PUNB0137510

Panjab National Bank

पता : 1215/A सुभाष नगर, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चन्दौली

पिन कोड - 232101, मोबाइल नम्बर - 9621503924

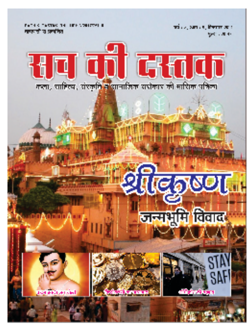

वसंत पंचमी व महाशिवरात्रि की हार्दिक अभिनंदन व शुभकामना

श्री अनिल जोसेफ

डायरेक्टर व प्रिंसिपल
सेन्ट जोसेफ पब्लिक स्कुल
भगवानपुर रानेपुर चहनियां चंदौली।

वसंत पंचमी व महाशिवरात्रि की हार्दिक अभिनंदन व शुभकामना

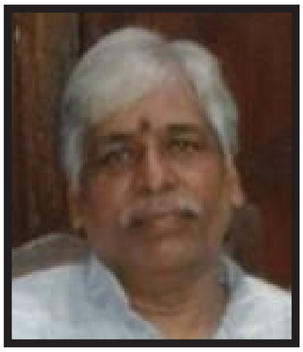

प्रबंधक धनंजय सिंह

लोकनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामगढ़ चंदौली
लोकनाथ महाविद्यालय बेसिक ट्रेनिंग सेंटर कॉलेज कोड 4300 31
लोकनाथ महाविद्यालय कॉलेज कोड 4300 46

वसंत पंचमी व महाशिवरात्रि की हार्दिक अभिनंदन व शुभकामना

मॉं खण्डवारी ग्रुप ऑफ इस्टीट्युशन चहनियाँ चन्दौली
मॉं खण्डवारी देवी इण्टर कालेज
मॉं खण्डवारी देवी पी.जी. कालेज चहरियाँ
श्री त्रिदण्डी देव हनुमत टेक्रिकल कालेज बिसुपुर कैलावर
मॉं खण्डवारी फार्मेसी एवं नर्सिंग कालेज (आयुर्वेद) चहनियाँ चन्दौली
सेन्ट जोसेफ पब्लिक स्कूल भगवानपुर रानेपुर

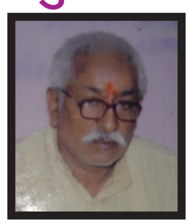

डॉ आशुतोष कुमार

निदेशक
सिंह मो 98960373747

डॉ राजेंद्र प्रताप सिंह

संस्थापक
मोबाइल नंबर 969563 4426

वसंत पंचमी व महाशिवरात्रि की हार्दिक अभिनंदन व शुभकामना

रामनरेश यादव

बुढवल ग्राम प्रधान

RNI: UPHIN/2017/75716

SACH KI DASTAK

(A MONTHLY HINDI JOURNAL)

C-6/2-M, NEAR CHETGANJ THANA,CHETGANJ, VARANASI

Website : www.sachkidastak.com, E-mail : sachkidastak@gmail.com

Mob. : 8299678756, 9598056904

FEBRUARY, 2022

PRICE : RS. 20/-

EDITOR : BRAJESH KUMAR

NEWS EDITOR : AKANSHA SAXENA

विधानसभा 380 पं दीनदयाल उपाध्याय (मुगलसराय) के सभी सम्मानित लोगो को वसंत पंचमी व महाशिवरात्रि की हार्दिक अभिनंदन व शुभकामना

दीपक कुमार आर्य

पौत्र स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय केदारनाथ आर्य वैध

जिला चेयरमैन

विशाल भारत संस्थान, जनपद चन्दौली

नगर अध्यक्ष (पिछड़ा प्रकोष्ठ)

पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर, जिला चन्दौली

भारतीय जनता पार्टी